

# **शिक्षा निदेशालय**

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार

सहायक सामग्री  
(2017-2018)

कक्षा : बारहवीं

## **समाजशास्त्र**

मार्गदर्शनः

**श्रीमती पुण्य सलिला श्रीवास्तव**  
सचिव (शिक्षा)

**श्रीमती सौम्या गुप्ता**  
निदेशक (शिक्षा)

**डॉ. सुनीता शुक्ला कौशिक**  
अतिरिक्त शिक्षा निदेशक (स्कूल एवं परीक्षा)

समन्वयकः

**श्रीमती रजनी रावल**  
अधिकारी (परीक्षा)

**श्रीमती शारदा तनेजा**  
विशेष कार्याधिकारी (परीक्षा)

**डॉ. सतीश कुमार**  
विशेष कार्याधिकारी (परीक्षा)

उत्पादन मंडल

अनिल कुमार शर्मा

दीपक तंवर

दिल्ली पाठ्य पुस्तक ब्यूरो में अनिल कौशल, सचिव, दिल्ली पाठ्य पुस्तक ब्यूरो, 25/2,  
पंखा रोड, संस्थानीय क्षेत्र, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित तथा मैसर्स अरिहन्त ऑफसैट, नई दिल्ली  
द्वारा मुद्रित।

**Smt. Punya Salila Srivastava**  
IAS



सचिव ( शिक्षा )  
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र  
दिल्ली सरकार  
पुराना सचिवालय, दिल्ली-110054  
दूरभाष : 23890187 टेलीफैक्स : 23890119

Secretary (Education)  
Government of National Capital Territory of Delhi  
Old Secretariat, Delhi-110054  
Phone : 23890187 Telefax : 23890119  
e-mail : secyedu@nic.in

## **SUBJECTWISE SUPPORT MATERIAL**

### **PREFACE**

It is a matter of great pleasure for me to present the Support Material for various subjects prepared for the students of classes IX to XII by a team of dedicated and sincere teachers and subject experts from the Directorate of Education.

The subject wise Support Material is designed to enhance the academic performance of the students and improve their understanding of the subject. It is hoped that this comprehensive study material will be put to good use by both the students and the teachers in order to achieve academic excellence.

I commend the efforts of the team of respective subject teachers and their group leaders who worked sincerely and tirelessly under the able guidance of the officers of the Directorate of Education to complete this remarkable work in time.

*Punya Salile*  
(Punya S. Srivastava)

**Saumya Gupta, IAS**



**Director**

Education & Sports, Govt. of NCT of Delhi  
Old Secretariat, Delhi - 110054  
Tel.: 23890172, Fax : 23890355  
E-mail : diredu@nic.in  
Website : www.edudel.nic.in

D.O. No. १५/८८/२०१७/३०४

Date : ३०/०८/२०१७

प्रिय विद्यार्थियों,

इस पुस्तक के माध्यम से आपके साथ सीधे संवाद का अवसर मिल रहा है। और अपने विद्यार्थियों के साथ जुड़ने के इस अवसर का मैं पूरा लाभ उठाना चाहती हूँ।

दिल्ली में आपके विद्यालय जैसे कोई १०३० राजकीय विद्यालय हैं, जिनका संचालन 'शिक्षा निदेशालय' करता है। शिक्षा निदेशालय वा मुख्यालय पुराना संविवालय (ओल्ड सेक्रेटरिएट), दिल्ली-५४ में स्थित है।

इस निदेशालय में सभी अधिकारी दिन रात कार्य करते हैं तांकि हमारे स्कूल और अच्छे बन सकें; हमारे शिक्षक आपको नए-नए व बेहतर तरीकों से पढ़ा सकें; परीक्षा में हमारे सभी विद्यार्थी और अच्छे अंक ला सकें तथा उनका भविष्य सुनिश्चित हो।

इसी क्रम में पिछले कुछ वर्षों से शिक्षा निदेशालय ने कक्षा नवीं से बारहवीं तक के अपने विद्यार्थियों के लिए विभिन्न विषयों में 'सहायक सामग्री' उपलब्ध करवाना प्रारंभ किया है।

प्यारे बच्चों, आपके हाथ में यह जो पुस्तक है, इसे कई उत्कृष्ट अध्यापकों ने मिलकर विशेष रूप से आप ही के लिए तैयार किया है। इसे तैयार करवाने में काफी मेहनत और धन खर्च हुआ है। इसलिए अपनी मुख्य पाठ्यपुस्तक के साथ-साथ यदि आप इस सहायक सामग्री का भी अच्छे से अभ्यास करेंगे तो परीक्षा में आपकी सफलता तो सुनिश्चित होगी ही, आपको बाजार में बिकने वाली महंगी सहायक पुस्तकें भी खरीदने की जरूरत नहीं पड़ेंगी। और हाँ, इस पुस्तक को हर साल हम CBSE के पाठ्यक्रम के अनुसार सर्वार्थीत और परिमार्जित भी करते हैं ताकि छात्र छात्राओं की परीक्षा-तैयारी अद्यतन रहे।

अंताः, एक बात और। अपने विद्यार्थी काल के जिस पड़ाव से आप आज गुजर रहे हैं, यह आपके शेष जीवन की नींव के निर्माण का समय है। मुझे आप पर पूरा विश्वास है कि आप इस समय का सदुपयोग करेंगे, खूब अध्ययन करेंगे तथा अपने एवं अपने देश के लिए एक सार्थक भविष्य की नींव डालेंगे।

मेरी द्वारा शुभकामनाएं।

**सौम्या गुप्ता**

आपकी  
सौम्या गुप्ता

**Dr. Sunita S. Kaushik**  
Addl. Director of Edn. (School)/Exam



Govt. of N. C. T. of Delhi  
Directorate of Education  
Old Secretariat, Delhi-54  
Tel. : 23890283

D. O. No. P.M./H.A.L./Dc/[Sch] 3  
Dated. 14/09/2017

## विषयवार सहायक सामग्री

### प्रस्तावना

शिक्षा निदेशालय के अनुभवी एवं विषय शिक्षेज्ञ शिक्षकों द्वारा कक्षा 9वीं से 12वीं के छात्रों हेतु नवीनतम सहायक सामग्री को प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है।

गत वर्षों से विद्यार्थियों को उपलब्ध करायी जा रही सहायक सामग्री हमारे विद्यालयों के उन छात्रों के लिए वरदान सिद्ध हो रही है जो बाज़ार से गुणात्मक विषय सामग्री खरीदने में अक्षम हैं। निदेशालय द्वारा उपलब्ध कराई जाने वाली सामग्री ऐसे छात्रों को सार्वजनिक परीक्षाओं में बेहतर प्रदर्शन करने का मौका प्रदान करती है। इस सहायक-सामग्री में निर्धारित शब्दों को स्पष्ट एवं व्यापक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

अध्यापकों से उम्मीद की जाती है कि वे विद्यार्थियों को इस सहायक-सामग्री का प्रयोग अभ्यास करायेंगे जिससे इन छात्रों के शैक्षिक प्रदर्शन में वृद्धि हो और साथ ही छात्रों से भी यह उम्मीद की जाती है कि वे इस सहायक सामग्री का अधिकतम उपयोग कर प्रत्येक विषय को ठीक ढंग से समझ सकें।

मैं, इस सहायक सामग्री को तैयार करने वाले सभी शिक्षकों का उनके बहुमूल्य योगदान के लिए अभार प्रकट करती हूँ।

*सुनीता कौशिक*

डॉ. सुनीता शुक्ला कौशिक  
अतिरिक्त शिक्षा निदेशक (विद्यालय एवं परीक्षा)



**शिक्षा निदेशालय**  
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार

**सहायक सामग्री**  
(2017-2018)

**समाजशास्त्र**  
कक्षा : बारहवीं  
( हिन्दी माध्यम )

निःशुल्क वितरण हेतु

---

दिल्ली पाठ्य-पुस्तक ब्यूरो द्वारा प्रकाशित



---

# **SUPPORT MATARIAL**

---

---

## **SOCIOLOGY CLASS-XII**

---

---

**2017-18**

---

**Dr. Renu Bhatia**  
Principal and Group Leader

S.K.V. Moti Bagh-I, New Delhi

**Dr. A.M. Amir Ansari**  
Sr. Lecture Sociology

S.B.M. Sr. Sec. School (Govt.  
Aided) Shivaji Marg, N. Delhi-15

**Ms. Seema Banerjee**  
Lecture Sociology

Laxman Public School,  
Hauzkhast, New Delhi

**Mr. Zafar Hussain**  
Lecture Sociology

Anglo-Arabic, Sr. Sec. School  
Ajmeri Gate, Delhi

**Ms. Renu Shokeen**  
PGT-Sociology

Govt. Co-Ed., Sr. Sec. School  
Kanganheri, Delhi

---

# समाजशास्त्र ( कोड़ नं. 039 )

---

## विषय सूची

### पुस्तक 1

| क्र.सं. | पाठ  | अंक |
|---------|--|-----|
| 1.      | अध्याय 2 : भारतीय समाज की जनसांख्यिकीय संरचना              | 6   |
| 2.      | अध्याय 3 : सामाजिक संस्थाएँ : निरंतरता एवं परिवर्तन        | 6   |
| 3.      | अध्याय 4 : बाजार : सामाजिक संस्था के रूप में               | 6   |
| 4.      | अध्याय 5 : सामाजिक असमानता (विषमता) एवं बहिष्कार के स्वरूप | 6   |
| 5.      | अध्याय 6 : सांस्कृतिक विविधता की चुनौतियाँ                 | 8   |
| कुल     |  | 32  |

नोट : अध्याय 1 और अध्याय 7 मूल्यांकन रहित हैं।

## पाठ - 2

# भारतीय समाज की जनसांख्यिकीय संरचना

### मुख्य बिन्दु

1. **जनसांख्यिकी** : जन संख्या का सुव्यवस्थित अध्ययन जनांकिकी कहलाता है।  
इसका अंग्रेजी पर्याय डेमोग्राफी यूनानी भाषा के दो शब्दों डेमोस-लोग तथा ग्राफीन यानि वर्णन अर्थात् लोगों का वर्णन।  
इससे जन्म, मृत्यु, प्रवसन, लिंग अनुपात आदि का अध्ययन किया जाता है।
2. **जनांकिकी के प्रकार :**  
जनांकिकी मुख्य रूप से दो प्रकार की होती है।  
**आकारिक जनसांख्यिकी** : इसमें जनसंख्या के आकार का अध्ययन किया जाता है।  
**सामाजिक जनसांख्यिकी** : इसमें जनसंख्या के सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक पक्षों पर विचार किया जाता है।
3. **जनसांख्यिकीय आंकड़े** राज्य की नीतियाँ जैसे आर्थिक विकास, जलकल्याण संबंधी नीतियाँ बनाने व कार्यान्वित करने के लिए महत्वपूर्ण हैं।
4. **थामस रोवर्ट माल्थस का जनसंख्या वृद्धि का सिद्धान्त :** ( 1766-1834 )
  - जनसंख्या ज्योमिटीक अनुपात से बढ़ती है। जैसे - 2, 4, 8, 16, 32
  - खाद्य उत्पादक में वृद्धि गणितीय (समरंतर) रूप से होती है। जैसे- 2, 4, 6, 8, 10 आदि।
  - इससे जनसंख्या व खाद्य सामग्री में असंतुलन पैदा होता है।
  - समृद्धि बढ़ाने के लिए जनसंख्या वृद्धि को नियन्त्रित किया जाए। माल्थस ने जनसंख्या नियंत्रण के दो प्रकारों के प्रतिबंध का उल्लेख किया है-

- प्राकृतिक निरोध/अवरोध : जैसे अकाल, भूकम्प, बाढ़, युद्ध बीमारी आदि।
- कृतिम निरोध/अवरोध : जैसे बड़ी उम्र में विवाह, यौन संयम, ब्रह्मचार्य का पालन आदि।

### **माल्थस के सिद्धान्त विरोध :**

आर्थिक वृद्धि जनसंख्या वृद्धि से अधिक हो सकती है। जैसा कि यूरोप के देशों में हुआ है। गरीबी व भुखमरी जनसंख्या वृद्धि के बजाए आर्थिक संसाधनों के असमान वितरण के कारण फैलती है। (उदारवादी व मार्क्सवादी)

### **5. जनसांख्यिकी संक्रमण का सिद्धांत :**

- जनसंख्या वृद्धि आर्थिक विकास के समग्र स्तरों से जुड़ी होती है।
- जनसंख्या वृद्धि के तीन बुनियादी चरण होते हैं।
  - पहला चरण है समाज में जनसंख्या वृद्धि का कम होना क्योंकि समाज तकनीकी दृष्टि से पिछड़ा होता है। (मृत्युदर और जन्मदर दोनों की बहुत ऊँची होती है।)
  - जनसंख्या विस्फोट संक्रमण अवधि में होता है, क्योंकि समाज पिछड़ी अवस्था से उन्नत अवस्था में जाता है, इस दौरान जनसंख्या वृद्धि की दरें बहुत ऊँची हो जाती है।
  - तीसरी चरण में भी विकसित समाज में जनसंख्या वृद्धि दर नीची रहती है क्योंकि ऐसे समाज में मृत्यु दर और जन्म दर दोनों ही काफी कम हो जाती है।

### **6. सामान्य कल्पनाएँ व संकेतक :**

- जन्म दर : एक वर्ष में प्रति हजार व्यक्तियों पर जीवित जन्में बच्चों की संख्या जन्म दर कहलाती है।
- मृत्यु दर : क्षेत्र विशेष में प्रति हजार व्यक्तियों में मृत व्यक्तियों की संख्या मृत्यु दर कहलाती है।
- प्राकृतिक वृद्धि दर या जनसंख्या वृद्धि दर : जन्म दर व मृत्यु दर के बीच का अन्तर।

- **प्रजनन दर :** बच्चे पैदा कर सकने की आयु (15-49 वर्ष) वाली स्त्रियों की इकाई के पीछे जीवित जन्में बच्चों की संख्या।
  - **शिशु मृत्यु दर :** जीवित पैदा हुए 1000 बच्चों में से एक वर्ष की आयु से पहले मृत बच्चों की संख्या।
  - **मातृ मृत्यु दर :** एक हजार शिशु जन्मों पर जन्म देकर मरने वाली महिलाओं की संख्या।
  - **लिंग अनुपात :** प्रति हजार पुरुषों पर निश्चित अवधि के दौरान स्त्रियों की संख्या (किसी विशेष क्षेत्र में)
  - **जनसंख्या की आयु संरचना :** कुल जनसंख्या के विभिन्न आयु वर्गों में व्यक्तियों का अनुपात।
  - **पराश्रितता अनुपात :** जनसंख्या का वह अनुपात जो जीवन यापन के लिए कार्यशील जनसंख्या पर आश्रित है। इसमें कार्यशील वर्ग 15-64 वर्ष की आयु वाले होते हैं। बच्चे व बुजुर्ग पराश्रित होते हैं।
7. **भारत में जन्म दर तथा मृत्यु-दर :** जन्मदर एक ऐसी सामाजिक-सांस्कृतिक प्रघटना है जिसमें परिवर्तन अपेक्षाकृत धीमी गति से आता है। हिमाचल प्रदेश, पश्चिमी बंगाल कर्नाटक, महाराष्ट्र की कुल प्रजनन दरें काफी कम हैं। बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान व उत्तर प्रदेश में प्रजनन दर बहुत ऊँची है।
8. **भारतीय जनसंख्या की आयु संरचना :** अधिकांश भारतीय युवावस्था में है। केरल ने विकसित देशों की आयुसंरचना की स्थिति प्राप्त कर ली है। उत्तर प्रदेश में युवा वर्ग का अनुपात अधिक है तथा वृद्धों का अनुपात कम है।
- **भारत में ‘जनसांख्यिकीय लाभांश’ :** जनसांख्यिकीय संरचना में जनसंख्या संक्रमण की उस अवस्था को जिसमें कमाने वाले यानि 15-49 आयु वर्ग की जनसंख्या न कमाने वाले (पराश्रित वर्ग) यानि 60+ आयु वर्ग की जनसंख्या की तुलना में अधिक हो तो उसे जनसांख्यिकीय लाभांश कहते हैं यह तभी प्राप्त हो सकता है जब कार्यशील लोगों के अनुपात में वृद्धि होती रहे।
9. **स्त्री-पुरुष अनुपात :** भारत में स्त्री-पुरुष अनुपात गिरता रहा है। इसका कारण है लिंग विशेष का गर्भपात, बालिका शिशुओं की हत्या, बाल विवाह पौष्टिक

भोजन न मिलना। देश की विभिन्न हिस्सों में स्त्री-पुरुष अनुपात भिन्न-भिन्न है। केरल राज्य से सबसे अधिक है और हरियाणा, पंजाब चंडीगढ़ में में सबसे कम है।

**10. जनघनत्व :** जनघनत्व से तात्पर्य प्रति वर्ग कि० मी० मे निवास करने वाले मनुष्यों की संख्या से लगाया जाता है। भारत में बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण जनघनत्व भी बढ़ रहा है।

- **हकदारी की पूर्ति का आभाव :** अमर्त्य सेन एवं अनेक विद्वानों ने दर्शाया है कि अकाल अनाज के उत्पादन में गिरावट आने के कारण ही नहीं पड़े अपितु हकदारी की पूर्ति का आभाव या भोजन खरीदने या किसी तरह से प्राप्त करने की लोगों की अक्षमता के कारण भी अकाल पड़ते रहे हैं। इसलिए सरकार ने भूख और भुखमरी की समस्या के समाधान के लिए राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (NREGA) नाम का एक कानून बनाया है।

**11. साक्षरता :** साक्षरता शक्ति सम्पन्न होने का साधन है। साक्षरता अर्थव्यवस्था में सुधार, स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता व कल्याण कार्यों में सहभागिता बढ़ाती है। केरल साक्षरता में आगे है वहीं बिहार राज्य काफी पीछे है। अनुसूचित जाति व जन-जातियों में साक्षरता दर और भी नीची है।

**12. ग्रामीण-नगरीय विभिन्नताएँ :** भारत को गाँवों का देश कहा जाता है। नगर ग्रामीणों के लिए आकर्षक स्थान बन रहे हैं। गाँव से लोग रोजगार की दृष्टि से नगरों की ओर पलायन कर रहे हैं।

रेड़ियो, टेलीविजन, समाचार पत्र जैसे जनसंपर्क एवं जनसंचार के साधन अब ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के समक्ष नगरीय जीवन शैली तथा उपभोग के स्वरूपों की तस्वीरें पेश कर रहे हैं। परिणाम स्वरूप दूरदराज के गाँवों में रहने वाले लोग नगरीय तड़क-भड़क और सुख-सुविधाओं से सुपरिचित हो जाते हैं उनमें भी वैसा ही उपभोगपूर्ण जीवन जीने की लालसा उत्पन्न हो जाती है।

राष्ट्रीय परिवार नियोजन कार्यक्रम इसलिए शुरू किया गया कि जनसंख्या वृद्धि नियंत्रण किया जा सके। इसमें जन्म नियंत्रण के विभिन्न उपाय अपनाए गए। (पुरुषों के लिए नसबंदी और महिलाओं के लिए नलिकाबंदी) राष्ट्रीय आपातकाल (1975-1976) में परिवार नियोजन कार्यक्रम को गहरा धक्का लगा। नई

सरकार ने इसे राष्ट्रीय परिवार कल्याण कार्यक्रम का नाम दिया। इसमें नए दिशा निर्देश बनाए गए।

13. इस कार्यक्रम के उद्देश्य मोटे तौर पर समान रहे हैं- जनसंख्या संवृद्धि की दर और स्वरूप को प्रभावित करके सामाजिक दृष्टि से वांछनीय दिशा की ओर ले जाने का प्रयत्न करना।

अधिकतर गरीब और शक्तिहीन लोगों का भारी संख्या में जोर-जबरदस्ती से बंध्यकरण किया गया और सरकारी कर्मचारियों पर भारी दबाव डाला गया कि वे लोगों को बंध्यकरण के लिए आयोजित शिविरों में बंध्यकरण के लिए लाएँ। इस कार्यक्रम का जनता में व्यापक रूप से विरोध हुआ।

14. भारत की 15 वीं जनगणना 2011 के अंकड़े :-

- स्त्री पुरुष अनुपात : 943 : 1000
- सर्वाधिक जनसंख्या वाला राज्य : उत्तर प्रदेश
- न्यूनतम जनसंख्या वाला प्रदेश : सिक्किम
- अधिकतम मातृत्व मृत्यु दर वाला राज्य : उत्तर प्रदेश
- न्यूनतम मातृत्व मृत्यु दर वाला राज्य : केरल
- सर्वाधिक शिशु मृत्यु दर वाला राज्य : मध्य प्रदेश
- न्यूनतम शिशु दर मृत्यु दर वाला राज्य : मणिपुर
- साक्षरता : पुरुष-80.9%, महिला-64.6%
- सबसे बड़ा ( क्षेत्रफल में ) : राजस्थान
- सबसे छोटा राज्य ( क्षेत्रफल में ) : गोवा

## 2 अंक के प्रश्न

1. जनसांख्यिकी किसे कहते हैं?
2. आकारिक जनसांख्यिकी व सामाजिक जनसांख्यिकी में अंतर बताइए।
3. शिशु मृत्यु दर क्या है?

4. पराश्रित अनुपात का बढ़ना, उन देशों को क्यों चिंतित कर रहा है जिसमें वृद्धों की संख्या बढ़ रही है।
5. गिरती हुई पराश्रित अनुपात आर्थिक वृद्धि व समृद्धि का कारक माना जा रहा है क्यों?
6. अकाल के क्या कारण हैं?
7. उस प्रदेश का नाम बताइए जिसमें अभी भी (TFR) संपूर्ण प्रजनन दर बहुत अधिक है।
8. जनसांख्यिकीय आंकड़ों का महत्व बताइए।
9. स्त्री पुरुष अनुपात से आप क्या समझते हैं?

#### **4 अंक के प्रश्न**

1. माल्थस के जनसंख्या के सिद्धांत की विवेचन कीजिए।
2. शिशु लिंग अनुपात गिरने के कारण लिखिए।
3. कम शिशु लिंग अनुपात की क्षेत्रीय विभिन्नता का वर्णन करें।

#### **6 अंक के प्रश्न**

1. जनसांख्यिकी संक्रमण के सिद्धांत का वर्णन करें।
2. ग्रामीणों के लिए नगर क्यों आकर्षण के केन्द्र बन रहे हैं।
3. भारतीय जनसांख्यिकी उपलब्धियाँ बताएँ।
4. परिवार नियोजन कार्यक्रम की कामयाबी व भविष्य के बारे में लिखें।
5. राष्ट्रीय समाज जनसांख्यिकी के उद्देश्य-2010 के बारे में बताएं (6 वाक्य)
6. भारत के कौन से राज्य प्रतिस्थापन दर पर पहुँच चुके हैं या उसके नजदीक हैं? कौन सा राज्य प्रजनन दर में सबसे ऊँचा है? आपके विचार से इस विभिन्नता के क्या कारण हैं?
7. जनसांख्यिकी अनुसंधान से आप क्या समझते हैं? यह आर्थिक उन्नति व

संवृद्धि के लिए किस प्रकार सहायक हैं?

8. लिंग अनुपात क्या है? घटते हुए लिंग अनुपात के क्या प्रभाव होते हैं, क्या आप समझते हैं कि माता-पिता पुत्री की अपेक्षा पुत्र को पसन्द करते हैं? इसके लिए किन कारणों को जिम्मेदार मानते हैं?
9. परिवार नियोजन कार्यक्रम के आपात काल के समय (1975-76) नाकाम होने के क्या कारण थे? वर्णन कीजिए।

## सामाजिक संस्थाएँ : निरंतरता एवं परिवर्तन

### मुख्य बिन्दु

1. जनसंख्या सिर्फ अलग-अलग असंबंधित व्यक्तियों का जमघट नहीं है। परन्तु यह विभिन्न प्रकार के आपस में संबंधित वर्गों व समुदाय से बना समाज है।
2. भारतीय समाज की तीन प्रमुख संस्थाएँ – जाति, जनजाति, परिवार।
3. **जाति** : जाति एक ऐसी सामाजिक संस्था है जो भारत में हजारों सालों से प्रचलित है।
  - जाति अंग्रेजी के शब्द- कास्ट (Caste) जो कि पुर्तगाली शब्द कास्ट से बना है। इसका अर्थ है – विशुद्ध नस्ल। भारत में दो विभिन्न शब्दों वर्ण व जाति के अर्थ में प्रयोग होता है।
  - वर्ण का अर्थ ‘रंग’ होता है। भारतीय समाज में चार वर्ण माने गए हैं – ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र जाति को क्षेत्रिय या स्थानीय उपवर्गीकरण के रूप में समझा जा सकता है। जाति एक व्यापक शब्द है जो किसी वंश किस्म को संबोधित करने के लिए किया जाता है। इसमें पेड़-पौधे, जीव-जन्तु तथा मनुष्य भी शामिल हैं।
  - वर्ण और जाति में अन्तर
    - 1. शाब्दिक अर्थों में अन्तर
    - 2. वर्ण कर्म प्रधान है और जाति जन्म प्रधान है।
    - 3. वर्ण व्यवस्था लचीली है और जाति व्यवस्था कठोर है।
    - 4. वर्णों और जातियों की संख्या में भेद
  - वैदिक काल में जाति व्यवस्था बहुत विस्तृत तथा कठोर नहीं थी।
  - लेकिन वैदिक काल के बाद यह व्यवस्था बहुत कठोर हो गई। जाति जन्म निर्धारित होने लगी। विवाह, खान-पान आदि के कठोर नियम बन गए। व्यवसाय को जाति से जोड़ दिया जो वंशानुगत थे, इसे एक सीढ़ीनुमा व्यवस्था बना दिया,

जो ऊपर से नीचे जाती है।

- जाति को दो समुच्चयों के मिश्रण के रूप में समझा जा सकता है।

1. भिन्नता व अलगाव
2. सम्पूर्णता व अधिकम

प्रत्येक जाति अन्य जाति से भिन्न है - शादी, पेशे व खान-पान के सम्बन्ध में प्रत्येक जाति का एक विशिष्ट स्थान होता है।

- श्रेणी अधिक्रम में जातियों का अधार- 'शुद्धता' और 'अशुद्धता' होता है। वे जातियाँ शुद्ध या पवित्र मानी जाती हैं जो कर्मकाण्डों और धार्मिक कृत्यों में संलग्न रहती हैं। इसके विपरीत अंसस्कारित जातियाँ अशुद्ध या अपवित्र मानी जाती हैं।

4. **उपनिवेशवाद तथा जाति व्यवस्था :** आधुनिक काल में जाति पर औपनिवेशिक काल व स्वतंत्रता के बाद का प्रभाव है। ब्रिटिश शासकों के कुशलता पूर्वक शासन करने के लिए जाति व्यवस्था की जटिलताओं को समझने का प्रयास किया। 1901 में हरबर्ट रिजले ने जनगणना शुरू की जिसमें जातियाँ गिनी गईं। भूराजस्व व्यवस्था व उच्च जातियों को वैध मान्यता दी गई।

प्रशासन ने पददलित जातियों, जिन्हें उन दिनों दलित वर्ग कहा जाता था, के कल्याण में भी रुचि ली।

भारत सरकार का अधिनियम - 1935, में अनुसूचित जाति व जनजाति को कानूनी मान्यता दी गई। इसमें उन जातियों को शामिल किया गया जो औपनिवेशिक काल में सबसे निम्न थीं। इनके कल्याण की योजनाएँ बनीं।

5. **जाति का समकालीन रूप :** आजाद भारत में राष्ट्रवादी आन्दोलन हुए, जिनमें दलितों को संगठित किया गया। ज्योतिबा फूले, पेरियार, बाबा अम्बेडकर इन आन्दोलनों के अग्रणी थे।

- राज्य के कानून जाति प्रथा के उन्मूलन के लिए प्रतिबद्ध थे। इसके लिए कुछ ठोस कदम उठाए गए जैसे अनुसूचित जाति तथा जनजाति को आरक्षण, आधुनिक उद्योगों में जाति प्रथा नहीं है, शहरीकरण द्वारा जाति प्रथा कमजोर हुई है।
- सांस्कृतिक व घरेलू क्षेत्रों में जाति सुदृढ़ सिद्ध हुई। अंतर्विवाह, आधुनिकीकरण व परिवर्तन से भी अप्रभावित रही पर कुछ लचीली हो गई।

6. **संस्कृतिकरण** : ऐसी प्रक्रिया जिसके द्वारा (आमतौर पर मध्यम निम्न) निम्न जाति के सदस्य उच्च जाति की धार्मिक क्रियाएँ, घरेलू या सामाजिक परिपाठियों को अपनाते हैं, संस्कृतिकरण कहलाती है। एम.एन. श्री निवास ने संस्कृतिकरण व प्रबल जाति की संकल्पना बनाई।

**प्रबल जाति** : वह जाति जिसकी संख्या बड़ी होती है, भूमि के अधिकार होते हैं तथा राजनैतिक, सामाजिक व आर्थिक रूप से प्रबल होते हैं, प्रबल जाति कहलाती है। बिहार में यादव, कर्णटक में बोक्कलिंग, महाराष्ट्र में मराठी आदि।

7. समकालीन दौर में जाति व्यवस्था उच्च जातियों, नगरीय मध्यम व उच्च वर्गों के लिए अदृश्य होती जा रही है।

● आज विशेषकर शहरों में विभिन्न जातियों के लोग अच्छी व तकनीकी शिक्षा-योग्यता पाकर एक विशेष वर्ग में परिवर्तित हो गए हैं। वे अभिजात वर्ग कहलाते हैं। राजनीति और उद्योग व्यापार में भी इन जातियों का वर्चस्व बढ़ने लगा है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि अभिजात वर्ग के सदस्यों की मूल जाति अदृश्य हो गई है।

दूसरी ओर अनुसूचित जातियाँ, जनजातियाँ और पिछड़ी जातियाँ सरकारी नीतियों के तहत आरक्षण का लाभ प्राप्त कर उच्च स्तर की नौकरियों में और उच्च शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश पा रही हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि आरक्षण का लाभ पाने के कारण जाति उजगर या दृश्य हो जाती है।

8. **जनजातीय समुदाय** : जनजातियाँ ऐसे समुदाय थे जो किसी लिखित धर्मग्रन्थ के अनुसार किसी धर्म का पालन नहीं करते। ये विरोध का रास्ता गैर जनजाति के प्रति अपनाते हैं। इसी का परिणाम है कि झारखण्ड व छत्तीसगढ़ बन गए।

**जनजातीय समाजों का वर्गीकरण :**

1. **स्थायी विशेषक** : इसमें क्षेत्र, भाषा, शारीरिक गठन सम्मिलित हैं।

2. **अर्जित विशेषक** : जनजातियों में जीवन यापन के साधन तथा हिन्दु समाज की मुख्य धारा से जुड़ना है।

**मुख्यधारा के समुदायों का जनजातियों के प्रति दृष्टिकोण**

● जनजातियों समाजों को राजनीतिक तथा आर्थिक मोर्चे पर साहूकारों तथा महाजनों के दमनकारी कुचक्रों को सहना पड़ा। 1940 के दशक के दौरान पृथक्करण बनाम एकीकरण विषय पर बहस चली तो यह तस्वीरें सामने आईं

**पृथक्करण** : कुछ विद्वानों को मानना था कि जनजातियों की गैर जनजातीय समुदाय से रक्षा की जानी चाहिए। क्योंकि ये सभी लोग जनजातियों का अलग अस्तित्व मिटाकर उन्हें भूमिहीन श्रमिक बनाना चाहते हैं।

**एकीकरण** : कुछ विद्वानों का मत था कि जनजातियों के विकास पर ध्यान देना चाहिए।

**राष्ट्रीय विकास बनाम जनजातीय विकास** : बड़ी-बड़ी परियोजनाओं के परिणाम स्वरूप जाजातीय समुदायों को बुरी तरह प्रभावित किया है। बड़े-बड़े बांध बनाए गए, कारखाने स्थापित किए गए और खानों की खुदाई शुरू की गई। इस प्रकार के विकास से जनजातियों की हानि की कीमत पर मुख्यधारा के लोग लाभान्वित हुए। अधिकांश जनजातीय समुदाय वनों पर आश्रित थे, इसलिए वन छिन जाने से उन्हें भारी धक्का लगा। जनजातीय संस्कृति विलुप्त हो रही है। विकास की आड़ में बड़े पैमाने पर उन्हें उजाड़ा गया है।

दो प्रकार के मुद्दों ने जनजातिय आन्दोलन को तूल देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है— आर्थिक संसाधनों पर नियंत्रण तथा नृजातीय सांस्कृतिक पहचान ये दोनों साथ-साथ चल सकते हैं, परन्तु जनजातीय समाज में विभिन्नताएँ होने से ये अलग भी हो सकते हैं।

एक लंबे संघर्ष के बाद झारखंड और छत्तीसगढ़ को अलग-अलग राज्य का दर्जा मिल गया है। सरकार द्वारा आए गए कठोर कदम और फिर उनसे भड़के विद्रोहों ने पूर्वोत्तर राज्यों की अर्थव्यवस्था, संस्कृति और समाज को भारी हानि पहुँचाई है। एक अन्य महत्वपूर्ण विकास जनजातीय समुदायों में शानैः-शनैः एक शिक्षित मध्य वर्ग का उद्भव है।

9. **परिवार** : सदस्यों का वह समूह जो रक्त, विवाह या गौत्र संबंधों पर नातेदारों से जुड़ा होता है।

- (क) मूल या एकाकी परिवार (माता पिता और उनके बच्चे।)
- (ख) विस्तृत या संयुक्त परिवार (दो या अधिक पीढ़ियों के लोग एक साथ रहते हैं।)

#### ● निवास स्थान के आधार पर

- (अ) पितृस्थानीय परिवार : नवविवाहित जोड़ा वर के माता-पिता के साथ रहता

है।

- (ब) मातृस्थानीय परिवार : नवविवाहित जोड़ा वधु के माता-पिता के साथ रहता है।

● सत्ता के आधार पर

- (अ) पितृवंशीय परिवार : जायदाद/वंश पिता से पुत्र को मिलता है।

- (ब) मातृवंशीय परिवार : जायदाद/वंश माँ से बेटी को मिलती है।

● वंश के आधार पर

- (अ) पितृसत्तात्मक परिवार : पुरुषों की सत्ता व प्रभुत्व होता है।

- (ब) मातृसत्तात्मक परिवार : स्त्रियाँ समान प्रभुत्वकारी भूमिका निभाती हैं।

● सामाजिक संरचना में बदलावों के परिणामस्वरूप परिवारिक ढांचे में बदलाव होता है। उदाहरण के तौर पर, पहाड़ी क्षेत्रों के ग्रामीण अंचलों से रोजगार की तलाश में पुरुषों को शहरी क्षेत्रों की ओर पलायन जिससे महिला प्रधान परिवारों की संख्या काफी बढ़ गई है।

उद्योगों में नियुक्त युवा अभिभावकों का कार्यभार अत्याधिक बढ़ जाने से उन्हे अपने बच्चों की देखभाल के लिए अपने बूढ़े माता-पिता को अपने पास बुलाना पड़ता है। जिससे शहरों में बूढ़े माता-पिता की संख्या में भारी वृद्धि हुई है। लोग व्यक्तिवादी हो गए हैं। युवा वर्ग अपने अभिभावकों की पसंद की बजाय अपनी पसंद से विवाह/जीवन साथी का चुनाव करते हैं।

● खासी जनजाति और मातृवंशीय संगठन खासी जनजाति मातृवंशानुक्रम संगठन का प्रतीक है। मातृवंशीय परम्परा के अनुसार खासी परिवार में विवाह के बाद पति अपनी पत्नी के घर रहता है।

वंश परम्परा के अनुसार उत्तराधिकार भी पुत्र को प्राप्त न होकर पुत्री को ही प्राप्त होता है। खासी लोगों में माता का भाई (यानी मामा) माता को पुश्टैनी सम्पत्ति की देख रेख करता है। अर्थात् सम्पत्ति पर नियन्त्रण का अधिकार माता के भाई को दिया गया है। इस स्थिति में वह स्त्री उत्तराधिकार के रूप में मिली सम्पत्ति का अपने ढंग से उपयोग नहीं कर पाती है। इस प्रकार खासी जनजाति में मामा की अप्रत्यक्ष सत्ता संघर्ष को जन्म देती है। खासी पुरुषों को दोहरी भूमिका निभानी पड़ती है। एक ओर तो खसी पुरुष अपनी बहन की पुत्री की

सम्पत्ति की रक्षा करता है और दूसरी ओर उस पर अपनी पत्नी तथा बच्चों के लालन पालन का भी उत्तरदायित्व होता है। दोनों पक्षों की स्त्रियाँ बुरी तरह प्रभावित होती हैं। मातृवंशीय व्यवस्था के बावजूद खासी समाज में शक्ति व सत्ता पुरुषों के ही आसपास घूमती है।

10. **नातेदारी :** नातेदारी व्यवस्था में समाज द्वारा मान्यता प्राप्त वे संबंध आते हैं जो अनुमानित और रक्त संबंधों पर आधारित हों - जैसे चाचा, मामा आदि।

#### नातेदारी के प्रकार :

- (अ) विवाह मूलक नातेदारी : जैसे- साला-साली, सास-ससुर, देवर, भाभी आदि।
- (ब) रक्तमूलक नातेदारी : जैसे- माता-पिता, भाई-बहन आदि।

### प्रश्नावली

1. जाति क्या है?
2. प्रबल जाति क्या होती है?
3. वर्ण व जाति में क्या अन्तर है?
4. चार प्रबल जातियों के नाम लिखें।
5. जनजाति की परिभाषा बताइये।
6. पृथक्करण बनाम एकीकरण विषय पर वाद-विवाद का वर्णन करें।
7. उन दो कारणों को बताइये जो जनजाति के विकास में सहायक हैं।
8. एकल व संयुक्त परिवार में अन्तर बताइये।
9. नातेदारी की परिभाषा लिखें।

### 4 अंक के प्रश्न

1. जाति की विशेषताएँ बताइये।
2. उपनिवेशवाद के फलस्वरूप जाति-व्यवस्था में क्या परिवर्तन हुए?

3. जाति व जनजाति में क्या अन्तर है?
4. जनजातीय पहचान को प्रभावित करने वाले कारकों को लिखिए।
5. मातृवंश व मातृतन्त्र में क्या अन्तर है?
6. संस्कृतिकरण किसे कहते हैं?
7. जाति व्यवस्था में पृथक्करण व अधिक्रम की क्या भूमिका है?
8. वे कौन से नियम हैं जिसका पालन करने के लिए जाति व्यवस्था बाध्य करती है?
9. भारत में जनजातियों का वर्गीकरण किस प्रकार किया गया है?
10. परिवार के विभिन्न प्रकार बताइये।
11. सामाजिक संरचना में होने वाले परिवर्तन पारिवारिक संरचना में किस प्रकार परिवर्तन ला सकते हैं? उदाहरण देकर वर्णन करें?

## 6 अंक के प्रश्न

1. जाति व्यवस्था के सिद्धान्तों का पूर्ण विवरण दें।
2. उपनिवेशवाद ने भारत में जाति व्यवस्था को किस प्रकार मजबूत किया?
3. राष्ट्रीय विकास बनाम जनजातीय विकास की विवेचना करें।
4. उन विशेषकों का वर्णन करें जो जनजातीय समाज को वर्गीकृत करते हैं।
5. खासी जनजाति की मातृवंशीय व्यवस्था क्या है?

---

## बाजार सामाजिक संस्था के रूप में

---

### मुख्य बिन्दु

1. **बाजार** : एक ऐसा स्थान जहाँ पर वस्तुओं का क्रय-विक्रय होता है। बाहार केवल एक आर्थिक संस्था नहीं बल्कि सामाजिक संस्था भी है।

- **साप्ताहिक बाजार** : जो सप्ताह में एक बार लगे नगरों में कहीं कहीं साप्ताहिक बाजार भी लगते हैं।
- **साप्ताहिक बाजार** : जो सप्ताह में एक बार लगे नगरों में कहीं-कहीं साप्ताहिक बाजार भी लगते हैं जहाँ से उपभोक्ता अपनी दैनिक उपयोग की चीजें, जैसे : सब्जी, फल आदि सामान खरीदते हैं।
- **ग्रामीण क्षेत्रों** में भी हाट व मेले के रूप में बाजार सजते हैं। जहाँ से ग्रामीण अपनी आवश्यकता संबंधी वस्तुएँ खरीदते हैं।
- **एडम स्मिथ** के अनुसार – पूंजीवाद अर्थव्यवस्था, स्वयं लाभ से स्वचालित है और यह तब अच्छे से कार्य करती है, जब हर व्यक्ति खरीददार व विक्रेता तर्क संगत निर्णय लेते हैं जो उनके हित में होते हैं। स्मिथ ने खुले व्यापार का समर्थन किया।

**अदृश्य हाथ** : बाजार व्यवस्था में प्रत्येक व्यक्ति अपने लाभ को बढ़ाने के विषय में सोचता है। ऐसा करते हुए वह जो भी करता है वह स्वयं समाज के हित में होता है। अतः कोई अदृश्य शक्ति सामाजिक हित में कार्यरत है, जिसे अदृश्य हाथ के रूप में परिभाषित किया गया है।

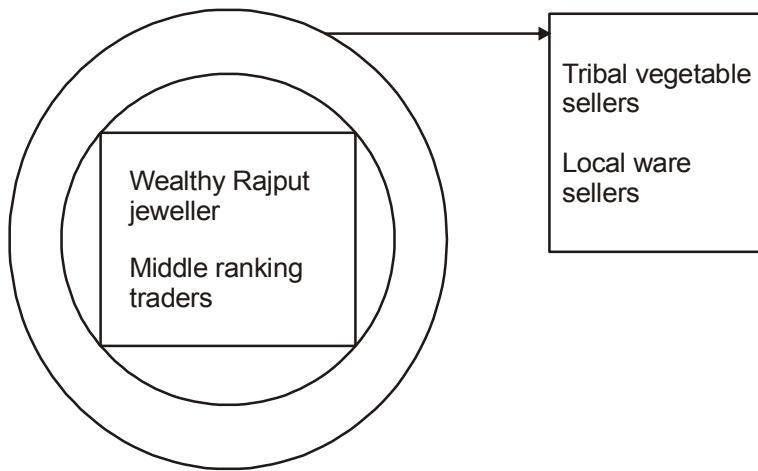
- **जजमानी प्रथा** : जजमानी प्रथा का अर्थ है सेवा भाव से काम करना, जैसे पुराने समय में अधिकतर छोटे लोग बड़ों लों की सेवा किया करते थे, जिसमें मजदूरी न के बराबर होती थी।
- **मुक्त बाजार** : सभी प्रकार के नियमों से मुक्त होना चाहिए चाहे उस राज्य का नियंत्रण हो या किसी और सत्ता का।

- **मुक्त बाजार** : सभी प्रकार के नियमों से मुक्त होना चाहिए चाहे उस पर राज्य का नियंत्रण हो या किसी और सत्ता का।
- मुक्त बाजार को फ्रेंच कहावत में अहस्तक्षेप नीति कहा जाता है। इस कहावत का अर्थ है – ‘अकेलो छोड़ दो।’

**2. बाजार एक सामाजिक संस्था के रूप में :** समाजशास्त्री बाजार को एक संस्था मानते हैं जो विशेष सांस्कृतिक तरीके द्वारा निर्मित है, बाजारों का नियन्त्रण या संगठन अकर विशेष सामाजिक समूहों या वर्गों द्वारा होता है। जैसे – साप्ताहिक, आदिवासी हाट, पार्म्परिक व्यापारिक समुदाय।

**3. जनजातीय साप्ताहिक बाजार :** आसपास के गाँव के लोगों को एकत्रित करता है जो अपनी खेती की उपज या उत्पाद को बेचने आते हैं वे अन्य सामान खरीदने आते हैं जो गाँव में नहीं मिलते। इन बाजरों में साहूकार, मसखरे, ज्योतिष गप-शप करने वाले लोग आते हैं। पहाड़ी और जंगलाती इलाकों में जहाँ अधिवास दूर-दराज तक होता है, सड़कों और संचार भी जीर्ण-शीर्ण होता है एवं अर्थव्यवस्था भी अपेक्षाकृत अविकसित होती है। ऐसे में साप्ताहिक बाजार उत्पादों के आदान-प्रदान के साथ-साथ सामाजिक मेल-मिलाप की एक प्रमुख संस्था बन जाता है। स्थानीय लोग आपस में वस्तुओं का लेन-देन करते हैं। हाट जाने का प्रमुख कारण सामाजिक है जहाँ वह अपने रिश्तेदारों से भेंट कर सकता है, घर के जवान लड़के-लड़कियों का विवाह तय कर सकते हैं, गप्पे मार सकते हैं।

- एलफ्रेड गेल ने विशेष रूप से आदिवासी समाज का अध्ययन किया है। उन्होंने छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले के धोराई गाँव का अध्ययन किया। साप्ताहिक बाजार का दृश्य सामाजिक सम्बंधों को दर्शाता है। बाजार में बैठने यानि दुकान लगाने। स्थानों का क्रम इस प्रकार होता है जिससे उनके सामाजिक संस्तरण, प्रस्थित तथा बाजार व्यवस्था का स्पष्ट पता चलता है। उनके अनुसार बाजार का महत्व सिर्फ इसकी आर्थिक क्रियाओं तक सीमित नहीं है। यह उस क्षेत्र के अधिक्रमित अंतर समूहों के सामाजिक सम्बन्धों का प्रतीकात्मक चित्रण करता है।



#### 4. पूर्व उपनिवेशिक और उपनिवेशिक भारत में जाति आधारित बाज़ार एवं व्यापारिक तंत्र

- उपनिवेशवाद के दौरान भारत में प्रमुख आर्थिक परिवर्तन हुए। ऐतिहासिक शोध यह दिखाते हैं कि भारतीय अर्थव्यवस्था का मौद्रीकरण उपनिवेशिकता के ठीक पहले से ही विद्यमान था। बहुत से गांवों में विभिन्न प्रकार की गैर-बाजारी विनिमय व्यवस्था जैसे जजमानी व्यवस्था मौजूद थी। पूँजीवादी व्यवस्था ने अपनी जड़ें जमानी शुरू कर दी थी।
- पूर्व उपनिवेशिक व उपनिवेशिक बाजार व्यवस्था : भारत हथकरघा कपड़ों का मुख्य निर्माता व निर्यातक था। पारम्परिक व्यापारिक समुदायों व जातीयों की अपनी कर्ज व बैंक व्यवस्था थी। इसका मुख्य साधन हुड़ी या विनिमय बिल होता है। उदाहरण - तमिलनाडु के नाकरट्टार।
- भारत का पारम्परिक व्यापारिक समुदाय : वैश्य, पारसी, सिन्धी, बाहरा, जैन आदि। व्यापार अधिकतर जाति एवं रिश्तेदारों के बीच होता है।

#### 5. उपनिवेशवाद और नए बाजारों को आविर्भाव :

- भारत में उपनिवेशवाद के प्रवेश से अर्थव्यवस्था में भारी उथल-पूथल हुई जो उत्पादन, व्यापार और कृषि को तितर-बितर करने का कारण बनी।  
हस्तकरघा उद्योग का पूरी तरह से खत्म हो जाना इंग्लैण्ड से मशीनों द्वारा निर्मित सस्ते कपड़े का भारतीय बाज़ारों में भारी मात्रा में आगमन हस्ताकरघा उद्योग को नष्ट कर गया। भारत की विश्व पूँजीवादी अर्थव्यवस्था से जुड़ने की शुरूआत हुई थी। भारत कच्चे माल और कृषि उत्पादों को मुहैया करवाने का

एक बड़ा उपभोक्ता बन गया।

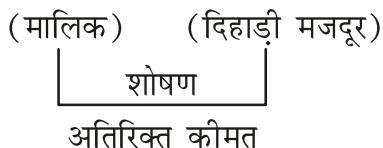
- बाजार अर्थव्यवस्था के विस्तार के कारण नए व्यापारी समूह का उदय हुआ जिन्होंने व्यापार के अवसरों को नहीं गवाया। जैसे - मारवाड़ी समुदाय।
  - मारवाड़ियों का प्रतिनिधित्व बिड़ला परिवार जैसे नामी औद्योगिक घरानों से है। उपनिवेशकाल के दौरान ही मारवाड़ी एक सफल व्यापारिक समुदाय बने। उन्होंने सभी सुअवसरों का लाभ उठाया। आज भी भारत में किसी अन्य समुदाय की तुलना में मारवाड़ियों की उद्योग में सबसे बड़ी हिस्सेदारी है।

**6. पूंजीवाद** : एक सामाजिक व्यवस्था के रूप में :

- कालमार्क्स के अनुसार- अर्थव्यवस्था चीजों से नहीं बल्कि लोगों के बीच रिश्तों से बनती है। मजदूर अपनी श्रम शक्ति को बाजार में बेचकर मजदूरी कमाते हैं।

(अ) उत्पादन विधि → सम्बन्धों का बनना → वर्ग का बनना।

(ब) पूँजीवाद → पूँजीवादी → मजदूर



- **पण्यीकरण ( वस्तुकरण ) :** पहले कोई वस्तु बाजारों में बेची या खरीदी नहीं जाती थी, लेकिन अब वह खरीदी व बेची जा सकती है। इसके पण्यीकरण कहते हैं। जैसे श्रम व कौशल, किडनी तथा अन्य मानव अंग।
  - **उपभोग :** उपभोक्ता अपनी सामाजिक, आर्थिक या सांस्कृति के अनुसार कुछ विशेष वस्तुओं को खरीद या प्रदर्शित कर सकता है व विज्ञापनों का भी प्रयोग किया जाता है।
  - **प्रतिष्ठा का प्रतीक :** उपभोक्ता अपने खाने, पीने, पहनने, रहने आदि के लिए किस कोटि की वस्तुएं खरीदता है, इसके उनकी माली हालत का पता चलता है, यही प्रतिष्ठा का प्रतीक कहलाता है। जैसे -सेलफोन, नये मॉडल की कार आदि।

**7. भूमंडलीयकरण :** देश की अर्थव्यवस्था का विश्व की अर्थव्यवस्था से जुड़ना भूमंडलीकरण कहलाता है। इसके कारण हैं- आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, प्रौद्योगिकी,

संचार, जिसके कारण दूरियाँ कम हो गई एवं एकीकरण हुआ है।

- सम्पूर्ण विश्व एक वैशिक गाँव में तब्दील हो गया है। आजकल वस्तुओं और सेवाओं की खरीद-फरोख्त के लिए आभासी बाजार का प्रचलन बढ़ गया है।
- आभासी बाजार से तात्पर्य इंटरनेट, वेब साइट्स के माध्यम से वस्तुओं और सेवाओं की खरीदारी करना इस तरह के बाजार में क्रेता व विक्रीता प्रत्यक्ष रूप से हाजिर नहीं होते हैं। शेयर बाजार इसका उदाहरण है।
- आज भारत सॉफ्टवेयर सेवा उद्योग तथा बिजनेस प्रोसेस आउट सोर्सिंग उधोग जैसे कॉल सेन्टर के माध्यम से वैशिक अर्थव्यवस्था से जुड़ा हुआ है।
- कॉल सेन्टर एक ऐसा केन्द्रियकृत स्थान होता है जहाँ उपभोक्ताओं को विभिन्न सेवाओं तथा उत्पादों की जानकारी प्राप्त होती है।

**8. उदारीकरण :** वह प्रक्रिया जिसमें सरकारी विभागों का निजीकरण, पूँजी, व्यापार व श्रम में सरकारी दखल का कम होना, विदेशी वस्तुओं के आयात शुल्क में कमी करना और विदेशी कम्पनियों को भारत में उद्योग स्थापित करने की इजाजत देना आदि सम्बन्धित प्रक्रियाएँ उदारीकरण कहलाता है।

● **लाभ :**

1. विदेशी वस्तुएँ उपलब्ध होना।
2. विदेशी निवेश का बढ़ना।
3. आर्थिक विकास
4. रोजगार बढ़ना

● **हानियाँ :**

1. भारतीय उद्योग विदेशी कम्पनियों के साथ प्रतिस्पर्धा नहीं कर पाते जैसे कार, इलेक्ट्रोनिक सामान आदि।
  2. बेरोजगारी भी बढ़ सकती है।
- **समर्थन मूल्य :** किसानों की उपज का सरकार उचित मूल्य (न्यूनतम) सुनिश्चित करती है, जिसे समर्थन मूल्य कहते हैं।
  - **सब्सिडी :** सरकार द्वारा दी गई सहायता सब्सिडी कहलाती है। किसानों को इसे

उर्वरकों, डीजल तथा बीच का मूल्य कम करके दिया जाना, एल.पी.जी. बिजली आदि

## 2 अंक प्रश्न

1. पूँजीवादी किसे कहते हैं?
2. जजमानी प्रथा क्या होती है?
3. बाजारीकरण क्या होता है?
4. उपनिवेशवाद किसे कहते हैं?
5. उन तथ्यों (कारणों) को बताइये जिससे विश्व की दूरियाँ कम हुई हैं।
6. सब्सिडी व समर्थन मूल्य में अन्तर स्पष्ट कीजिए।
7. अदृश्य हाथ का क्या तात्पर्य है?
8. अतिरिक्त मूल्य किसे कहते हैं?
9. हुण्डी क्या है?
10. लेस-ए-फेयर को परिभाषित कीजिए।
11. आभासी बाजार से क्या तात्पर्य है?

## 4 अंक प्रश्न

1. पण्यीकरण की उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।
2. व्यापार की सफलता में जाति एवं नातेदारी संपर्क कैसे योगदान कर सकती है?
3. उपनिवेशवाद के आने के पश्चात् भारतीय अर्थव्यवस्था किन अर्थों में बदली?
4. गाँव में लगने वाले बाजार - एक सामाजिक संस्था हैं। समझाएँ।
5. बाजार पर समाज शास्त्री दृष्टिकोण, आर्थिक दृष्टिकोण से किस प्रकार भिन्न हैं?
6. भूमंडलीकरण के तहत कौन-कौन सी प्रक्रिया सम्मिलित हैं?
7. समाज शास्त्री बाजार को एक सामाजिक संस्था क्यों कहते हैं?

## 6 अंक प्रश्न

1. कृषक समाज में साप्ताहिक बाजार एक सामाजिक व आर्थिक संगठन का केन्द्र बिन्दु है। वर्णन कीजिए।
2. उदारीकरण के लाभ व कमियों (हानियों) को बताइये।
3. क्या आपकी राय में उदारीकरण के दूरगामी लाभ उसकी लागत की तुलना से अधिक हो जाएंगे? व्याख्या कीजिए।

## पाठ 5

### सामाजिक असमानता (विषमता) एवं बहिष्कार के स्वरूप

#### मुख्य बिन्दु

##### 1. सामाजिक असमानता :

- सामाजिक विषमता व बहिष्कार हमारे दैनिक जीवन में प्राकृतिक व वास्तविकता है।
- प्रत्येक समाज में हर व्यक्ति की सामाजिक प्रस्थिति एक समान नहीं होती है। समाज में कुछ लोगों के पास तो धन, सम्पत्ति, शिक्षा, स्वास्थ्य, सत्ता और शक्ति जैसे साधनों की अधिकता होती है तो दूसरी ओर कुछ लोगों के पास इनका नितान्त अभाव रहता है तो कुछ लोगों की स्थिति बीच की होती है।
- सामाजिक विषमता व बहिष्कार सामाजिक इसलिए है-
  - ये व्यक्ति से नहीं समूह से सम्बन्धित है।
  - ये व्यवस्थित व संरचनात्मक हैं।
  - ये आर्थिक नहीं हैं।
- सामाजिक संसाधनों को तीन रूपों में विभाजित किया जा सकता है-
  - (अ) भौतिक संपत्ति एवं आय के रूप में आर्थिक पूँजी
  - (ब) प्रतिष्ठा व शैक्षणिक योग्यता के रूप में सांस्कृतिक पूँजी।
  - (स) सामाजिक संगतियों व संपर्कों के जाल के रूप में - सामाजिक पूँजी।
- सामाजिक विषमता : सामाजिक संसाधनों तक असमान पहुँच की पद्धति सामाजिक विषमता कहलाती है।

##### 2. सामाजिक स्तरीकरण :

- वह व्यवस्था जो एक समाज के अंतर्गत पाए जाने वाले समूहों का ऊँच-नीच या छोटे-बड़े के आधार पर विभिन्न स्तरों पर बँट जाना ही सामाजिक स्तरीकरण कहलाता है।

- स्तरीकरण (सामाजिक) के तीन मुख्य सिद्धान्त
- सामाजिक स्तरीकरण व्यक्तियों के बीच की विभिन्नता का प्रकार्य नहीं बल्कि समाज की विशिष्टता है।
- सामाजिक स्तरीकरण पीढ़ी दर पीढ़ी बना रहता है।
- सामाजिक स्तरीकरण को विश्वास या विचारधारा द्वारा समर्थन मिलता है।
- पूर्वाग्रह - एक समूह के सदस्यों द्वारा दूसरे समूह के बारे में पूर्वकल्पित विचार या विश्वास को पूर्वाग्रह कहते हैं। जैसे - यहूदी ओर मारवाड़ी कंजूस होते हैं।
- पूर्वाग्रह अपरिवर्तनीय, कठोर व रुद्धिवद्ध धारणाओं पर आधारित होते हैं।
- रुद्धधारणाएँ:- ऐसा लोक विश्वास, समूह स्वीकृत कोई अचल विचार या भावना जो सामान्यतः शाब्दिक तथा संवेगयुक्त होती हैं रुद्धधारणा कहलाती है। यह ज्यादातर महिलाओं, नृजातीय, प्रजातीय समूहों के बारे में प्रयोग की जाती है।
- भेदभाव:- किसी समूह के सदस्यों को उनके लिंग, जाति या धर्म के आधार पर अवसरों तथा सुविधाओं से वंचित रखा जाना भेदभाव कहलाता है।

### 3. सामाजिक बहिष्कार:-

- वह तौर तरीके जिनके जरिए किसी व्यक्ति या समूह को समाज में पूरी तरह घुलने मिलने से रोका जाता है या अलग रखा जाता है यह आकस्मिक न होकर व्यवस्थित तथा अनैच्छिक होता है।
- सामाजिक बहिष्कार आकस्मिक नहीं होता, यह व्यवस्थित तथा अनैच्छिक होता है। लम्बे समय तक विषमता, के कारण निष्कासित समाज में प्रतिशोध व घृणा की भावना पैदा हो जाती है, जिस कारण निष्कासित समाज अपने-आप को मुख्य धारा से जोड़ने की कोशिश नहीं करते। जैसे-दलित, जनजातीय समुदाय, महिलाएँ तथा अन्यथा सक्षम लोग।

### 4. जाति एक भेदभावपूर्ण व्यवस्था है।

- जाति प्रथा जन्म से ही निर्धारित होता है न कि उस मनुष्य की क्या स्थिति है।
- जाति व्यवस्था व्यक्तियों का व्यवसाय निर्धारित करती है।
- सामाजिक व आर्थिक प्रस्थिति एक-दूसरे के अनुरूप होती है।

5. **अस्पृश्यता-** आम बोलचाल में छुआछूत कहा जाता है। धार्मिक एवं कर्मकांडीय दृष्टि से शुद्धता व अशुद्धता के पैमाने पर सबसे नीची जाने वाली जातियों के विरुद्ध अत्यन्त कठोर सामाजिक दंडों का विधान किया जाता है। इसे अस्पृश्यता कहते हैं।
- अस्पृश्यता शब्द का प्रयोग ऐसे लोगों के लिए किया गया है जिन्हे अपवित्र, गन्दा और अशुद्ध माना जाता था। ऐसे लोगों को कुओं, मन्दिरों और सार्वजनिक स्थानों पर प्रवेश निषेध था।
  - गाँधी जी ने इन लोगों के लिए हरिजन शब्द का प्रयोग किया था किन्तु आजकल दलित शब्द का प्रयोग किया जाता है।
  - दलित का शब्दिक अर्थ है- ‘पैरो से कुचला हुआ।’
  - भारतीय संविधान (1956) के अनुसार जाति अस्पृश्यता निषेध है।
  - महात्मा गाँधी, डॉ अम्बेडकर और ज्योतिबा फूले ने अस्पृश्यता निवारण की दिशा में उल्लेखनीय कार्य किया।
  - अस्पृश्यता के आयाम-

**अपवर्जन या बहिष्कार :** पेयजल के सामान्य स्रोतों से पानी नहीं लेने दिया जाता। सामाजिक उत्सव, समारोहों में भाग नहीं ले सकते। धार्मिक उत्सव पर ढोल-नगाड़े बजाना।

**अनादर और अधीनतासूचक :** टोपी या पगड़ी उतारना, जूतों को उतारकर हाथ में पकड़कर ले जाना, सिर झुकाकर खड़े रहना, साफ या चमचमाते हुए कपड़े नहीं पहनना।

**शोषण व आश्रिता :** उन्हें ‘बेगार’ करनी पड़ती है जिसके लिए उन्हें कोई पैसा नहीं दिया जाता या बहुत कम मज़दूरी दी जाती है।

**दलित :** वह लोग जो निचली पायदान (जाति व्यवस्था में) पर हैं तथा शोषित हैं, दलित कहलाते हैं।

6. जातियों व जन जातियों के प्रति भेदभाव मिटाने के लिए राज्य द्वारा उठाए गए कदम:-

- (1) अनुसूचित जाति व जनजाति के लिए राज्य व केन्द्रीय विधान-मंडलों में आरक्षण।

- (2) सरकारी नौकरी में आरक्षण
- (3) अस्पृश्यता (अपराध) 1955
- (4) 1850 का जातिय निर्याग्यता निवारण अधिनियम
- (5) अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति अस्पृश्यता उन्मूलन कानून-1989
- (6) उच्च शैक्षिक संस्थानों के 93वें संशोधन के अंतर्गत अन्य पिछड़े वर्ग को आरक्षण देना।

- गैर सरकारी प्रयास व सामाजिक आन्दोजन:-
- स्वाधीनता पूर्व- ज्योतिबाफूले, पेरियार, सर सैयद अहमद खान, डॉ. अम्बेडकर, महात्मा गांधी, राजाराम मोहन राय आदि का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।
- उत्तर प्रदेश में बहुजन समाज पार्टी, कर्नाटक में दलित संघर्ष समिति
- विभिन्न भाषाओं के साहित्य से योगदान

**7. अन्य पिछड़ा वर्ग-** सामाजिक, शैक्षिक रूप से पिछड़ी जातियों के वर्ग, को अन्य पिछड़ा वर्ग कहा जाता है इसमें सेवा करने वाली शिल्पी जातियों के लोग शामिल हैं।

- इन वर्गों की प्रमुख विशेषता संस्कृति, शिक्षा, और सामाजिक-आर्थिक दृष्टि से इनका पिछड़ापन है।
- काका साहेब कालेलकर की अध्यक्षता से सबसे पहले “ पिछड़े वर्ग आयोग ” का गठन किया था। आयोग ने अपनी रिपोर्ट 1953 में सरकार को सौंप दी थी।
- 1979 में दूसरा पिछड़ा वर्ग आयोग (मंडल आयोग) गठित किया।
- आज अन्य पिछड़े वर्गों के बीच भारी विषमता देखने को मिलती है। एक ओर तो OBC का वह वर्ग है जो धनी किसान है तो दूसरी ओर गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन कर रहा दूसरा वर्ग है।

**8. भारत में जनजातीय जीवन:-**

- भारतीय संविधान के अनुसार निर्धनता, शक्ति हीनता व सामाजिक लांछन से पीड़ित सामाजिक समूह है। इन्हें जनजाति भी कहा जाता है।

जनजातियों को प्राय- ‘वनवासी’ और आदिवासी जाना जाता है।

- आन्तरिक उपनिवेशवाद- आदिवासी समाज ने प्रगति के नाम पर आन्तरिक उपनिवेशवाद का समना किया। भारत सरकार ने वनों का दोहन, खदान कराखाने, बांध बनाने के नाम पर उनकी जमीन का अधिग्रहण किया तथा उनका पलायन हुआ।

आदिवासियों की समस्याओं से जुड़े प्रमुख मुद्दे:-

- (1) राष्ट्रीय वन नीति बनाम आदिवासी विस्थापन
  - (2) आदिवासी क्षेत्रों में सधन औद्योगीकरण की नीति
  - (3) आदिवासियों में सजातीय राजनीतिक जागरूकता के दर्शन।
9. स्त्रियों के अधिकारों व उनकी स्थिति के लिए उनीसवीं सदी में सुधार आन्दोलन हुआ:-

- स्त्री-पुरुष में असमानता सामाजिक है, न कि प्राकृतिक यदि स्त्री-पुरुष प्राकृतिक आधार पर असमान है तो क्यों कुछ महिलाएँ समाज में शीर्ष स्थान पर पहुँच जाती हैं। दुनिया या देश में ऐसे भी समाज हैं जहाँ परिवारों में महिलाओं की सत्ता व्याप्त है जैसे केरल के 'नायर' परिवारों में और मेघालय की 'खासी' जनजाति। यदि महिला जैविक या शारीरिक आधार पर अयोग्य समझी जाती हो तो कैसे वह सफलतापूर्वक कृषि और व्यापार को चला पातीं संक्षेप में, यह कहना न्याय संगत होगा कि स्त्री-पुरुष के बीच असमानता के निर्धारण में जैविक/प्राकृतिक या शारीरिक तत्वों की कई भूमिका नहीं है।
- राजा राम मोहन राय ने सती प्रथा तथा बाल विवाह का विरोध किया तथा विधवा विवाह का समर्थन किया।
- ज्योतिबा फूले ने जातिय व लैंगिक अत्याचारों के विरोध में आन्दोलन किया।
- सर सैयद अहमद खान ने इस्लाम में सामाजिक सुधारों के लिए लड़कियों के स्कूल तथा कॉलेज खोले।
- दयानंद सरस्वती ने नारियों की शिक्षा में योगदान दिया।
- रानाडे ने विधवा विवाह पुनर्विवाह पर जोर दिया।
- ताराबाई शिंदे ने "स्त्री-पुरुष तुलना" लिखी जिसमें गलत तरीके से

पुरुषों को ऊँचा दर्जा देने की बात कही गई।

- बेगम रोकेया हुसैन ने 'सुल्तानाज ड्रीम नामक किताब लिखी जिसमें हर लिंग को बराबर अधिकार देने पर चर्चा की गई है।
  - 1931 में कराची में भारतीय कांग्रेस द्वारा एक अध्यादेश जारी करके स्त्रियों को बराबरी का हक देने पर बल दिया गया। सार्वजनिक रोजगार, शक्ति या सम्मान के संबंध में निर्योग्य नहीं ठहराया जाएगा।
  - 1970 में काफी अहम मुद्रे पर जोर दिया गया जैसे- पुलिस हिरासत में बलात्कार, दहेज, हत्या आदि। स्त्रियों को मत डालने, सार्वजनिक पदधारण करने का अधिकार होगा।
10. **अक्षमता (विकलांगता):-** शारीरिक, मानसिक रूप से बाधित व्यक्ति, इसलिए अक्षम कहलाते हैं क्योंकि वे समाज की रीतियों व सोच के अनुसार जरूरत को पूरा नहीं करते।
- निर्योग्यता/अक्षमता को एक जैविक कमजोरी माना जाता है।
  - जब कभी किसी अक्षम व्यक्ति के समक्ष कई समस्याएँ खड़ी होती हैं तो यह मान लिया जाता है कि ये समस्याएँ उसकी बाधा या कमजोरी के कारण ही उत्पन्न हुई हैं।
  - अक्षम व्यक्ति को हमेशा शिकार यानी पीड़ित व्यक्ति के अपने प्रत्यक्ष ज्ञान से जुड़ी है।
  - यह माना जाता है कि निर्योग्यता उस निर्योग्य व्यक्ति के अपने प्रत्यक्ष ज्ञान से जुड़ी है।
  - निर्योग्यता तथा गरीबी के बीच काफी निकट संबंध देखा गया है क्योंकि गरीबी के कारण ही माताएँ कुपोषण का शिकार होती हैं और दुर्बल व अविकसित बच्चों को जन्म देती हैं। जो बड़े होकर विकलांग लोगों की संख्या को बढ़ाते हैं।
  - सरकार इनके लिए विभिन्न कार्यक्रम प्रदान करती है- जैसे- शिक्षा, रोजगार, व्यावसायिक

## 2 अंक प्रश्न

1. सामाजिक विषमता व बाहिष्कार में क्या सामालिक है?
2. विभिन्न सामाजिक संसाधन क्या हैं?
3. निम्न का अर्थ बताइए।  
(अ) पूर्वाग्रह (ब) भेदभाव (स) रूढ़िबद्ध धारणाएँ
4. सामाजिक बहिष्कार किसे कहते हैं?
5. अस्पृश्यता क्या है?
6. जाति व आर्थिक असमानता के बीच क्या सम्बन्ध है?
7. दलित किसे कहते हैं?
8. राज्य द्वारा अनुसूचित जाति व जनजाति को किस तरह का आरक्षण दिया गया है?
9. जातीय विषमता को दूर करने के लिए गैर राजकीय संगठनों की क्या भूमिका रही है?
10. अन्य पिछड़ा वर्ग (OBC) कौन है?
11. 'आदिवासी' से आप क्या समझते हैं?
12. अक्षमता व गरीबी में क्या सम्बन्ध है?

## 4 अंक प्रश्न

1. सामाजिक स्तरीकरण की कुछ विशेषताएँ बताइए।
2. नारी से सम्बन्धित कौन-कौन से मुद्दे हैं?
3. जाति व्यवस्था एक विषमता की व्यवस्था है। वर्णन करें?
4. जातीय व जनजातीय विषमता को दूर करने में राज्य द्वारा उठाये गए कदमों की विवेचना कीजिए।
5. स्त्री व पुरुष में असमानता सामाजिक है, न कि प्राकृतिक, उदाहरण सहित व्याख्या करें।

6. अक्षमता के प्रति आम व्यक्ति के क्या विचार हैं? विस्तार से लिखिए।
7. स्त्रियों को समानता का अधिकार देने के लिए 1931 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कराची अधिवेशन के बारे में बताएं?

## 6 अंक प्रश्न

1. उपनिवेश काल के दौरान नारी सम्बन्धित मुद्दों को सामाजिक सुधार आंदोलनों किस प्रकार उठाएं?
2. अस्पृश्यता को परिभाषित कीजिए? इसके आयाम भी लिखें।
3. आदिवासियों की समस्याओं से जुड़े प्रमुख मुद्दे कौन से हैं?
4. नारी आंदोलन ने अपने इतिहास के दौरान कौन-कौन से मुद्दे उठाए हैं?

## पाठ 6

### सांस्कृतिक विविधता की चुनौतियाँ

#### मुख्य बिन्दु

1. ● ‘विविधता’ शब्द असमानताओं के बजाय अंतरों पर बल देता है। जब हम यह कहते हैं कि भारत एक महान सांस्कृतिक विविधता वाला राष्ट्र है वो हमारा तात्पर्य यह होता है कि यहाँ अनेक प्रकार के सामाजिक समूह एवं समुदाय निवास करते हैं।  
● भारत में सांस्कृतिक विविधता की झलकः— भारतम में विभिन्न प्रदेशों में भाषा, रहन-सहन, खानपान, वेश-भूषा, प्रथा, परम्परा, लोकगीत, लोकगाथा, विवाह प्रणाली, जीवन संस्कार, कला, संगीत तथा नृत्य में भी हमें अनेक रोचक व आकर्षक भेद देखने को मिलते हैं।  
● सांस्कृतिक विविधता से सम्प्रदायवाद, जातिवाद, क्षेत्रवाद, भाषावाद आदि पनपते हैं। एक समुदाय दूसरे समुदाय को नीचा दिखाता है।  
● जैसे-नदियों के जल, सरकारी नौकरियों, अनुदानों के बंटवारे को लेकर खींचतान शुरू हो जाती है।

#### 2. सामुदायिक पहचान का महत्वः-

- हमारा समुदाय हमें भाषा (मातृभाषा) और सांस्कृतिक मूल्य प्रदान करता है जिनके माध्यम से हम विश्व को समझते हैं। यह हमारी स्वयं की पहचान को भी सहारा देता है।
- सामुदायिक पहचान, जन्म तथा अपनेपन पर आधारित है, न कि किसी उपलब्धि के आधार पर। यह ‘हम क्या’ हैं इस भाव की द्योतक है न कि हम क्या बन गए हैं।
- संभवतः इस आकस्मिक, शर्त सहित अथवा लगभग अनिवारणीय तरीके से

संबंधित होने के कारण ही हम अक्सर अपनी सामुदायिक पहचान से भावनात्मक रूप से इतना गहरे जुड़े होते हैं। सामुदायिक संबंधों (परिवार, तानेदारी, जाति, नृजातीयता, भाषा, क्षेत्र या धर्म) के बढ़ते हुए और परस्पर व्यापी दायरे ही हमारी दुनिया को सार्थकता प्रदान करते हैं और हमें पहचान प्रदान करते हैं कि हम कौन हैं।

### 3. राष्ट्र की व्याख्या करना सरल है परं परिभाषित करना कठिन क्यों?

- राष्ट्र एक अनूठे किस्म का समुदाय होता है। जिसका वर्णन तो आसान है परं इसे परिभाषित करना कठिन है। हम ऐसे अनेक विशिष्ट राष्ट्रों का वर्णन कर सकते हैं। जिनकी स्थापना साझे-धर्म, भाषा, इतिहास अथवा क्षेत्रीय संस्कृति जैसी साझी सांस्कृतिक, ऐतिहासिक ओर राजनीतिक संस्थानों के आधार पर की गई है।
- उदाहरण के लिए, ऐसे बहुत से राष्ट्र हैं जिनकी अपनी एक साझा या सामान्य भाषा, धर्म, नृजातीयता आदि नहीं है। दूसरी ओर ऐसी अनेक भाषाएं, धर्म या नृजातीयता है जो कई राष्ट्रों में पाई जाती है। लेकिन इससे यह निष्कर्ष नहीं निकलता कि यह सभी मिलकर एक एकीकृत राष्ट्र का निर्माण करते हैं, उदाहरण के लिए सभी अंग्रेजी भाषी लोग या सभी बौद्धमार्विलंबी।
- आत्मासाक्षरणवादी और एकीकरणवादी रणनीतियाँ:- एकल राष्ट्रीय पहचान स्थापित करने की कोशिश करती है जैसे:-

  - संपूर्ण शक्ति को ऐसे मंचों में केन्द्रित करना जहाँ प्रभावशाली समूह बहुसंख्यक हो और स्थानीय या अल्पसंख्यक समूहों की स्वायत्ता को मिटाना।
  - प्रभावशाली समूह की परंपराओं पर आधारित एक एकीकृत कानून एवं न्याय व्यवस्था को थोपना और अन्य समूहों द्वारा प्रयुक्त वैकल्पिक व्यवस्थाओं को खत्म कर देना।
  - प्रभावशाली समूह की भाषा को ही एकमात्र राजकीय ‘राष्ट्रभाषा’ के रूप में अपनाना और उसके प्रयोग को सभी सार्वजनिक संस्थाओं में अनिवार्य बना देना।
  - प्रभावशाली समूह की भाषा और संस्कृति को राष्ट्रीय संस्थाओं के जरिए, जिनमें राज्य नियंत्रित, जनसंपर्क के माध्यम और शैक्षिक संस्थाएँ शामिल हैं, बढ़ावा देना।

- प्रभावशाली समूह के इतिहास, शूरवीरों और संस्कृति को सम्मान प्रदान करने वाले राज्य प्रतीकों को अपनाना, राष्ट्रीय पर्व, छुट्टी या सड़कों आदि के नाम निर्धारित करते समय भी इन्हीं बातों का ध्यान रखना।
- अल्पसंख्यक समूहों और देशज लोगों से जमीनें, जंगल एवं मत्स्य क्षेत्र छीनकर, उन्हें 'राष्ट्रीय संसाधन' घोषित कर देना।

#### 4. भारतीय सन्दर्भ में क्षेत्रवाद:-

- भारत के क्षेत्रवाद भारत की भाषाओं, संस्कृतियों, जनजातियों और धर्मों की विविधता के कारण पाया जाता है इसे विशेष पहचान चिन्हकों के भौगोलिक संकेद्रण के कारण भी प्रोत्साहन मिलता है और क्षेत्रीय वंचन का भाव अग्नि में घी का काम करना है। भारतीय संघवाद इन क्षेत्रीय भावुकताओं को समायोजित करने वाला एक साधन है।
- 5. अल्पसंख्यक का समाजशास्त्रीय अर्थ:- वह समूह जो धर्म, जाति की दृष्टि से संख्या में कम हो। जैसे- सिक्ख, मुस्लिम, जैन, पारसी, बौद्ध
- अल्पसंख्यक समूहों की धारणा का समाजशास्त्र में व्यापक रूप से प्रयोग किया जाता है एवं सिफ एक संख्यात्मक विशिष्टता के अलावा और अधिक महत्व है- इसमें आमतौर पर असुविधा या हानि का कुछ भावनिहित है। अतः विशेषाधिकार प्राप्त अल्पसंख्यक जैसे अत्यंत धनवान लोगों को आमतौर पर अल्पसंख्यक नहीं कहा जा सकता।
- अल्पसंख्यकों को क्यों संवेधानिक संरक्षण दिया जाना चाहिए?
  - बहुसंख्यक वर्ग के जनसांख्यिकीय प्रभुत्व के कारण धार्मिक अथवा सांस्कृतिक अल्पसंख्यकों को विशेष संरक्षण की आवश्यकता होती है।
  - धार्मिक तथा सांस्कृतिक अल्पसंख्यक वर्ग राजनीति दृष्टि से कमजोर होते हैं भले ही उनकी आर्थिक या सामाजिक स्थिति कैसी भी हो, अतः इन्हें संरक्षण की आवश्यकता होती है।
- अल्पसंख्यकों एवं सांस्कृतिक विविधता पर भारतीय संविधान का

#### अनुच्छेद 29

- (1) भारत के राज्यक्षेत्र या उसके किसी भाषा के निवासी नागरिकों के किसी अनुभाग को, जिसकी अपनी विशेष भाषा, लिपि या संस्कृति है, उसे बनाए रखने का अधिकार होगा।

- (2) राज्य द्वारा पोषित या राज्य-निधि से सहायता पाने वाली कसी शिक्षा संस्था में प्रवेश से किसी भी नागरिक को केवल धर्म, मूलवंश, जाति, भाषा या इनमें से किसी के आधार पर वंचित नहीं किया जाएगा।

### **अनुच्छेद 30**

- (1) धर्म या भाषा पर आधारित सभी अल्पसंख्यक-वर्गों को अपनी रूचि की शिक्षा संस्थाओं की स्थापना और प्रशासन का अधिकार होगा।
- (2) शिक्षा संस्थाओं को सहायता देने में राज्य किसी शिक्षा संस्था के विरुद्ध इस आधार पर विभेद नहीं करेगा कि वह धर्म या भाषा पर आधारित किसी अल्पसंख्यक वर्ग के प्रबंध में है।

### **6. सांप्रदायिकता:-**

- रोजमर्रा की भाषा में ‘सांप्रदायिकता’ का अर्थ है धार्मिक पहचान पर आधारित आक्रामक उग्रवाद, अपने आपमें एक ऐसी अभिवृत्ति है जो अपने समूह को ही वैध या श्रेष्ठ समूह मानती है और अन्य समूह को निम्न, अवैध अथवा विरोधी समझती है।
- सांप्रदायिकता एक आक्रामक राजनीतिक विचारधारा है जो धर्म से जुड़ी होती है।
- सांप्रदायिकता राजनीति से सरोकार रखती है धर्म से नहीं। यद्यपि सांप्रदायिकता धर्म के साथ गहन रूप से जुड़ा होता है।
- भारत में बार-बार सांप्रदायिक तनाव फैलते हैं जो कि चिंता का विषय बना हुआ है। इसमें लूटा जाता है, बलात्कार होता है और लोगों की जान ली जाती है, जैसा कि 1984 में सिक्खों के साथ एवं 2002 में गुजरात के मुसलमानों के साथ हुआ, इसके अलावा भी हजारों ऐसे फसाद हुए हैं। जिसमें सदैव अल्पसंख्यकों का बड़ा नुकसान हुआ है।

### **7. धर्मनिरपेक्षतावाद:-**

- पश्चिमी नजरिये के अनुसार इसका अर्थ है चर्च या धर्मों को राज्य से अलग रखना। धर्म का सत्ता से अलग रखना पश्चिमी देशों के लिए एक सामाजिक इतिहास की हैसियत रखता है।
- भारतीय संदर्भ में धर्मनिरपेक्ष राज्य वह होता है। जो किसी विशेष धर्म का अन्य धर्मों की तुलना में पक्ष नहीं लेता। भारतीय भाव के राज्य के सभी धर्मों को

समान आदर देने के कारण दोनों के बीच तनाव से एक तरह की कठिन स्थिति पैदा हो जाती है हर फैसला धर्म को ध्यान में रखते हुए लिया जाता है। उदाहरण के लिए हर धर्म के त्योहार पर सरकारी छुट्टी होती है।

#### 8. सत्तावादी राज्य:-

- एक सत्तावादी राज्य लोकतंत्रात्मक राज्य का विपरीत होता है।
- इसमें लोगों की आवाज नहीं सुनी जाती है। और जिनके पास शक्ति होती है वे किसी के प्रति उत्तरदायी नहीं होते।
- सत्तावादी राज्य अक्सर भाषा की स्वतंत्रता, प्रेस की स्वतन्त्रता, सत्ता के दुरूपयोग से संरक्षण का अधिकार विधि (कानून) की अपेक्षित प्रक्रियाओं का अधिकार जैसी अनेक प्रकार की नागरिक स्वतंत्रताओं को अक्सर सीमित या समाप्त कर देते हैं।

#### 9. नागरिक समाज़:-

- नागरिक समाज उस व्यापक कार्यक्षेत्र को कहते हैं जो परिवार के निजी क्षेत्र से परे होता है, लेकिन राज्य और बाजार दोनों क्षेत्र से बाहर होता है।
- नागरिक समाज में स्वैच्छिक संगठन होते हैं।
- यह सक्रिय नागरिकता का क्षेत्र है यहाँ व्यक्ति मिलकर सामाजिक मुद्दों पर चर्चा करते हैं। जैसे-गैर सरकारी संस्थाएँ, राजनीतिक दल, मीडिया, श्रमिक संघ आदि।
- नागरिक समाज के द्वारा उठाए गए मुद्दे
  - जनजाति की भूमि की लड़ाई
  - पर्यावरण की सुरक्षा उदाहरण
  - मानक अधिकार और दलितों के हक की लड़ाई (मुद्दे)
  - नगरीय शासन का हस्तांतरण।
  - स्त्रियों के प्रति हिंसा और बलात्कार के विरुद्ध अभियान।
  - बाँधों के निर्माण अथवा विकास की अन्य परियोजनाओं के कारण विस्थापित हुए लोगों का पुर्नवास।

- गंदी बस्तियाँ हटाने के विरुद्ध और अवासीय अधिकारों के लिए अभियान।
- प्राथमिक शिक्षा संबंधी सुधार।
- दलितों को भूमि का वितरण।
- राज्य को काम काज पर नजर रखने और उससे कानून का पालन करवाना।

**सूचनाधिकार अधिनियम 2005** (लोगों के उत्तर देने के लिए राज्य को बाध्य करना)

- सूचनाधिकार अधिनियम 2005 भारतीय संसद द्वारा अधिनियमित एक ऐसा कानून है जिसके तहत भारतीयों को (जम्मू और कश्मीर) सरकारी अभिलेखों तक पहुँचने का अधिकार दिया गया है।
- कोई भी व्यक्ति किसी “सार्वजनिक प्राधिकरण” से सूचना के लिए अनुरोध कर सकता है और उस प्राधिकरण से यह आशा की जाती है कि वह शीघ्रता से यानी 30 दिन के भीतर उसे उत्तर देगा।

## 2 अंक प्रश्न

1. सांस्कृतिक विविधता से आप क्या समझते हैं?
2. धर्मनिरपेक्षता को पाश्चात्य व भारतीय संदर्भ में समझाइए।
3. अर्जित पहचान क्या होता है।
4. राष्ट्र-राज्य की परिभाषा लिखें।
5. अल्पसंख्यक कौन होते हैं?
6. समाजवादी राज्य की कुछ विशेषताएं लिखें।
7. क्षेत्रवाद क्या होता है?
8. विशेष अधिकार प्राप्त/सुविधा प्राप्त अल्पसंख्यक कौन होते हैं?
9. राजनीतिक रूप से अल्पसंख्यक महत्वपूर्ण क्यों हैं?
10. अल्पसंख्यकों की सुरक्षा राज्य के लिए एक चुनौती है, क्यों?

11. राज्य अक्सर सांस्कृतिक विविधता के बारें में शंकालु क्यों होते हैं?
12. भारत में पाई जाने वाली धार्मिक विविधता पर लेख लिखें।
13. अल्पसंख्यकों के अधिकारों के विषय में संविधान में क्या-क्या लिखा है?
14. सांप्रदायिकता से आप क्या समझते हैं?

#### 4 अंक प्रश्न

1. भारतीय संदर्भ में सांप्रदायिकता का वर्णन करें।
2. भारत ने अपनी सांस्कृतिक विविधता को किस प्रकार बनाए रखा है?
3. सांप्रदायिकता की कुछ विशेषताएँ बताइये।
4. पाश्चात्य व भारतीय धर्म निरपेक्षता में अन्तर स्पष्ट करें।
5. प्रजातंत्रीय राज्य व सत्तावादी राज्य में अन्तर बताइये।
6. भारतीय संदर्भ में क्षेत्रवाद को समझाइयें।

#### 6 अंक प्रश्न

1. नागरिक समाज क्या होता है? आज दुनिया में इसका क्या महत्व है? उदाहरण सहित वर्णन करें।

## विषय सूची

### पुस्तक 2

| क्र.सं. | पाठ   | अंक       |
|---------|---|-----------|
| 1.      | अध्याय 1 : संरचनात्मक परिवर्तन                  | 6         |
| 2.      | अध्याय 2 : सांस्कृतिक परिवर्तन                  | 6         |
| 3.      | अध्याय 3 : भारतीय लोकतन्त्र की कहानियाँ         | 6         |
| 4.      | अध्याय 4 : ग्रामीण समाज में विकास एवं परिवर्तन  | 6         |
| 5.      | अध्याय 5 : औद्योगिक समाज में परिवर्तन तथा विकास | 6         |
| 6.      | अध्याय 6 : भूमंडलीकरण और सामाजिक परिवर्तन       | 6         |
| 7.      | अध्याय 7 : जनसंपर्क साधन और संचार               | 6         |
| 8.      | अध्याय 8 : सामाजिक आन्दोलन                      | 6         |
|         | <b>कुल</b>                                      | <b>48</b> |

## **प्रश्न पत्र हल करने के लिए याद करने योग्य महत्वपूर्ण बिन्दु**

- सी.बी.एस.ई. मुख्य परीक्षा दिल्ली 2013-2017 (उत्तर सहित)
- अभ्यास हेतु अनुच्छेद (प्रश्न 25)
- परियोजना कार्य के लिये सुझाव
- परियोजना कार्य हेतु अंक वितरण (सी.बी.एस.ई. के नवीन निर्देशानुसार)
- अनुसंधान प्रारूप

## पाठ 1

### भारत में सामाजिक परिवर्तन एवं विकास

#### मुख्य बिन्दु

1. ● भारत में आधुनिक विचार एवं संस्थाए औपनिवेशिक काल की देन है, हमारे देश की संसदीय विधि एवं शिक्षा व्यवस्था ब्रिटिश प्रारूप व प्रतिमानों पर आधारित है।  
● सड़कों पर बांए चलना, ब्रेड-आमलेट और कटलेट जैसी खाने की चीज इस्तेमाल करना, नेक-टाई पोशाक का अनिवार्य हिस्सा होता है। अंग्रेजी भाषा का ज्ञान होना आदि।
2. उपनिवेशवाद ने राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक संरचना में नवीन परिवर्तन किए परन्तु मुख्य संरचात्मक परिवर्तन-औद्योगिकरण व नगरीकरण है।
3. उपनिवेशवाद- एक स्तर पर एक देश द्वारा दूसरे देश पर शासन को उपनिवेशवाद माना जाता है। भारत में यह शासन किसी अन्य शासन से अधिक प्रभावशाली रहा। उपनिवेशवाद ने सामाजिक संरचना एवं संस्कृति में परिवर्तनों के दिशा दी एवं उन पर अनेक प्रभाव डाले।
4. (i) उपनिवेशवाद का भारतीय समाज पर प्रभाव ब्रितानी उपनिवेशवाद पूँजीवाद व्यवस्था पर आधारित था। इसने आर्थिक व्यवस्था में बड़े पैमाने पर हस्तक्षेप किया, जिसके कारण इसे मजबूती मिली। वस्तुओं की उत्पादन प्रणाली व वितरण के तरीके भी बदल दिए,  
(ii) जंगल काट कर चाय की खेती की शुरूआत की तथा जंगलों को नियंत्रित एवं प्रशासित करने के लए अनेक कानून बनाए।  
(iii) उपनिवेशवाद के दौरान लोगो का आवगमन बढ़ा : डाक्टर व वकील मुख्यतः बंगाल व मद्रास से चुनकर देश विदेश के विभिन्न भागों में सेवा के लिए भेजे गए। व्यवसायियों का अवागमन भी बढ़ा। यह भारत तक सीमित न रह कर सुदूर एशिया, अफ्रीका तथा अमेरिका उपनिवेश तक बढ़ गया।

(iv) पश्चिमी शिक्षा पद्धति, राष्ट्रवादी चेतना व उपनिवेश विरोधी चेतना का माध्यम बनी। उपनिवेश-वाद ने वैधानिक, सांस्कृतिक व वास्तुकला में भी परिवर्तन लाए।

5. ● पूँजीवाद-एक ऐसी अर्थव्यवस्था जिसके उत्पादन के साधनों का स्वामित्व कुछ विशेष लोगों के हाथ में होता है। इसमें ज्यादा से ज्यादा मुनाफा कमाने पर जोर दिया जाता है इसे गतिशीलता, वृद्धि, प्रसार, नवीनीकरण, तकनीक तथा श्रम के बेहतर उपयोग के लिए जाना गया। इससे बाजार को एक विस्तृत भूमंडलीकरण रूप में देखा जाने लगा। भारत में भी पूँजीवाद के विकास के कारण उपनिवेशवाद प्रबल हुआ और इस प्रक्रिया का प्रभाव भारत की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक संरचना पर पड़ा।
- अगर पूँजीवादी व्यवस्था शक्तिशाली आर्थिक व्यवस्था बन सकती है तो राष्ट्र राज्य भी सशक्त एवं प्रबल राजनीतिक रूप ले सकतका है। औद्योगीकरण के कारण नए सामाजिक समूह एवं नए सामाजिक रिश्तों का विकास हुआ।

#### 6. नगरीकरण और औद्योगीकरण:-

- औद्योगीकरण का सम्बन्ध यान्त्रिक उत्पादन के उदय से जो ऊर्जा के गैरमानवीय संसाधनों पर निर्भर होता है इसमें ज्यादातर लोग कारखानों, दफ्तरों तथा दुकानों में काम करते हैं। तथा इसके कारण कृषि व्यवसाय में लोगों की संख्या कम होती जा रही है। औपनिवेशिक काल के नगरीकरण में पुराने शहरों का अस्तित्व कमज़ोर होता गया और उनकी जगह पर नए औपनिवेशक शहरों का उद्भव और विकास हुआ।
- नगरीकरण को औद्योगीकरणसे जोड़ कर देखा जा सकता है। दोनों एक साथ होने वाली प्रक्रियाएँ हैं कई बार औद्योगिक क्षरण भी देखा गया है। भारत में कुछ पुराने, पंरपरात्मक नगरीय केन्द्रों का पतन हुआ। जिस तरह ब्रिटेन में उत्पादन व निर्माण में बढ़ावा आया उसके विपरीत भारत में गिरावट आई। प्राचीन नगर जैसे-सूरत ओर मसुलीपट्टनम का अस्तित्व कमज़ोर हुआ। सरकार द्वारा बागान के मालिकों का सुविधा ओर फायदा पहुँचाया जाने लगा और मज़दूरों व ठेकेदारों को कार्य पूरा न होने पर कानूनी सजा दी जाने लगी।

- प्रारम्भ में भारत के लोग औद्योगीकरण के कारण ब्रिटिशों के विपरीत कृषि क्षेत्र की ओर आए। इस प्रकार नए सामाजिक समूह तथा नए सामाजिक सम्बन्धों का उदय हुआ।
- स्वतंत्रता के बाद भारत की अर्थिक स्थिति को औद्योगीकरण के द्वारा ही सुधारा जा सका। समाजशास्त्री एम.एस.ए. राव ने लिखा है कि भारत के अनेक गाँव भी तेजी से बढ़ रहे नगरीय प्रभाव में आ रहे हैं।
- ब्रिटिश साम्राज्य की अर्थव्यवस्था में नगरों की भूमिका महत्वपूर्ण थी। समुद्र तटीय नगर जैसे बंबई, कलकत्ता और मद्रास उपयुक्त माने गए थे। क्योंकि इन जगहों से उपभोग की आवश्यक वस्तुओं का निर्यात आसानी से किया जा सकता था।

#### 7. चाय की बागवानी

- अधिकारिक रिपोर्ट से पता चलता है कि औपनिवेशिक सरकार गलत तरीकों से मजदूरों की भर्ती करती थी।
- मजदूरों को बलपूर्वक बागानों में सस्ते में काम कराया जाता था।
- बगानों के मालिक अंग्रेज और उनकी मेम विशाल बंगलों में रहते थे। सारा जरूरत का सामान उनके पास मौजुद था। उनकी जिंदगी चका-चौंध में भरी थी।

#### 8. स्वतंत्र भारत में औद्योगीकरण

- औद्योगीकरण को स्वतंत्र भारत ने सक्रियतौर पर बढ़ावा दिया।
- स्वदेशी आंदोलन ने भारत की राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के प्रति निष्ठा को मजबूत किया।
- तीव्र और वृहद् औद्योगीकरण के द्वारा आर्थिक स्थिति में सुधार और सामाजिक न्याय हो पाया।
- भारी मशीनीकृत उद्योगों का विकास हुआ। इन्हें बनाने वाले उद्योग, पब्लिक सेक्टर के विस्तार और बड़े को-ऑपरेटिव सेक्टर को महत्वपूर्ण माना गया।

#### 9. स्वतंत्र भारत में नगरीकरण

- भूमण्डलीकरण द्वारा शहरों का अत्यधिक प्रसार हुआ।
- एम.एस.ए. राव के अनुसार भारतीय गाँव पर नगरों के प्रभाव-
  - (क) कुछ गाँव ऐसे हैं जैंहा से अच्छी खासी संख्या में लोग दूरदराज के शहरों में रोज़गार ढूँढ़ने के लिए जाते हैं। बहुत सारे प्रवासी केवल भारतीय नगरों में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी रहते हैं।
  - (ख) शहरी प्रभाव उन गाँवों में देखा जाता है जो औद्योगिक शहरों के निकट स्थित हैं जैसे भिलाई।
  - (ग) महानगरों का उद्भव और विकास तीसरे प्रकार का शहरी प्रभाव है जिससे निकटवर्ती गाँव प्रभावित होते हैं। कुछ सीमावर्ती गाँव पूरी तरह से नगर के प्रसार में लिलीन हो जाते हैं। जबकि वे क्षेत्र जहाँ लोग नहीं रहते नगरीय विकास के लिए प्रयोग कर लिए जाते हैं।

## 2 अंक प्रश्न

1. अंग्रेजी भाषा ने हमारे समाज पर क्या प्रभाव डाला?
2. उपनिवेशवाद क्या है?
3. पश्चात्य शिक्षा प्रणाली का भारत में क्या प्रभाव पड़ा?
4. पूंजीवाद किसे कहा जाता है?
5. औद्योगीकरण तथा शहरीकरण की परिभाषा लिखें?
6. ब्रिटेश औद्योगीकरण का भारतीय उद्योगों पर क्या प्रभाव पड़ा?
7. आजादी के बाद भारत में औद्योगीकरण किस प्रकार हुआ।
8. औद्योगिक क्षरण क्या है?

## 4 अंक प्रश्न

1. उपनिवेशवाद ने हमारे जीवन को किस प्रकार प्रभावित किया?
2. उपनिवेशवाद भारत में पहले शासनों से किस प्रकार भिन्न है?

3. उपनिवेशवाद के कारण लोगों का अवागमन बढ़ गया। कैस?
4. उपनिवेशवाद के दौरान राष्ट्र राज्य की किस प्रकार उत्पत्ति हुई।
5. भारत में किन शहरों को अंग्रेजों ने बसाया तथा क्यों

## पाठ 2

### सांस्कृतिक परिवर्तन

#### मुख्य बिन्दु

1. सांस्कृतिक परिवर्तन को चार प्रक्रियाओं के रूप में देखा जा सकता है।
  - संस्कृतिकरण, आधुनिकीकरण, लोकिकीकरण अथवा निरपेक्षीकरण, पश्चिमीकरण
  - संस्कृतिकरण की प्रक्रिया उपनिवेशवाद से पहले भी थी लेकिन बाकी की तीन प्रक्रियाएं उपनिवेशवाद के बाद की देन हैं।
2. 19 वीं और 20 वीं शताब्दी के प्रारंभ में हुए समाज सुधार आंदोजन:-
  - समाज सुधार आन्दोजन उन चुनौतियों के जवाब थे, जिन्हें भारत के लोग अनुभव कर रहे हों जैसे- सतीप्रथा, बालविवाह, विधवा पुनर्विवाह तथा जाति प्रथा। राजा राम मोहन राय ने सतीप्रथा का विरोद्ध किया।
  - समाज शास्त्री सतीश सबर बाल ने औपनिवेशिक भारत में आधुनिक परिवर्तनों के लिए निम्न पहलुओं को बताया।
    - (अ) **संचार माध्यम** : प्रैस, माईक्रोफोन, जहाज, रेलवे आदि। वस्तुओं के आवागमन में नवीन विचारों को तीव्र गति प्रदान करने में सहायता प्रदान की।
    - (ब) **संगठनों के स्वरूप** : बंगाल में ब्रह्म समाज और पंजाब में आर्य समाज की स्थापना हुई। मुस्लिम महिलाओं की राष्ट्र स्तरीय संस्था अंजुमन-ए-ख्वातीन-ए-इस्लाम की स्थापना हुई।
    - (स) **विचार की प्रकृति-** स्वतंत्रता तथा उदारवाद के नए विचार, परिवार संरचना, विवाह सम्बन्धी नियम, संस्कृति में स्वचेतन के विचार, शिक्षा के मूल्य।
  - आधुनिक तथा पारम्परिक विचारधाराओं में वाद-विवाद हुए। ज्योतिबाफूले ने आर्यों से पहले को अच्छा काल माना। बाल गंगाधर तिलक ने आर्ययुग की

प्रशंसा की, जहांआरा शाह नवाज़ ने अखिल भारतीय मुस्लिम महिला सम्मेलन में बहु-विवाह की कुप्रथा के विरुद्ध भाषण किया तथा इसे कुरान की मूल भावनाओं के विरुद्ध बताया।

- समाज सुधारों के विरोधियों ने भी अपनी रुढ़िवादी बातों को उठाया। जैसे-सतीप्रथा के समर्थन में बंगाल में धर्म सभा का गठन हुआ।
- भारत में संरचनात्मक तथा सांस्कृतिक विविधिता है।
- आधुनिक ज्ञान व शिक्षा के कारण शिक्षित भारतीयों को उपनिवेशवाद में अन्याय और अपमान का अहसास हुआ।

### 3. संस्कृतिकरण:-

- संस्कृतिकरण एम.एस. श्री निवास के अनुसार वह प्रक्रिया जिसमें निम्न जाति या जनजाति, उच्च जाति (द्विज जातियाँ) की जीवन पद्धति, अनुष्ठान मूल्य, आदर्श तथा विचारों का अनुकरण करते हैं। इसके प्रभाव भाषा, साहित्य, विचार-धारा, संगीत, नृत्य, नाटक, अनुष्ठान तथा जीवन पद्धति में देखे जा सकते हैं। यह प्रक्रिया अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग ढंग से होती है।
- जिन क्षेत्रों में गैर सांस्कृतिक जातियाँ प्रभुत्वशाली थी, वहां की संस्कृति को इन निम्न जातियों ने प्रभावित किया। श्री निवास ने इसे विसंस्कृतिकण का नाम दिया।
- **संस्कृतिकरण की आलोचना:-**
  - सामाजिक गतिशीलता निम्न जाति के स्तरीकरण में उर्ध्वगामी परिवर्तन करती है।
  - उच्च जाति की जीवन शैली उच्च तथा निम्न श्रेणी की जीवन शैली निम्न होने की भावना पाई जाती है।
  - उच्च जाति की जीवन शैली का अनुकरण वांछनीय तथा प्राकृतिक है।
  - यह अवधारणा असमानता तथा अपवर्जन आधारित है।
  - निम्न जाति के प्रति भेदभाव एक विशेषाधिकार है।
  - इसमें दलित समाज के मूलभूत पक्षों को पिछड़ा माना जाता है।
  - लड़कियों को भी असमानता की श्रेणी में नीचे धकेल दिया जाता है।

- जातीय सदस्यता ही प्रतिभा की सूचक बन गई है। यही भावना दलितों में भी आई है। लेकिन फिर भी वे भेदभाव व अपर्वजन के शिकार हैं।
- 4. **पश्चिमीकरण-** ब्रिटिश शासन के 150 वर्षों में आए प्रौद्योगिकी, संस्था, विचारधारा, मूल्य परिवर्तनों को पश्चिमीकरण का नाम दिया गया। जीवनशैली एवं चिन्तन के अलावा भारतीय कला तथा साहित्य पर भी पश्चिमी संस्कृति का असर पड़ा है। ऐसे लोग कम ही थे जो पश्चिमी जीवन शैली को अपना चुके थे। इसके अलावा अन्य पश्चिमी सांस्कृतिक तत्वों जैसे नए उपकरणों का प्रयोग, पोशाक, खाद्य-पदार्थ तथा आम लोगों की आदतों और तौर-तरीकों में परिवर्तन आदि थे। मध्य वर्ग के एक बड़े हिस्से के परिवारों में टेलीविजन, फ्रिज, सौफा-सेट, खाने की मेज आदि आम बात हैं।
- श्री निवासन के अनुसार निम्न जाति के लोग संस्कृतिकरण जबकि उच्च जाति के लोग पश्चिमकरण की प्रक्रिया को अपनाते हैं।
- 5. **आधुनिकीकरण:-** प्रारम्भ में आधुनिकीकरण का आशय प्रौद्योगिकी ओर उत्पादन प्रक्रियाओं में होने वाले सुधार से था। परन्तु आधुनिक विचारों के अनुसार-सीमित, संकीर्ण स्थानीय दृष्टिकोण कमजोर पड़ जाते हैं। और सार्वभौमिक दृष्टिकोण यानि पूरा विश्व एक कुटुम्ब है को महत्व दिया जाता है।
- 6. **आधुनिकीकरण और धर्मनिरपेक्षीकरण:-**
- ये धनात्मक तथा अच्छे मूल्यों की ओर झुकाओ
- आधुनिकीकरण का आशय प्रौद्योगिकरण ओर उत्पादन प्रक्रियाओं में होने वाले सुधार से है। इसका मतलब विकास का वो तरीका जिससे पश्चिमी यूरोप या उत्तर अमेरीका ने अपनाया।
- आधुनिकीकरण का मतलब ये समझ में आता है कि इसके समक्ष सीमित-संकीर्ण-स्थानीय दृष्टिकोण कमजोर पड़ जाते हैं और सार्वभौमिक प्रतिबंद्धता और विश्वजीत दृष्टिकोण ज्यादा प्रभावशाली होता है।
- इसमें उपयोगिता, गणना और विज्ञान की सत्यता को भावुकता, धार्मिक पवित्रता और अवैज्ञानिक तत्वों के स्थान पर महत्व दिया जाता है।
- इसके मूल्यों के मुताबिक समूह/संगठन का चयन जन्म के आधार पर नहीं बल्कि इच्छा के आधार पर होता है।

- धर्मनिरपेक्षीकरण का मतलब ऐसी प्रक्रिया से है जिसमें धर्म के प्रभाव में कम आती है।
- आधुनिक समाज ज्यादा ही धर्मनिरपेक्ष होता है।

## 2 अंक प्रश्न

1. 19वीं सदी में समाजसुधारकों ने बहुत से सामाजिक विषयों को उठाया? ये क्या थे?
2. 20वीं सदी के कुछ आधुनिक सामाजिक संगठनों के नाम बताइये।
3. निम्न का अर्थ बताइये।
  - (अ) संस्कृतिकरण
  - (ब) विसंस्कृतिकरण
4. आधुनिकता के विषय में आधारभूत बिन्दु क्या हैं?
5. पाश्चात्करण (पश्चिमीकरण) तथा धर्म निरपेक्षता में क्या सम्बन्ध है?

## 4 अंक प्रश्न

1. जाति का धर्म निरपेक्षी करण पर नोट लिखे।
2. समाज सुधार आन्दोलन के मुख्य उद्देश्य एक जैसे थे, फिर भी वे अलग थे। समझाइए।
3. संस्कृतिकरण भेदभाव व असामतना को बढ़ावा देता है। इसका वर्णन करो।
4. ब्राह्मण विरोधी आन्दोलन तथा पिछड़े वर्गों के आन्दोलन का संस्कृतिकरण पर क्या प्रभाव पड़ा।

## 6 अंक प्रश्न

1. संस्कृतिकरण की विभिन्न स्तरों पर आलोचना हुई है? इसके विषय में विस्तार से बताए।
2. औपनिवेशिक भारत में आधुनिक बदलाव के विषय में कुछ तथ्यों का वर्णन कीजिए।

## पाठ 3

### भारतीय लोकतंत्र की कहानियाँ

#### मुख्य बिन्दु

1. **लोकतंत्र-** जनता की, जनता के द्वारा जनता के लिए एक सरकार है इसके दो प्रकार है।
  - **प्रत्यक्ष लोकतंत्र:-** इसमें सभी नागरिक, बिना किसी चयनित या मनोनीत पदाधिकारी की मध्यस्था के सार्वजनिक निर्णयों में स्वयं भाग लेते हैं। उदाहरणार्थ- एक सामुदायिक संगठन या आदिवासी परिषद्, किसी श्रमिक संघ की स्थानीय इकाई। प्रत्येक लोकतंत्र छोटे समूह में व्यवसायिक है जहाँ पूरी जनता निर्णय में सम्मिलित होती है तथा बीच में कोई प्रतिनिधि न हो। जैसे- आदिवासी परिषद्; श्रमिक संघ आदि।
  - **प्रतिनिधिक लोकतंत्र:-** प्रतिनिधि लोकतंत्र विशाल व जटिल समुदाय में अपनाया जाता है। सार्वजनिक हित की दृष्टि से राजनीतिक निर्णय लेना, कानून बनाना व लागू करना आदि के लिए नागरिक स्वयं अपने प्रतिनिधि चुनते हैं। हमारे देश में प्रतिनिधिक लोकतंत्र है।
  - **सहभागी लोकतंत्र-** यह ऐसा लोकतंत्र है जिसमें किसी समूह व समुदाय के सभी लोक एक साथ मिलकर कोई बड़ा निर्णय लेते हैं।
  - **विकेंद्रीकृत लोकतंत्र-** जमीनी लोकतंत्र के एक उदाहरण के रूप में पंचायती राज व्यवस्था जो एक विकेंद्रीकरण की तरफ एक महत्वपूर्ण कदम है।
2. **भारतीय संविधान के केंद्रीय मूल्यः-**
  - संपूर्ण-प्रभुत्व-संपन्न, समाजवादी, पंथनिरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य, न्याय, स्वतंत्रता, समता, बंधुता आदि।
  - लोकतांत्रिक मूल्य केवल परिश्चमी की देन नहीं है बल्कि महाकाव्य, कृतियाँ व विविध लोक कथाएँ संवादों परिचर्चाओं और अंतर्विरोधी स्थितियों से भरी पड़ी हैं। जैसे-महाभारत महाकाव्य।

### 3. हित प्रतिस्पर्धी संविधान और सामाजिक परिवर्तन :

- हितों की प्रस्तुति हमेशा किसी स्पष्ट वर्ग-विभाजन के ही प्रतिबिंबित नहीं करती। किसी कारखाने को बंद करवाने का कारण यह होता है कि उससे निकलने वाला विषेला कचरा आसपास के लोगों के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है। इस प्रकार बहुत सी चीजों की समाप्ति के कारण लोग बेराजगार हो जाएंगे।
- कानून-कानून का सार इसकी शक्ति है कानून इसलिए कानून है क्योंकि इससे बल प्रयोग अथवा अनुपालन के संरचन, के माध्यमों का प्रयोग होता है।
- न्याय- न्याय कासार निष्पक्षता है, कानून में कोई भी प्रणाली अधिकारियों के संस्तरण के माध्यम से ही कार्यरत होती है।
- संविधान- संविधान भारत का मूल मानदंड है। यह ऐसा दस्तावेज है जिससे किसी राष्ट्र के सिद्धान्तों का निर्माण होता है। ऐस प्रमुख मानदंड जिनसे नियम और अधिकारी संचालित होते हैं संविधान कहलाता है। अन्य सभी कानून, संविधान द्वारा नियत कार्य प्रणाली के अंतर्गत बनते हैं। ये कानून संविधान द्वारा अधिकारियों द्वारा बनाए व लागू किए जाते हैं। कोई वाद-विवाद होने पर संविधान द्वारा अधिकार प्राप्त न्यायालयों के संस्तरण द्वारा कानून की व्याख्या होती है। ‘उच्चतम न्यायालय’ सर्वोच्च है और वहीं संविधान का सबसे अंतिम व्याख्याकर्ता भी है।

### 4. पंचायती राजः-

- पंचायती राज का शाब्दिक अनुवाद होता है ‘पाँच व्यक्तियों द्वारा शासन’। इसका अर्थ गाँव एवं अन्य जमीनी पर लचीले लोकतंत्र क्रियाशीलता है।
  - (क) डा. अम्बेडकर ने तर्क दिया कि स्थानीय कुलीन ओर उच्च जातीय लोग सुरक्षित परिधि से इस प्रकार घिरे हुए हैं कि स्थानीय स्वाशासन का मतलब होगा भारतीय समाज के पद्दलित लोगों का निरंतर शोषण। निसंदेह उच्च जातियाँ जनसंख्या के इस भाग को चुपकर देगी।
  - (ख) महात्मा गाँधी : स्थानीय सरकार की अवधारणा गाँधी जी को भी लोकप्रिय थी। वे प्रत्येक ग्राम को स्वयं में आत्मनिर्भर और पर्याप्त इकाई मानते थे स्वयं अपने को निर्देशित करे। ग्राम स्वराज्य को वे आदर्श मानते थे। और चाहते थे कि स्वतंत्रता के बाद भी गाँवों में यही शासन चलता रहे।

- 73वां और 74वां संविधान संशोधन 1992:-

  - ग्रामीण व नगरीय दोनों ही क्षेत्रों के स्थाई निकायों के सभी चयनित पदों में महिलाओं को एक तिहाई आरक्षण दिया।
  - इनमें से 17 प्रतिशत सीटें अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति की महिलाओं के लिए आरक्षित हैं।
  - यह संशोधन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इसके अंतर्गत पहली बार निर्वाचित निकायों में महिलाओं को शामिल किया। जिससे उन्हें निर्णय लेने की शक्ति मिली।
  - 73वें संशोधन के तुरंत बाद 1993-1994 के चुनाव में 800,000 महिलाएं एक साथ राजनीतिक प्रक्रियाओं से जुड़ी वास्तव में महिलाओं को मानवाधिकार देने वाला यह एक बड़ा कदम था। स्थानीय स्वशासन के लिए त्रिस्तरीय पंचायती राज प्रणाली का प्रावधान करने वाला संवैधानिक संशोधन पूरे देश में 1992-93 से लागू है।
  - पंचायती राज व्यवस्था का त्रिस्तरीय व्यवस्था  
जिला स्तर पर जिला परिषद् → खण्ड स्तर पर पंचायत समिति → ग्राम स्तर पर ग्रम पंचायत

- पंचायतों की शक्तियाँ और उत्तरदायित्वः  
पंचायतों को निम्नलिखित शक्तियाँ व उत्तरदायित्व प्राप्त हैं:-

  - आर्थिक विकास के लिए योजनाएँ एवं कार्यक्रम बनाना
  - सामाजिक न्याय को प्रोत्साहित करना
  - शुल्क, यात्री कर, जुर्माना, अन्य कर आदि लगाना व एकत्र करना।
  - सरकारी उत्तरदायित्वों के हस्तांतरण में सहयोग करना।
  - जन्म और मृत्यु के आंकडे रखना।
  - शमशानों एवं कब्रिस्तानों का रखरखाव।
  - पशुओं के तालाब पर नियंत्रण।
  - परिवार नियोजन का प्रचार करना।

- एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम, एकीकृत बाल विकास योजना आदि को संचालित करना।
- पंचायत की आय के मुख्य स्रोतः
  - संपत्ति, व्यवसाय, पशु, वाहन आदि पर लगाए गए कर, चुंगी, भू-राजस्व आदि पंचायतों की आय के मुख्य स्रोत हैं। जिला पंचायत द्वारा प्राप्त अनुदान पंचायत के संसाधनों में वृद्धि करते हैं पंचायतों के लिए यह अनिवार्य है कि वे अपने कार्यलय के बाहर बोर्ड लगाएं। जिसमें प्राप्त वित्तीय सहायता के उपयोग से संबंधित आँकड़े लिखे हों।
- न्याय पंचायतः
  - कुछ राज्यों में न्याय पंचायत की स्थापना की गई है। कुछ छोटे-मोटे दीवानी और आपराधिक मामलों की सुनवाई का अधिकार इनके पास होता है। ये जुर्माना लगा तो सकते हैं। लेकिन कोई सजा नहीं दे सकते। ये ग्रामीण न्यायालय प्रायः कुछ पक्षों के आपसी विवादों में समझौता कराने में सफल होते हैं। विशेष रूप से ये तब प्रभावशाली होते हैं, जब किसी पुरुष द्वारा दहेज के लिए स्त्री प्रताड़ित किया जाए या उसके विरुद्ध हिंसात्मक कार्यवाही की जाए।
- जनजाति क्षेत्रों में पंचायती राजः
  - आदिवासी क्षेत्रों की प्रारंभिक स्तर के लोकतांत्रिक कार्यों को अपनी समृद्ध परंपरा रही है।
  - जैसे-मेघालय की आदिवासी जातियों की सैकड़ों साल पुरानी राजनीतिक संस्थाएँ रही हैं।
  - ये राजनीतिक संस्थाएँ उतनी सुविकसित थीं कि ग्राम, वंश और राज्य के स्तर पर कुशलता से कार्य करती थीं। जैसे खासियों की पारंपरिक अपनी परिषद होती थी जिसे दरबार कुर कहा जाता था।
- वन पंचायतः
  - अधिकांश कार्य महिलाएँ करती हैं। वन पंचायत की औरते पौधशालाएँ बनाकर छोटे पौधों का पालन-पोषण करती हैं।
  - वन पंचायत के सदस्य आसपास के जंगलों की अवैध कटाई से सुरक्षा भी करती हैं।

### 5. राजनीतिक दल:

- राजनीतिक दल एक ऐसा संगठन होता है। जो सत्ता हथियाने और सत्ता का उपयोग कुछ विशिष्ट कार्यों को सम्पन्न करने के उद्देश्य से स्थापित करता है। लोकतांत्रिक प्रणाली में विभिन्न समूहों के हित राजनीतिक दलों द्वारा ही प्रतिनिधित्व प्राप्त करते हैं। जो उनके मुद्दों को उठाते हैं।

### 6. हित समूह

- यह ऐसे समूह हैं जो सरकार से अपनी बात मनवाने की कोशिश करते हैं। हित समूह राजनीतिक क्षेत्र में कुछ निश्चित हितों को पूरा करने के लिए बनाए जाते हैं। ये प्राथमिक रूप से वैधानिक अंगों के सदस्यों का समर्थन प्राप्त करने के लिए बनाए जाते हैं।
7. दबाव समूह:- जब किसी समूह को लगता है कि उसके हित की बात नहीं की जा रही है तो वे अलग दल बना लेते हैं जिसे दबाव समूह कहते हैं।

## 2 अंक प्रश्न

1. प्रतिनिधिक (परोक्ष) लोकतंत्र क्या होता है?
2. प्रत्यक्ष व परोक्ष लोकतंत्र में अंतर बताईये।
3. ब्रिटिश उपनिवेश वाद तथा पश्चिम के लोकतंत्र में क्या अन्तर है?
4. पंचायती राज क्या होता है?
5. संविधान के 73वें संविधान संशोधन की क्या उपयोगिता थी?
6. पंचायत के आय के स्रोत लिखिए।
7. न्याय पंचायतें क्या होती हैं?
8. न्याय पंचायतें क्या होती हैं?
9. लोकतंत्र में राजनीतिक दलों का क्या महत्व है?
10. दबाव समूह किसे कहा जाता है?

## **4 अंक प्रश्न**

1. कानून व न्याय में अन्तर स्पष्ट कीजिए।
2. डॉ. अम्बेडकर तथा महात्मा गांधी द्वारा संविधान में पंचायती राज शामिल करने के विषय का वर्णन करें।
3. 73वें व 74वें संविधान संशोधन ने किस प्रकार ग्रामीण लोगों की आवाज को उठाने का कार्य किया है?
4. पंचायतों की शक्तियों तथा उत्तरदायित्वों का विस्तार से वर्णन करें?
5. वन पंचायतों की क्या महत्ता है बताइए।
6. जनजातीय क्षेत्रों में पारम्परिक राजनीतिक प्रणाली किस प्रकार कार्य करती रही है, समझाइये।

## **6 अंक प्रश्न**

1. भारतीय संविधान में विभिन्न केन्द्रीय मूल्य अपनाए गए हैं? उनका वर्णन करें।
2. भारतीय संविधान में पंचायती राज व्यवस्था शामिल करने का क्या महत्त्व है? इनकी शक्तियों व उत्तरदायित्वों का वर्णन करें।

## पाठ 4

### ग्रामीण समाज में विकास एवं परिवर्तन

#### मुख्य बिन्दु

1. भारतीय समाज प्राथमिक रूप से ग्रामीण समाज है। 2011 की जनगणना के अनुसार लगभग 60 प्रतिशत लोग गाँव में रहते हैं। उनका जीवन कृषि तथा उनके संबंधित व्यवसाय पर चलता है तथा भूमि उत्पाद एक महत्वपूर्ण साधन है। भारत के विभिन्न भागों के त्यौहार पोंगल (तमिलनाडु), बैसाखी (पंजाब), ओणम (केरल), हरियाली तीज (हरियाणा), बीहू (आसाम) तथा उगाड़ी (कर्नाटक) मुख्य रूप से फसल काटने के समय मनाए जाते हैं।
- कृषि तथा संस्कृति का घनिष्ठ संबंध है। ग्रामीण भारत की सामाजिकता भी कृषि आधारित है। व्यवसायों को भिन्नता यहाँ की जाति व्यवस्था प्रदर्शित करती है। जैसे धोबी, लोहार, कुम्हार, सुनार, नाई आदि।
2. **कृषिक संरचना-** भारत के कुछ भागों में कुछ न कुछ जमीन का टुकड़ा काफी लोगों के पास होता है जबकि दूसरें भागों में 40 से 50 प्रतिशत परिवार के पास भूमि नहीं होता है। उत्तराधिकार के नियमों और पितृवंशीय नातेदारी के कारण महिलाएँ जमीन की मालिक नहीं होती। भूमि रखना ही ग्रामीण वर्ग संरचना को आकार देता है। कृषि मजदूरों की आमदनी कम होती है तथा उनका रोजगार असुरक्षित रहता है। वर्ष में वे काफी दिन बेरोजगार रहते हैं।
- प्रत्येक क्षेत्र में एक या दो जाति के लोग ही भूमि रखते हैं तथा इनकी संख्या भी गांव में महत्वपूर्ण है। समाज शास्त्री एम.एन. श्री निवास ने ऐसे ही लोगों को प्रबल जाति का नाम दिया है। प्रबल जाति राजनैतिक आर्थिक रूप से शक्तिशाली होती है। ये प्रबल जाति लोगों पर प्रभुत्व बनाए रखती है। जैसे पंजाब के जाट सिक्ख, हरियाणा तथा पश्चिम उत्तरप्रदेश के जाट, आन्ध्र प्रदेश के कम्मास व रेडी, कर्नाटक के वोक्कलिंगास तथा लिंगायत, बिहार के यादव आदि। अधिकतर सीमान्त किसान तथा भूमिहीन लोग निम्न जातीय समूह से होते हैं। वे अधिकतर प्रबल जाति के लोगों के यहाँ कृषि मजदूरी करते थे। उत्तरी भारत के कई भागों में अभी भी बेगार और मुफ्त मजदूरी जैसी पद्धति प्रचलन में है।

- शक्ति तथा विशेषाधिकार उच्च तथा मध्यजातियों के पास ही थे। संसाधनों की कमी और भू-स्वामियों की आर्थिक सामाजिक तथा राजनीतिक प्रभाव के बहुत से गरीब कामगार पीढ़ियों से उनके यहां बंधुआ मजदूर की तरह काम करते हैं। गुजरात में इस व्यवस्था को हलपति तथा कर्नाटक में जीता कहते हैं।
- 3. **भूमि सुधार के परिणाम**
- **औपनिवेशिक काल में भूमि सुधार-**
  - (i) **जमींदारी व्यवस्था-** इस प्रणाली में जमींदार भूमि का स्वामी माना जाता था। सरकार से कृषक का सीधा सम्बंध नहीं होता था। अपितु जमींदार के माध्यम से भूमि का कर (कृषकों द्वारा) सीधा सरकार को दिया जाता था।
  - (ii) **रैयतवाड़ी व्यवस्था-** (रैयत का अर्थ है कृषक) इस व्यवस्था में भूमि का कर कृषक द्वारा सीधा सरकार को जाता था। इस व्यवस्था में जमींदार को बीच में से हटाया जाता था।
- **स्वतंत्र भारत भारत में भूमि सुधार-** स्वतंत्र भारत में नेहरू और उनके नीति सलाहकारों ने 1950 से 1970 तक भूमि सुधार कानूनों की एक शृंखला शुरू की। राष्ट्रीय तथा राज्य स्तर पर विशेष परिवर्तन किए, सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन थे।
  - जमींदारी व्यवस्था को समाप्त करना परन्तु यह केवल कुछ क्षेत्रों में ही हो पाया।
  - पट्टदारी को खत्म करना परन्तु यह केवल बंगाल तथा केरल तक ही सीमित रहा। जो किराए पर भूमि लेकर खेती करता है उन्हें काश्तकार, पट्टेदार या जोतदार कहते हैं।
  - भूमि की हदबंदी अधिनियम जो राज्यों का कार्य था इसमें भी बचाव के रास्ते ओर विधियां निकाल ली गई जिससे यह भी आधा-अधूरा ही रह गया।
  - **बेनामी बदल-** भू-स्वामियों ने अपनी भूमि रिश्तेदारों या अन्य लोगों के बीच विभाजित की परन्तु वास्तव में भूमि पर अधिकार भूस्वामी का ही था। इस प्रथा को बेनामी बदल कहा गया।

#### 4. हरित क्रांति और इसके सामाजिक परिणामः-

##### ● हरित क्रान्ति का पहला चरण-

- 1960-70 के दशक में कृषि आधुनिकरण का सरकारी कार्यक्रम जिसमें आर्थिक सहायता, अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा दी गई थी तथा यह अधिक उत्पादकता वाले संकर बीजों के साथ कीटनाशक, खाद्यों तथा किसानों के लिए अन्य निवेश पर केन्द्रित थी। इस क्रांति के कारण मध्यम तथा बड़े किसान ही नई तकनीक का लाभ उठा सके। ज्यादातर कृषक स्वयं के लिए ही उत्पादन कर पाते हैं तथा बाजार के लिए असमर्थ होते हैं। इन्हें सीमान्त (जीवन निर्वाही कृषक) तथा आमतौर पर कृषक की संज्ञा दी गई है। कई मामलों में पट्टेदार कृषक बेदखल भी हुए क्योंकि भू-स्वामियां ने जमीन वापिस ले ली तथा सीधे कृषि कार्य करना अधिक लाभदायक था। किसान वह है जो फसल का कुछ हिस्सा अपने लिए रखता है तथा बाजार से भी जुड़ा हुआ है। कृषक वह है जो फसल का उत्पादन सिफ अपने लिए करता है।
- हरित क्रान्ति मुख्य रूप से गेहूँ तथा चावल उत्पाद करने वाले क्षेत्रों पर ही लक्षित थी।
- हरित क्रान्ति कुछ क्षेत्रों में जैसे- पंजाब, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, तटीय आन्ध्र प्रदेश तथा तमिलनाडु के कुछ हिस्सों में चली।
- नयी तकनीक द्वारा कृषि उत्पादकता में अत्यधिक वृद्धि हुई।
- धनी किसान और धनी हो गए तथा भूमिहीन तथा सीमान्त भू-धारकों की दशा और बिगड़ गई।
- कृषि मजदूरों की मांग बढ़ गई।

##### ● हरित क्रांति का दूसरा चरण

- सूखे तथा आंशिक सिंचित क्षेत्रों में लागू किया जा रहा है। किसान बाजार पर निर्भर हो गए हैं। बाजारोंन्मुखी कृषि में विशेषतः एक ही फसल उगाई जाती है। जिन क्षेत्रों में तकनीकी परिवर्तन हुआ वे अधिक विकसित हुए तथा अन्य क्षेत्र पूर्ववत् रहे जैसे बिहार, पूर्वी उत्तर प्रदेश, तेलंगाना आदि। भारतीय कृषकों की बहुत सघन विस्तृत तथा पारम्परिक जानकारी लुप्त होती जा रही है जिन्हें किसानों ने सदियों में उन्नत किया था। इसका

कारण संकर तथा सुधार वाले बीजों को प्रोत्साहित किया पुनः कृषि के पारम्परिक तरीके तथा अधिक सावयवी बीजों के प्रयोग की ओर लौटने की सलाह दे रहे हैं।

5. **स्वतंत्रता के बाद ग्रामीण समाज में परिवर्तनः** स्वतंत्रता के बाद ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक संबंधों की प्रकृति में अनेक प्रभावशाली रूपान्तरण हुए। इसका कारण हरित क्रांति रहा।
  - गहन कृषि के कारण कृषि मजदूरों की बढ़ोत्तरी
  - नगद भुगतान
  - भू-स्वामियों एवं किसान के मध्य पुश्टैनी संबंधों में कमी होना।
  - दिहाड़ी मजदूरों का उदय
- भू-स्वामियों से कृषि मजदूरों के मध्य संबंधों की प्रकृति में वर्णन समाज शास्त्री जॉन ब्रेन-सरक्षण से शोषण की ओर बदलाव में किया था। (ब्रेमन 1974) जहाँ कृषि का व्यापारीकरण अधिक हुआ, जिसे कुछ विद्वानों ने पूँजीवादी कृषि का रूप कहा, क्योंकि विकसित क्षेत्रों के ग्रामीण विस्तृत अर्थव्यवस्था से जुड़ते जा रहे थे। मुद्रा का बहाव गांव की ओर बढ़े तथा व्यापार व रोजगार भी बढ़ा यह प्रक्रिया औपनिवेश काल से महाराष्ट्र में कपास की खेती बाड़ी से शुरू हो गया था। राज्यों ने स्वतंत्रता के बाद सिंचाई, सड़कों तथा सरकारी सरंचनाओं द्वारा त्रृट्य की सुविधा ने इसकी गति काफी बढ़ाई। इसका सीधा प्रभाव कृषि सरंचना तथा गांवों पर पड़ा। सम्पन्न किसानों ने अन्य प्रकार के व्यापारों में निवेश करना शुरू कर दिया तथा ग्रामीण क्षेत्रों से कस्बों में रहने लगे। नए अभिजात वर्ग बने जा आर्थिक तथा राजनीतिक रूप से प्रबल हो गए। इसके साथ ही उच्च शिक्षा का विस्तार, निजी व्यवसाकि महाविद्यालयों मध्यम वर्ग को बढ़ावा दिया। विभिन्न वर्ग द्वारा अपने बच्चों को इनमें शिक्षा देकर नगरीय मध्यम वर्ग को बढ़ावा दिया। विभिन्न स्थानों पर इनका प्रभाव विभिन्न स्थानों पर इनका प्रभाव विभिन्न देखा गया जैसे- केरल के काफी लोग खाड़ी प्रदेशों में जाने लगे।
6. **मजदूरों का संचार-** प्रवासी मजदूरों की बढ़ोत्तरी कृषि के व्यापारीकरण से जुड़ी है। मजदूरों तथा भू-स्वामियों के बीच संरक्षण का पारम्परिक बंधन टूटना तथा पंजाब जैसे हरित क्रांति द्वारा सम्पन्न क्षेत्रों में कृषि मजदूरों की मांग बढ़ने से मौसमी पलायन का एक नया रूप उभरा। 1990 के दशक से आई ग्रामीण

असमानताओं ने बहुस्तरीय व्यवसायों की ओर बाध्य किया तथा मजदूरों का पलायन हुआ। जॉन ब्रेमन ने इन्हें घुमककड़ मजदूर (फुटलूज लेबर) कहा। इन मजदूरों का शोषण आसानी से किया जाता है। मजदूरों के बड़े पैमाने पर संचार से ग्रामीण समाज, दोनों ही भेजने वाले तथा प्राप्त करने वाले क्षेत्रों पर अनेक महत्वपूर्ण प्रभाव पड़े हैं। उदाहरण के लिए निर्धन क्षेत्रों में जहाँ परिवार के पुरुष सदस्य वर्ष का अधिकतर हिस्सा गाँवों से बाहर काम करने में बिताते हैं, कृषि मूलरूप से एक महिलाओं का कार्य बन गया है। महिलाएँ भी कृषि मजदूरों के मुख्य स्त्रोत के रूप में उभर रही हैं। जिससे कृषि मजदूरों का महिलाकरण हो रहा है।

7. **भूमण्डलीकरण, उदारीकरण तथा ग्रामीण समाज-** भूमण्डलीय तथा उदारीकरण के कारण बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ निश्चित फसल उगाने को कहती है। तथा ये किसानों को जानकारी व सुविधाएँ भी देती है। इसे संविदा कृषि कहा जाता है।
  - संविदा कृषि सुरक्षा के साथ-साथ असुरक्षा भी देती है। किसान इन कंपनियों पर निर्भर हो जाते हैं खाद व कीट नाशकों के अधिक प्रयोग से पर्यावरण असुरक्षित हो जाता है।
  - कृषि रियायतों में कमी से उत्पादन लागत बढ़ी है। बाजार स्थिर नहीं है बीमारी सूखा बाढ़ तथा हानिकारक जन्तु, उधार पैसा लेना आदि से परिवार में संकट आ जाता है। कृषि बहुत से लोगों के लिए अरक्षणीय होती जा रही है। कृषि के मुद्दे अब सार्वजनिक मुद्दें नहीं रहे हैं, गतिशीलता की कमी के कारण कृषक शक्तिशाली दबाव समूह बनाने में असमर्थ हैं जो नीतियों को अपने पक्ष में करवा सकें।
  - संविदा खेती में कम्पनी और जमीन मालिक तय करते थे कि क्या उपजाना है इसके लिए किसानों को बीज आदि प्रदान करते थे। कम्पनी भरोसा देती थी। कि वे अनाज आदि को खरीद लेंगे। जिसका मूल्य पहले ही तय हो जाता था। इसमें कम्पनी पूँजी भी देती है।
  - संविदा खेती बहुत ही आम है, खास करके फूल की खेती, फल, अंगूर, अनार, कपास के क्षेत्र में जहाँ खेती, किसानों को वित्तीय सुरक्षा प्रदान करती है वहीं यह किसानों के लिए अधिक असुरक्षित भी बन जाती है।

#### **8. संविदा खेती:**

- इसमें किसान अपने जीवन व्यापार के लिए इन कंपनियों पर निर्भर हो जाते हैं।
- निर्यातोन्मुखी उत्पाद जैसे फूल, और खीरे हेतु 'संविदा खेती' का अर्थ यह भी है कि कृषि भूमि का प्रयोग उत्पादन से हट कर किया जाता है।
- 'संविदा खेती' मूलरूप से अभिजात मदों का उत्पादन करती है तथा चूँकि यह अक्सर खाद तथा कीटनाशक का उच्च मात्रा में प्रयोग करते हैं इसलिए यह बहुधा पर्यावरणीय दृष्टि से सुरक्षित नहीं होती।

#### **9. किसानों की आत्महत्या के कारण**

- समाजशास्त्रियों ने कृषि तथा कृषक समाज में होने वाले सरंचनात्मक तथा सामाजिक परिवर्तनों के परिप्रेक्ष्य में करने का प्रयास किया है।
- आत्महत्या करने वाले बहुत से किसान 'सीमांत किसान' थे जो मूल रूप से हरित क्रांति के तरीकों का प्रयोग करके अपनी उत्पादकता बढ़ाने का प्रयास कर रहे थे।
- कृषि रियायातों में कमी के कारण उत्पादन लागत में तेजी से बढ़ोत्तरी हुई है बाज़ार स्थिर नहीं है तथा बहुत से किसान अपना उत्पादन बढ़ाने के लिए महंगे मदों में निवेश करने हेतु अत्यधिक उधार लेते हैं। किसान ऋणी हो रहे हैं।
- खेती का न होना, तथा कुछ मामलों में उचित आधार अथवा बाज़ार मूल्य के आभाव के कारण किसान कर्ज का बोझ उठाने अथवा अपने परिवारों को चलाने में असमर्थ होते हैं। आत्महत्याओं की घटनाएँ बढ़ रही हैं। ये आत्महत्याएँ मैट्रिक्स घटनाएँ बन गई हैं।

## **2 अंक प्रश्न**

1. ग्रामीण समाज में कौन-कौन से पेशे अपनाए गए हैं?
2. कृषक समाज सरंचना से आप क्या समझते हैं?
3. 'बेगार' से क्या मतलब है?
4. रथैतवाड़ी प्रथा क्या होती है?
5. आजादी के बाद भारत की कृषि स्थिति क्या थी?
6. 'बेनामी बदल' से आप क्या समझते हैं।

7. पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा तेलंगाना में जातीय हिंसा हुई है। ऐसा क्यों हुआ, बताएं?
8. कृषि मजदूरों के संचार (सरकुलेशन) से आप क्या समझते हैं?
9. जीवन निर्वाही कृषि क्या है?
10. जीवन निर्वाही कृषक और किसानों में क्या है?

#### **4 अंक प्रश्न**

1. भारत में किसानों में आत्महत्या की प्रकृति बढ़ रही है। इसके कारणों पर प्रकाश डालिए।
2. ग्रामीण समाज में कृषि सरंचना का वर्णन करो।
3. ग्रामीण समाज में जाति व वर्ग में क्या संबंध है?
4. भूमि सुधार कानून को लागू करने में कुछ बचाव के रास्ते व युक्तियाँ थी। इनके विषय में बताएं।
5. औपनिवेशिक भारत में अंग्रेजों ने दो भूमि कर प्रणालियां अपनाई। ये कौन-कौन सी थीं?
6. ‘हरित-क्रांति’ के बारे में लिखें।
7. हरित क्रांति के कारण क्षेत्रीय असमानताओं में किस प्रकार वृद्धि हुई?
8. जान ब्रेमन का घुमक्कड़ मजदूर (फुटलूज लेबर) से क्या मतलब है?
9. संविदा कृषि के बारे में बताइए।

#### **6 अंक प्रश्न**

1. हरित क्रांति के समाज पर क्या प्रभाव हुए? विस्तार से वर्णन कीजिए।
2. आजादी के बाद भारत में विभिन्न भूमि सुधार लागू किए गए, इनके विषय में लिखिए।
3. ग्रामीण क्षेत्र में कृषक समाज की सरंचना कर वर्णन करो।

## पाठ 5

# औद्योगिक समाज में परिवर्तन तथा विकास

### मुख्य बिन्दु

#### 1. औद्योगिक समाज की कल्पना

- प्रौद्योगिकी में होने वाले परिवर्तन सामाजिक संबंधों में भी परिवर्तन लाते हैं तथा सामाजिक संस्थाएँ (जाति, नातेदारी, लिंग) को भी प्रभावित करते हैं। औद्योगिकरण से बहुत अधिक श्रम विभाजन होता है। लोग अधिकतर अपने कार्यों का अंतिम रूप नहीं देख पाते क्योंकि उन्हें उत्पादन के एक छोटे से पुर्जे को बनाना होता है। अक्सर यह कार्य दोहराने और थकाने वाला होता है, लेकिन फिर भी बेरोजगार होने से यह स्थिति अच्छी है। मार्क्स ने इसे अलगाव कहा है जिसमें लोग अपने कार्य से प्रसन्न नहीं होते उनकी उत्तरजीविका भी इस बात पर निर्भर करती है कि मशीनें मानवीय श्रम के लिए किना स्थान छोड़ती है।
- औद्योगीकरण कुछ स्थानों पर जबरदस्त समानता लाता है जैसे- रेलगाड़ियाँ, बस आदि में जातीय भेदभाव न होना। तो दूसरी तरफ कारखानों और कार्यस्थलों में भेदभाव अभी भी देखा जा सकता है।

#### 2. भारत में औद्योगीकरण

- 1999–2000 में भारत में लगभग 60 प्रतिशत लोग तृतीयक क्षेत्र, 17 प्रतिशत द्वितीयक क्षेत्र, 23 प्रतिशत तृतीयक क्षेत्र में कार्यरत थे। कृषि कार्यों में तेजी से हास हुआ और सरकार उन्हें अधिक आमदानी देने में सक्षम नहीं है।
- संगठित/ औपचारिक क्षेत्र की इकाई में 10 और अधिक लोगों के पूरे वर्ष रोजगार में रहने से इन क्षेत्रों का गठन होता है। पेंशन व अन्य सुविधाएँ मिलती हैं। कृषि, उद्योग असंगठित/औपचारिक क्षेत्र की इकाई में 10 और अधिक लोगों के पूरे वर्ष रोजगार में रहने से इन असंगठित/ अनौपचारिक क्षेत्र में आते हैं। असंगठित क्षेत्र में रोजगार स्थाई नहीं होता है। पेंशन व बीमा का समुचित प्रावधान नहीं होता है।

3. भारत के प्रारम्भिक वर्षों में औद्योगीकरण- रूई, जूट, रेलवें तथा कोयला खाने भारत के प्रथम उद्योग थे। स्वतंत्रता के बाद भारत ने परिवहन संचार, ऊर्जा, खान आदि को महत्व दिया गया। भारत की मिश्रित आर्थिक नीति में (निजी एवं सार्वजनिक उद्योग) दोनों प्रकार शामिल थे।
  4. भूमंडलीकरण, उदारीकरण एवं भारतीय उद्योग में परिवर्तन
- 1990 से सरकार ने उदारीकरण नीति को अपनाया है तथा दूर संचार, नागरिक उड़डयन ऊर्जा आदि क्षेत्रों में निजी कंपनियाँ विशेषकर विदेशी फर्मों को प्रोत्साहित किया जा रहा है। बहुत-सी भारतीय कंपनियों को विदेशियों ने खरीद लिया है। तथा कुछ भारतीय कंपनियाँ बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ बन गई हैं। इसके कारण आमदनी की असमानताएँ बढ़ रही हैं। बड़े उद्योग में सुरक्षित रोजगार कम हो रहे हैं। किसान तथा आदिवासी लोग विस्थापित हो रहे हैं।
  - सरकार सार्वजनिक कंपनियों के अपने शेयर्स को निजी क्षेत्र की कंपनियों को बेचने का प्रयास कर रही है जिसे विनिर्वेश कहा जाता है। इससे कर्मचारियों को नौकरी जाने का खतरा रहता है।
5. लोग किस तरह काम पाते हैं- रोजगारों के विज्ञापन द्वारा बहुत कम लोग रोजगार पाते हैं, जबकि निजी सम्पर्कों द्वारा स्वनियोजित लोग काम के आधार पर व्यवसाय करते हैं। एक फैक्ट्री के कामगार ठेकेदार द्वारा कामगार ठेकेदार द्वारा काम पाते हैं। जो पहले स्वयं कामगार थे।
  6. काम को किस तरह किया जाता है- मैनेजर कामगारों को नियंत्रित करके अधिक काम कराते हैं। कामगारों से अधिक कार्य करवाने के दो तरीके होते हैं-
- कार्य के घंटों में वृद्धि तथा निर्धारित समय में उत्पादित वस्तु की मात्रा को बढ़ा देना। उत्पादन बढ़ाने के अन्य तरीका है कार्य को संगठित रूप से करना। इसे टेलरिज्म या औद्योगिक इंजीनियरिंग भी कहते हैं। एक अमेरिकन फैडरिक विनस्लो टेलर ने वैज्ञानिक प्रबंधन के नाम से इस व्यवस्था का आविष्कार किया। इस व्यवस्था में स्टापवाच की सहायता से छोटे-छोटे पुर्जों को तोड़र कामगारों में बांटना, कार्य को समय के साथ पूरा करना कार्य को तेज करने के लिए एसेंबली लाइन का प्रयोग करना कार्य, करने की गति को कन्वेयर बेल्ट के साथ गति रखना आदि। कारखाने में सभी कार्य ब्राह्म स्त्रोतों से करवाते हैं। इस प्रकार का कार्य कम्पनी को सस्ता पड़ता है।

- अधिक मशीनों वाले उद्योगों में, कम लोगों को काम दिया जाता है, लेकिन जो होते हैं उन्हें भी मशीनी गति से काम करना होता है जैसे मारुति गति से काम करना होता है जैसे मारुति उद्योग लिमिटेड। इसमें प्रत्येक मिनट में दो कारें तैयार होकर आ जाती हैं। प्रत्येक कामगार 40 वर्ष का होने तक पूरी तरह थक जाता है और स्वैच्छिक अवकाश ले लेता है। यह कामगारों में अधिक तनाव की वहज से होता है।
- साफ्टवेयर, आई.टी. क्षेत्रों में काम करने वाले शिक्षित होते हैं। उनका कार्य भी टायलरिज्म लेबर प्रक्रिया के अनुरूप ही होता है। आई.टी. क्षेत्र में ‘सयंम की चाकरी’ -ऑस्तन 10-12 घंटे का कार्यदिवस और रातभर कार्य करने वाले कर्मचारी भी असामान्य बात नहीं है, जिसे नाइट आउट कहते हैं। जब उनकी परियोजना की अंतिम सीमा आ जाती है। लंबे कार्य घंटों का होना एक उद्योग की केंद्रिय ‘कार्य संस्कृति’ होती है। एक आठ घंटे काम करने वाले इंजीनियर के श्रम के आधार पर काम को अंतिम सीमा तक पहुँचाने के लिए उसे अतिरिक्त घंटों और दिनों तक काम करना पड़ता है। ऑफिस में देर तक रुक जाते हैं जो कि या तो साथियों के दबाव के कारण होता है अथवा वे अपने अधिकारियों को दिखाना चाहते हैं कि वे कड़ी मेहनत कर रहे हों।
- संयुक्त परिवार जो कि लुप्त हो गए थे औद्योगीकरण के कारण फिर से बनने लग गए हैं।

#### 7. कार्यवस्थाएँ

- सरकार ने कार्य की दशाओं को बेहतर करने के लिए बहुत से कानून बना दिए हैं।
  - खदान एक्ट 1952 ने मजदूरों के विभिन्न कार्यों को स्पष्टकिया है। भूमिगत खदानों में मजदूरों को आग, बाढ़, ऊपरी सतह के धाँसने, क्षय रोग आदि का खतरा रहता है।
- 8. घरों में होने वाला काम-** घरों में आज अनेक काम किए जाते हैं लेस बनाना, बीड़ी बनाना, जरी, अगरबत्ती, गलीचे, एवं अन्य कार्य अधिकतर महिलाएँ व बच्चे करते हैं। एक एजेन्ट इन्हें कच्चा माल दे जाता है। तथा पूरा करवा कर ले जाता है। इन्हें कितना पैसा मिल पाता है बीड़ी उद्योग में पाई डायाग्राम को देखे कि कैसे बीड़ी मूल्य को बांटा गया है।

9. हड़ताले एवं मजदूर संघ- फैक्ट्री तथा अन्य उद्योगों में कामगारों के संघ है। जिनमें जातिवाद तथा क्षेत्रीयवाद पाया जाता है।
- मजदूर संघ- किसी भी मिल, कारखाने में मजदूरों के हितों की रक्षा करने के लिए मजदूर संघ का गठन किया जाता है। सभी मजदूर इसके सदस्य होते हैं।
  - हड़ताल- अपनी मांगों को मनवाने के लिए कर्मचारी हड़ताल करते हैं।
  - तालाबंदी- मिल मालिकों द्वारा मिल के मुख्य द्वारा पर ताला लगाना। (1982 की बम्बई टैक्सटाइल मिल की हड़ताल जो व्यापार संघ के नेता दत्ता सामंत के नेतृत्व में हुई थी, जिसमें लगभग ढाई लाख कामगारों के परिवार पीड़ित हुए। उनकी मांग बेहतर मजदूरी तथा संघ बनाने की अनुमति प्रदान करता था। कामगार किसी अन्य मजदूरी या कार्य करने को मजबूर हो जाते हैं इनका भविष्य कौन तय करेगा? मिल मालिक सम्पदा व्यापारी, सरकार या स्वयं ये जटिल प्रश्न हैं?

## 2 अंक प्रश्न

1. कामगार हड़ताल पर क्यों जाते हैं?
2. तालाबंदी में मालिक क्या करता है?
3. संगठित और असंगठित क्षेत्र में अन्तर लिखिए।
4. औद्योगिक इन्जीनियरिंग (टेलिरिज्म) क्या होता है?
5. समय की चाकरी से आप क्या समझते हैं?
6. औद्योगिकी में लोग अपने उत्पादन का अन्तिम रूप क्यों नहीं देख पाते?
7. विनिवेश किसे कहते हैं?

## 4 अंक प्रश्न

1. उद्योगों के प्राथमिक क्षेत्र कौन से हैं? असंगठित क्षेत्र के उद्योग क्या होते हैं?
2. 40 वर्ष तक अधिकाशं व्यक्ति उद्योगों में थक जाते हैं। इसमें प्रबन्धकों की भूमिका क्या है?

3. उदारीकरण के कारण कौन-कौन से उद्योग प्रभावित हुए हैं?
4. उद्योगों में लोग किस प्रकार से काम पाते हैं?
5. भारत में स्वतंत्रता के बाद औद्योगिक क्षेत्रों में क्या बदलाव आए?
6. भूमिगत खदानों में मजदूरों को किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है?

## 6 अंक प्रश्न

1. कामगारों की कार्य अवस्थाएं किस प्रकार की है उदाहरण देकर समझाइए।
2. उदारीकरण का भारत के उद्योगों पर क्या प्रभाव पड़ा है? बहुउद्देशीय कम्पनी क्या होती है?

## पाठ 6

### भूमंडलीकरण और सामाजिक परिवर्तन

#### मुख्य बिन्दु

1. **भूमंडलीकरण-** सामाजिक परिवर्तन का केन्द्रीय बिन्दु है। यह आम लोगों के जीवन को प्रभावित कर रहा है मध्यम वर्ग के लिए रोजगार, खुदरा व्यापार बहु राष्ट्रीय कर्पनियों द्वारा शुरू करना, बड़े बिक्री भंडार, युवाओं के लिए समय बिताने की विधियां तथा अन्य क्षेत्र प्रदान कर रहा है। इससे हमारा सामाजिक व सांस्कृतिक जीवन बदल रहा है। चीन तथा कोरिया से रेशम धागों का आयात करने से बिहार के कामगारों पर प्रभाव, बड़े जहाजों द्वारा मछली पकड़ने के कारण भारतीय मछुआरों पर कुप्रभाव, सूडान से गोंद आने पर गुजरात की औरतों के रोजगार में कमी आ रही है।
2. **क्या भूमंडलीकरण अंत सम्बन्ध भारत तथा विश्व के लिए नए है-** आज से 2000 वर्ष पहले भी भारत, चीन, फ्रांस, रोम से सिल्क रूट द्वारा जुड़ा था। दार्शनिक, व्यापारी, विजेता आदि के रूप में हमारा विभिन्न देशों से सम्बन्ध रहा है। उपनिवेशवाद के बाद इसमें बढ़ोतरी ही हुई है। अन्य देशों में जाकर बसना, मजदूरों को बाहर ले जाना इसका विशेषीकरण पक्ष है। स्वतंत्र भारत में भी आयात निर्यात किसी न किसी रूप से विद्यमान है।
3. **भूमंडलीकरण के विभिन्न आयाम-** स्वतंत्र भारत ने भूमंडलीय दृष्टिकोण को अपनाए रखा।

#### आर्थिक आयाम

##### ● उदारीकरण की आर्थिक नीति

- उदारीकरण शब्द का तात्पर्य ऐसे अनेक नीतिगत निर्णयों से है जो भारत राज्य द्वारा 1991 में भारतीय अर्थव्यवस्था को विश्व बाजार के लिए खोल देने के उद्देश्य से लिए गए थे।
- अर्थव्यवस्था के उदारीकरण का अर्थ था भारतीय व्यापार को नियमित करने वाले नियमों और वित्तीय नियमनों को हटा देना।

- उदारीकरण की प्रक्रिया के लिए अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष (आई.एम.एफ.) जैसी अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं से ऋण लेना भी जरूरी हो गया।
  - **पार राष्ट्रीय निगम-** ये कम्पनियां एक से अधिक देशों में अपने माल का उत्पाद करती हैं। या बाजार में सेवाएं प्रदान करती हैं इनके कारखाने उस देश से बाहर भी होते हैं जिससे ये मूल रूप से जुड़ी होती हैं। जैसे कोका कोला, पैप्सी, जनरल मोटर, कोडक, कोलगेट, बाटा आदि।
  - **इल्कट्रोनिक अर्थव्यवस्था-** कम्प्यूटर द्वारा या इंटरनेट द्वारा बैंकिंग, निगम, निवेशकर्ता, अपनी निधि को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इधर-उधर भेज सकते हैं।
  - **भार रहित या ज्ञानात्मक अर्थव्यवस्था-** इसमें उत्पाद सूचना पर आधारित होते हैं, न कि कृषि तथा उद्योग पर। जैसे इन्टरनेट सेवाएं, मनोरंजन के उत्पाद, मीडिया, साप्टवेयर, आदि वास्तविक कार्यबल भौतिक उत्पादन तथा वितरण में नहीं होता है। यह इनके डिजाईन, विकास, प्रौद्योगिकी, विपणन, बिक्री तथा सर्विस आदि में होता है।
  - **वित्त का भूमंडलीकरण**
    - सूचना प्रौद्योगिकी की क्रांति के कारण वित्त का भूमंडलीकरण हुआ है। भूमंडलीय आधार पर एकीकृत वित्तीय बाजार इलेक्ट्रोनिक परिपथों, कुछ क्षणों में अरबों-खरबों डालर के लेन-देन होते हैं।
    - पूँजी और प्रतिभूति बाजारों में चौबीसों घंटे बाजार चलता रहता है।
    - न्यूयार्क, टोकियो और लंदन जैसे नगर वित्तीय व्यापार के प्रमुख केन्द्र हैं।
4. **भूमंडलीय संचार-** इसके कारण बाहरी दुनिया के साथ संबंध बने हैं। टेलीफोन, फैक्स मशीन, डिजीटल तथा केबल टेलीविजन, इंटरनेट आदि इसमें सहायक बने। डिजिटल विभाजन- दुनिया के सम्बन्ध बनाए रखने के बहुत से साधन मौजूद हैं, लेकिन कुछ जगह ऐसी भी हैं जहाँ ये साधन बिल्कुल भी नहीं हैं। इसे डिजिटल विभाजन कहा जाता है।
5. **भूमंडलीय तथा श्रम-** भूमंडलीकरण के कारण अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक नया श्रम विभाजन पैदा हुआ है। इसमें तीसरी दुनिया के शहरों में नियन्त्रित निर्माण, उत्पादन व रोजगार दिया जाता है 'नाइके' कम्पनी 1960 के दशक में जूतों का आयात करने वाली कम्पनी के रूप में विकसित हुई। इसका मालिक फिल नाईक जापान से जूते आयात करते तथा खेल आयोजनों पर बेचते थे। अब यह

कम्पनी बन गई नाईक ने दक्षिण कोरिया में उत्पादन शुरू किया। इसी प्रकार 1980 में थाईलैंड व इंडोनेशिया तथा 1990 भारत में उत्पाद शुरू कर दिया।

- **फोर्डवाद-** एक केन्द्रीय स्थान पर विशाल पैमाने पर उत्पादन फोर्डवाद कहलाती है।
  - **फोर्डवादोत्तर-** केन्द्रीय स्थान की बजाय अलग-अलग स्थानों पर उत्पादन लचीली प्रणाली के अन्तर्गत पोस्ट फोर्डवाद (फोर्डवादोत्तर) कहलाता है।
6. **भूमंडलीकरण व राजनीतिक परिवर्तन-** समाजवादी विश्व का विघटन एक बड़ा राजनीतिक परिवर्तन था इसके कारण भूमंडलीकरण की प्रक्रिया की गति काफी बढ़ गई है। इससे एक विशेष आर्थिक व राजनीतिक दृष्टिकोण बना है। इन परिवर्तनों को 'नव उदारवादी' उपाय कहते हैं। भूमंडलीकरण के साथ ही एक अन्य राजनीतिक घटनाक्रम भी हो रहा है। वह है राजनीतिक सहयोग के लिए अन्तर्राष्ट्रीय तथा क्षेत्रीय रचना तन्त्र। जैसे यूरोपीय संघ (ई.यू.) दक्षिण एशियाई राष्ट्र संघ (एशियान), दक्षिण एशियाई व्यापार संघ (बोर्डस) अन्तर्राष्ट्रीय सरकारी तथा गैर-सरकारी संगठनों के विशिष्ट पारराष्ट्रीय कार्यक्षेत्र का प्रबंध करता है। अतः सरकारी संगठन सहभागी सरकारों के विशिष्ट पारराष्ट्रीय कार्यक्षेत्र का प्रबंध करता है। जैसे विश्व व्यापार संघ व्यापार नियमों पर निगरानी रखता है। अन्य उदाहरण है- ग्रीनपीस, रेडक्रास, एम्स्टर्डम इंटरनेशनल, फ्रंटियरिस डाक्टर्स विदाउट बोर्डस।
7. **भूमंडलीकरण तथा संस्कृति-** पिछले दशकों में काफी सांस्कृतिक परिवर्तन हुए हैं, जिसके कारण यह डर पैदा हो गया कि कहीं हमारी संस्कृति पीछे न रह जाए, परन्तु आज भी हमारा देश में राजनीतिक व आर्थिक मुद्दों के अलावा कपड़ों, शैलियों, संगीत, फिल्म, हावभाव, भाषा आदि पर खूब बहस होती है।
8. **सजातीय बनाम संस्कृति का भू-स्थानीयकरण (ग्लोबलाइजेशन)-** यह माना जाता है कि कुछ समय बाद सब संस्कृतियाँ एक समान हो जाएंगी, कुछ मानते हैं की संस्कृति का भूस्थानीयकरण की प्रवृत्ति बढ़ रही है। अर्थात् भूमंडल के साथ स्थानीय मिश्रण, मैकडोनाल्ड भी भारतीयों की परम्परा के अनुसार उत्पाद बेचता है। संगीत के क्षेत्र में भी भांगड़ा पोप, इंडियाप्यूजन म्यूजिक आदि लोकप्रियता बढ़ रही है। इस प्रकार भूमंडलीकरण के कारण स्थानीय परम्पराओं के साथ-साथ भूमंडलीकरण परम्पराएं भी पैदा हो रही हैं।
9. **लिंग तथा संस्कृति-** परम्परागत संस्कृति का समर्थन करने वाले कुछ व्यक्ति महिलाओं के प्रति भूमंडलीकरण का प्रभाव नकारात्मक मानते हैं फैशन व

खुलापन का सांस्कृतिक पहचान के नाम पर विरोध करते हैं तथा शंकालु बनाते हैं सौभाग्य से भारत अपनी लोकतांत्रिक परम्परा कायम रखते हुए समावेशात्मक नीति विकसित करने में सफल रहा है।

10. **उपयोग की संस्कृति-** सांस्कृतिक उपभोग (कला, फैशन, खाद्य, संगीत) नगरों की वृत्तिंद्रि को आकार देता है। भारत के बड़े शहरों में बड़े-बड़े शापिंग माल, मल्टीप्लेक्स सिनेमाघर, मनोरंजन, उद्यान, जल क्रीड़ास्थल आदि इसके उदाहरण हैं।
11. **निगम संस्कृति (कारपोरेट)-** प्रबंध सिद्धान्त जिसमें फर्म के सभी सदस्यों को साथ लेकर एक विशेष संगठन की संस्कृति का निर्माण करके उत्पादकता और प्रतियोगिता का बढ़ावा देते हैं इससे कम्पनी के कार्यक्रम रीतियां तथा परम्पराएं शामिल हैं ये कर्मचारियों में वफादारी व एकता को बढ़ाती है। वह यह भी बताती है कि काम करने का तरीका क्या है ओर उत्पादों को कैसे बढ़ावा दिया जाए।
12. **स्वदेशी शिल्प, साहित्यिक परम्पराओं एवं ज्ञान व्यवस्थाओं को खतरा-भूमण्डलीकरण के कारण हमारी साहित्यिक परम्पराओं एवं ज्ञान व्यवस्थाओं पर भी कुप्रभाव आए हैं। जैसे- कपड़ा मिले (बम्बई) बन्द होने के कारण थियेटर समूह समाप्त या निष्क्रिय हो गए हैं। लेकिन कृषि, स्वास्थ्य संबंधी परम्परागत ज्ञान सुरक्षित रखे जाते हैं। तुलसी, हल्दी, बासमती चावल, रुद्राक्ष आदि को विदेशी कम्पनियाँ पेटेन्ट करने की कोशिश करती रहती हैं। कुछ वर्षपहले आंध्र प्रदेश के पारंपरिक बनकरों द्वारा आत्महत्या किए जाने की खबरे मिली थीं। इसी तरह से डोमबारी समुदाय की हालत भी काफी खराब हो चुकी है। इनके करतब आज कल पसन्द नहीं किए जाते क्योंकि अन्य मनोरंजन के साधन उपलब्ध हैं।**

## 2 अंक प्रश्न

1. भूमण्डलीकरण क्या है?
2. ज्ञानात्मक या भार रहित अर्थव्यवस्था क्या होती है?
3. भूस्थानीकरण संस्कृति किसे कहते हैं?
4. निगम संस्कृति (कारपोरेट) से क्या समझते हैं?

5. उपभोग की संस्कृति किसे कहा जाता है?
6. पार राष्ट्रीय निगमों के बारें में वर्णन करें।
7. फोर्डवाद से आप का क्या तात्पर्य है?
8. प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय व गैर-सरकारी संगठनों के नाम लिखो।

#### 4 अंक प्रश्न

1. सामाजिक न्याय पर भूमंडलीकरण का क्या प्रभाव पड़ा है?
2. भूमंडलीकरण के कारण मजदूर कमजोर व असुरक्षित क्यों महसूस करते हैं?
3. क्या भूमंडलीकरण अंत सम्बन्ध भारत और विश्व के लिए नए हैं?
4. भूमंडलीकरण हमारे किसानों पर क्या प्रभाव पड़ा है?
5. भूमंडलीकरण आर्थिक परिवर्तन का केन्द्र बिन्दु हैं। वर्णन कीजिए।

#### 6 अंक प्रश्न

1. भूमंडलीकरण अधिकतर छोटे उद्योगों के लिए एक खतरा है, स्पष्ट करें।
2. भूमंडलीकरण के राष्ट्रीय स्तर पर राजनीति में क्या परिवर्तन किए हैं?
3. भूमंडलीकरण के विभिन्न आयामों की चर्चा कीजिए?

## पाठ 7

### जन संपर्क साधन और संचार

#### मुख्य बिन्दु

##### 1. मास मीडिया

- मास मीडिया यानि जन संपर्क के साधन टेलीविजन, समाचार पत्र, फ़िल्में, रेडियो विज्ञापन, सी.डी आदि। ये बहुत बड़ी जनसंख्या को प्रभावित करते हैं समाज पर इसके प्रभाव दूरगामी हे। इसमें विशाल पूँजी, संगठन तथा औपचारिक प्रबन्धन की आवश्यकता है। मास मीडिया हमारे दैनिक जीवन का एक अंग है।

##### 2. आधुनिक मास-मीडिया का प्रारंभ

- पहली आधुनिक मास-मीडिया की संस्था का प्रारंभ प्रिटिंग प्रेस के विकास के साथ हुआ।
- यह तकनीक सर्वप्रथम जोहान गुटनबर्ग द्वारा 1440 में विकसित की गई।
- औद्योगिक क्रांति के साथ ही इसका विकास हुआ।
- समाचार-पत्र जन-जन तक पहुँचने लगे।
- देश के विभिन्न भागों में रहने वाले लोग परस्पर जुड़ा हुआ महसूस करने लगे और उनमें 'हम की भावना' विकसित हो गई।
- इससे राष्ट्रवाद का विकास हुआ और लोगों के बीच मैत्री भाव उत्पन्न होने लगे।
- इस प्रकार एंडरसन ने राष्ट्र को एक काल्पनिक समुदाय मान लिया है।

##### 3. औपनिवेशिक काल में मास-मीडिया

- भारतीय राष्ट्रवाद का विकास उपनिवेशवाद के विरुद्ध उसके संघर्ष के साथ गहराई से जुड़ा है।
- औपनिवेशिक सरकार के उत्पीड़क उपायों का खुलकर विरोध करनेवाली

राष्ट्रवादी प्रेस ने उपनिवेश-विरोधी जनमत जागृत किया गया और फिर उसे सही दिशा भी दी।

- औपनिवेशिक सरकार ने राष्ट्रवादी प्रेस पर शिकंजा कसना शुरू कर दिया।
- रेडियो पूर्ण रूप से सरकार के स्वामित्व में था। उस पर राष्ट्रीय विचार अभिव्यक्त नहीं किए जा सकते थे।
- राष्ट्रवादी आनंदोलन को समर्थन देने के लिए 'केसरी' (मराठी) मातृभूमि (मलायम) 'अमृतबाजार पत्रिका (अंग्रेजी) छपना प्रारंभ हुई।

#### 4. स्वतंत्रता भारत में मास मीडिया

- हमारे पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने मीडिया को “लोकतंत्र के पहरेदार” की भूमिका दी। ये लोगों में राष्ट्र विकास तथा आत्मनिर्भरता की भावना भरे, सामाजिक कुरीतियों को दूर करने को कहा, औद्योगिक समाज को तर्क संगत तथा आधुनिकता की ओर बढ़ने की प्रेरणा दी।

मीडिया के प्रकार: मीडिया के दो प्रकार हैं।

##### (1) इलेक्ट्रॉनिक मीडिया

##### (2) प्रिन्ट मीडिया

- **रेडियो (इलेक्ट्रॉनिक मीडिया)**- 1920 में कलकत्ता तथा चेन्नई से हैम्ब्राडकास्टिंग क्लब ने भारत में शुरू किया। शुरू में केवल छः स्टेशन थे। समाचार प्रसारण आकाशवाणी द्वारा तथा मनारंजन कार्यक्रम विविध भारती चैनल द्वारा प्रसारित होते थे। 1960 के दशक में हरित क्रांति के कार्यक्रम प्रसारित किए गये। इसके बाद जरूरत के अनुसार राष्ट्रीय, क्षेत्रीय तथा स्थानीय स्तरों पर सेवाएं शुरू की गईं।
- **टेलीविजन (इलेक्ट्रॉनिक मीडिया)**- 1959 में ग्रामीण विकास की भावना के साथ इसकी शुरूआत हुई। 1975-76 में उपग्रह की सहायता से ग्रामीण क्षेत्रों में समुदायिक शिक्षा का कार्यक्रम शुरू किया गया। दिल्ली, मुम्बई, श्रीनगर तथा अमृतसर में केन्द्र बनाए गए। इसके बाद कोलकत्ता, चेन्नई तथा जालन्थर केन्द्र शुरू किए गये। विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों को शुरूआत की वाणिज्यिक विज्ञापनों ने लोकप्रियता को बढ़ावा दिया। “हम लोग” और “बुनियाद” जैसे सोप ओपेरा प्रसारित किए गए।
- **मुद्रण माध्यम (प्रिन्ट मीडिया)**- शुरू में सामाजिक आनंदोलन, फिर राष्ट्र

निर्माण में भागीदारी। 1975 में सैंसरशिप व्यवस्था तथा 1977 में पुनः बहाली। इसके प्रभाव आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक पक्षों पर महत्वपूर्ण है। उदाहरण-समाचार पत्र, पत्रिका आदि।

5. **भूमंडलीकरण तथा मीडिया-** 1970 तक सरकार के नियमों का पालन किया गया। इसके बाद बाजार तथा प्रौद्योगिकी आदि ने रूप बदल दिया है। भूमंडलीकरण के कारण प्रिंट मीडिया, रेडियो, इलैक्ट्रॉनिक मीडिया में परिवर्तन हुए।

(क) **मुद्रण माध्यम (प्रिंट मीडिया)**

- नई प्रौद्योगिकियों ने समाचार पत्रों के उत्पादन और प्रसार को बढ़ावा दिया। बड़ी संख्या में चमकदार पत्रिकाएँ भी बाजार में आ गई हैं।
- भारतीय भाषाओं के समाचार पत्रों में आश्चर्यजनक वृद्धि हुई है।
- कारण (1) साक्षर लोगों में वृद्धि (2) छोटे कस्बों और गाँवों में पाठकों की आवश्यकताएँ शहरी पाठकों से भिन्न होती है और भारतीय समाचार पत्र इसे पूरा करते हैं।

(ख) **टेलीविजन**

- 1991 में भारत में केवल एक ही राज्य नियंत्रित टीवी चैनल दूरदर्शन था।
- अब गैर सरकारी चैनलों की संख्या कई गुणा बढ़ गई है।
- 1980 के दशक में एक ओर जहाँ दूरदर्शन तेजी से विस्तृत हो रहा था, वही केवल टेलीविजन उद्योग भी भारत के बड़े-बड़े शहरों में तेजी से पनपता जा रहा था।
- बहुत से विदेशी चैनल जैसे सोनी, स्टार प्लस, स्टार नेटवर्क आदि पूर्ण रूप से हिंदी चैनल बन गए।
- अधिकांश चैनल हफ्ते में सातो दिन, और दिन में चौबीसों घंटे चलते हैं।
- रिएलिटी शो वार्ता प्रदर्शन, हँसी-मजाक के प्रदर्शन बड़ी संख्या में हो रहे हैं।
- कौन बनेगा करोड़पति, बिग बॉस, इंडियन आइडल जैसे वास्तविक प्रदर्शन दिन-भर-दिन लोकप्रिय होते जा रहे हैं।

- **रेडियो**

- 2000 में आकाशवाणी के कार्यक्रम भारत के सभी दो तिहाई घरों में सुने जा सकते थे।
- 2002 में गैर सरकारी स्वामित्व वाले एफ.एम रेडियो स्टेशनों की स्थापना से रेडियो पर मनोरंजन के कार्यक्रमों में बढ़ोत्तरी हुई। ये श्रोताओं को आकर्षित कर उनका मनोरंजन करते थे।
- एफ.एम. चैनलों को राजनीतिक समाचार बुलेटिन प्रसारित करने की अनुमति नहीं है।
- अपने श्रोताओं को लुभाने के लिए दिन भर हिट गानों को प्रसारित करते हैं जैसे रेडियों मिर्ची।
- दो फ़िल्मों “रंग दे बसंती” और “मुना भाई” में रेडियों को संचार के सक्रिय माध्यम के रूप में इस्तेमाल किया गया है।
- भारत में एफ.एम. चैनलों को सुनने वाले घरों की संख्या ने स्थानीय रेडियों द्वारा नेटवर्कों का सीन ले लेने की विश्वयापी प्रवृत्ति को बल दिया।

## 2 अंक प्रश्न

1. मास-मीडिया से आप क्या समझते हैं?
2. जनसंपर्क के साधनों के उदाहरण लिखिए।
3. मास मीडिया में किस प्रकार बढ़ोत्तरी हुई है?
4. प्रौद्योगिकी तथा परिवहन ने मास मीडिया पर क्या प्रभाव डाले हैं?
5. दिल्ली में हिन्दी दैनिक की संख्या क्यों अधिक बढ़ी है?

## 4 अंक प्रश्न

1. उदारीकरण तथा मास मीडिया किस प्रकार एक दूसरे को प्रभावित कर रहे हैं?
2. समाचार पत्रों का प्रारूप दैनिक आवश्यकताओं के अनुसार परिवर्तित हो रहा है वर्णन करें।

3. भूमंडलीकरण के कारण मास मीडिया सामाजिक परिवर्तन का मुख्य कारण है, उदाहरण देकर स्पष्ट करें।
4. मीडिया को लोकतंत्र के पहरेदार की भूमिका क्यों दी गई?
5. किस प्रकार जनसंचार, जनसंपर्क के दूसरें स्त्रोतों से भिन्न है?
6. टेलीविजन के माध्यम में जो परिवर्तन हो रहे हैं उनकी चर्चा करें।

## 6 अंक प्रश्न

1. औपनिवेशिक काल से आधुनिक काल तक प्रिन्ट मीडिया में होने वाली परिवर्तनों का उल्लेख करें ब्रिटिश सरकार इन पर क्यों निगरानी चाहती थी?
2. आम व्यक्ति के अखबार से लेकर, इन्टरनेट तक का प्रयोग किस प्रकार जन जीवन को प्रभावित करता है। इसी संदर्भ में काल सैन्टरों की स्थापना ने किस प्रकार युवाओं को प्रभावित किया है तथा रात्रि के समय किस प्रकार नई गतिविधियाँ बढ़ी हैं। गुडगाँव तथा बैंगलोर आदि में किस प्रकार मुख्य परिवर्तन हो रहे हैं?
3. क्या एक जनसंचार के माध्यम के रूप में रेडियो खत्म हो रहा है? उदारीकरण के बाद भी भारत में एफ.एम. स्टेशनों के सामर्थ्य की चर्चा करें।

## पाठ 8

### सामाजिक आंदोलन

#### मुख्य बिन्दु

1. **सामाजिक आन्दोलन-** ये समाज को एक आकार देते हैं। 19वीं सदी में अनेक सुधार आन्दोलन हुए जैसे- जाति व्यवस्था के विरुद्ध, भेदभाव के विरुद्ध और राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन आदि।

#### 2. सामाजिक आन्दोलन के लक्षण

- लम्बे समय तक निरंतर सामूहिक गतिविधियों की आवश्यकता।
- सामाजिक आन्दोलन प्रायः किस जनहित के मामले में परिवर्तन के लिए होते हैं। जैसे आदिवासियों का जंगल पर अधिकार, विस्थापित लोगों का पुनर्वास।
- सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए।
- सामाजिक आन्दोलन के विरोध में प्रतिरोधी में आन्दोलन जन्म लेते हैं। जैसे सती प्रथा के विरुद्ध आन्दोलन के खिलाफ धर्म सभा बनी, जिसने अंग्रेजों से सती प्रथा खत्म करकरे के विरुद्ध कानून बनाने की मांग की।
- सामाजिक आन्दोलन विरोध के विभिन्न साधन विकसित करते हैं-मोमबत्ती या मशाल जुलूस, नुक्कड़ नाटक गीत।
- **सामाजिक आन्दोलन**

(अ) निरंतरता

(ब) संस्कृतिकरण, पश्चिमीकरण आदि

(अ) विशिष्ट उद्देश्य

(ब) लोगों का निरन्तर सामाजिक प्रयास सती प्रथा विरोधी आंदोलन आदि

#### **4. सामाजिक आन्दोलन के सिद्धान्त-**

- **सापेक्षिक वचन का सिद्धान्त**

(1) सामाजिक संघर्ष तब उत्पन्न होता है जब सामाजिक समूह अपनी स्थिति खराब समझता है।

(2) मनोवैज्ञानिक कारण जैसे क्षोभ व रोष

- **सीमाएँ-सामूहिक गतिविधि के लिए वंचन का आभास आवश्यक है लेकिन यह एक पर्याप्त कारण नहीं है।**

(ब) दि लोजिक आफ कलैक्टिव एक्शन- सामाजिक आन्दोलन में स्वयं का हित चाहने वाले विवेकी व्यक्तिगत अभिनेताओं का पूर्ण योग है। व्यक्ति कुछ प्राप्त करने के लिए इनमें शामिल होगा उसे इसमें जोखिम भी कम हो और लाभ अधिक।

**सीमाएँ :** सामाजिक आन्दोलन की सफलता संसाधनों व योग्यताओं पर निर्भर करती है।

(स) संसाधन गतिशीलता का सिद्धान्त- सामाजिक आन्दोलन में नेतृत्व, संगठनात्मक क्षमता तथा संचार सुविधाओं को एकत्र करना इसकी सफलता का जरिया है।

**सीमाएँ :** प्राप्त संसाधनों की सीमा में वर्चित नहीं, नए प्रतीक व पहचान की रचना भी कर सकता है।

#### **5. सामाजिक आन्दोलनों के प्रकार**

(अ) **प्रतिदानात्मक आन्दोलन-** व्यक्तियों की चेतना तथा गतिधियों में परिवर्तन लाते हैं। जैसे केरल के इजहवा समुदाय के लोगों ने नारायण गुरु के नेतृत्व में अपनी सामाजिक प्रथाओं को बदला।

(ब) **सुधारवादी आन्दोलन-** सामाजिक तथा राजनीतिक विन्यास को धीमे व प्रगतिशील चरणों द्वारा बदलना। जैसे- 1960 के दशक में भाषा के आधार पर राज्यों का पुनर्गठन व सूचना का अधिकार।

(स) **क्रांतिकारी आन्दोलन-** सामाजिक संबंधों में आमूल परिवर्तन करना तथा राजसत्ता पर अधिकार करना। जैसे- बोल्शेविक क्रांति जिसमें रूस में जार को अपदस्थ किया।

## **6. सामाजिक आंदोलन के अन्य प्रकार**

- पुराना सामाजिक आंदोलन (आजादी पूर्व)- नारी आंदोलन, सती प्रथा के विरुद्ध आंदोलन, बाल विवाह, जाति प्रथा के विरुद्ध आंदोलन। यह राजनीतिक दायरे में होते थे।
- नया सामाजिक आन्दोलन- जीवन स्तर को बदलने व शुद्ध पर्यावरण के लिए。
  - बिना राजनीतिक दायरे के होते हैं तथा राज्य पर दबाव डालते हैं।
  - अन्तर्राष्ट्रीय हैं

## **7. परिस्थितिकीय आन्दोलन**

उदाहरण- चिपको आंदोलन

चिपको आन्दोलन- उंत्तराचल में वनों को काटने से रोकने तथा पर्यावरण का बचाव करने के लिए स्त्रियां पेड़ों से चिपक गई और पेड़ काटने नहीं दिये। इस प्रकार यह आन्दोलन आर्थिक, परिस्थितिकीय व राजनीतिक बन गया।

## **8. वर्ग आधारित आन्दोलन**

- किसान आन्दोलन- 1858-1914 के बीव स्थानीयता, विभाजन व विभिन्न शिकायतों से सीमित होने की ओर प्रवृत्त हुआ。
  - 1859-62 नील की खेती के विरोद्ध में।
  - 1857- दक्षिण का विद्रोह जो साहूकारी के विरोधा में।
  - 1928- लगान विरोद्धी आंदोलन
  - 1920- ब्रिटिश सरकार की वन नीतियों के विरुद्ध आंदोलन
  - 1920-1940 आल इंडिया किसान सभा
- स्वतंत्रता के समय दो मुख्य किसान आंदोलन हुए
  - (i) 1946-1947 तिभागा आन्दोलन- यह संघर्ष पट्टेदारी के लिए हुआ।
  - (ii) 1946-1951 तेलंगाना आन्दोलन- यह हैदराबाद की सांमती दशाओं के विरुद्ध था।
- स्वतंत्रता के बाद दो बड़े सामाजिक आंदोलन हुए

- (i) 1967 नक्सली आन्दोलन- यह आंदोलन भूमि को लेकर हुआ था।
- (ii) नये किसानों का आन्दोलन
- नया किसान आन्दोलन
  - 1970 में पंजाब व तमिलनाडु में प्रारंभ हुआ।
  - दल रहित थे।
  - क्षेत्रीय आधार पर संगठित थे।
  - कृषक के स्थान पर किसान जुड़े थे (किसान उन्हें कहा जाता है जो कि वस्तुओं के उत्पादन और खरीद दोनों में बाजार से जुड़े होते हैं।)
  - राज्य विरोधी व नगर विरोधी थे।
  - लाभ प्रद कीमतें, कृषि निवेश की कीमतें, टैक्स व उधार की वापसी की माँगे थीं।
  - सड़क व रेल मार्ग को बंद किया गया था।
  - महिला मुद्राओं को शामिल किया गया।
- कामगारों का आन्दोलन
  - 1860 में कारखानों में उत्पादन का कार्य शुरू हुआ। कच्चा माल भारत से ले जाकर, इंग्लैण्ड में निर्माण किया जाता था।
  - बाद में ऐसे कारखानों को मद्रास, बंबई और कलकत्ता स्थापित किया गया।
  - कामगारों ने अपनी कार्य दशाओं के लिए विरोध किया।
  - 1918 में सर्वप्रथम मजदूर संघ की स्थापना हुई।
  - 1920 में एटक की स्थापना हुई (ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस-एटक)
  - कार्य के घंटों की अवधि को घटाकर 10 घंटे कर दिया गया।
  - 1926 में मजदूर संघ अधिनियम पारित हुआ जिसने मजदूर संघों के पंजीकरण कि प्रावधान किया, और कुछ नियम बनाए।

## 9. जाति आधारित आन्दोलन

- (अ) दलित आन्दोलन- दलित शब्द मराठी, हिन्दी, गुजराती व अन्य भाषाओं के रूप में पहचान प्राप्त करने का संघर्ष है। दलित समानता, आत्मसम्मान, अस्पृश्यता उन्मूलन के लिए संघर्ष कर रहे हैं।
- मध्य प्रदेश में चमारों का सतनामी आन्दोलन
  - पजांब में आदिधर्म आन्दोलन
  - महाराष्ट्र में महार आन्दोलन
  - आगरा में जाटवों की गतिशीलता
  - दक्षिण भारत में ब्रह्ममण विरोधी आन्दोलन
- (ब) पिछड़े वर्ग का आन्दोलन
- पिछड़े जातियों, वर्गों का राजनीतिक इकाई के रूप में उदय
  - औपनिवेशिक काल में राज्य अपनी संरक्षित का वितरण जाति आधारित करते थे।
  - लोग सामाजिक तथा राजनीतिक पहचान के लिए जाति में रहते हैं।
  - आधुनिक काल में जाति अपनी कर्मकांडों विषय वस्तु छोड़ने लगी तथा राजनीति गतिशीलता के पंथ निरपेक्ष हो गई है।
- (स) उच्चजाति का आन्दोलन- दलित व पिछड़े के बढ़ते प्रभाव से उच्च जातियों ने उपेक्षित महसूस किया।
10. **जन जातीय आन्दोलन-** जनजातीय आन्दोलनों में से कई मध्य भारत में स्थित है। जैसे- छोटा नागपुर व संथाल परगना में स्थित संथाल, हो, मुंडा, ओराव, मीणा आदि।
- झारखण्ड
    - बिहार से अलग होकर 2000 में झारखण्ड राज्य बना।
    - आन्दोलन की शुरूआत विरसा मुण्डा ने की थी।
    - ईसाई मिशनरी ने साक्षरता का अभियान चलाया।
    - दिक्कुओं- (व्यापारी व महाजन) के प्रति घृणा।

- आदिवासियों को अलग-थलग किया जाना।
- आन्दोलन के मुख्यबिन्दु व मुद्दे
  - भूमि का अधिग्रहण
  - ऋणों की वसूली
  - वनों का राष्ट्रीकरण
  - पुनर्वास न किया जाना।
- पूर्वोत्तर राज्यों के आन्दोलन- वन भूमि से लोगों का विस्थापन तथा पारिस्थितिकीय मुद्दे।

### 11. महिलाओं का आन्दोलन

- 1970 के दशक में भारत में महिला आन्दोलन का नवीनीकरण हुआ।
- महिला आन्दोलन स्वयं थे तथा राजनीतिक दलों से स्वतंत्र थे।
- महिलाओं के प्रति हिंसा के बारे में अभियान चलाए।
- स्कूल के प्रार्थना पत्र में माता-पिता दोनों का नाम शामिल।
- यौन उत्पीड़न व दहेज के विरोध में।
- कुछ महिला संगठनों के नाम- विंस इंडिया एसोसिएशन (1971), आल इंडिया विमंश कान्फ्रेंस (1926)

## 2 अंक प्रश्न

1. सामाजिक आन्दोलन क्या होते हैं?
2. सामाजिक परिवर्तन व सामाजिक आन्दोलन में क्या अन्तर है?
3. किसान आन्दोलनों के दो उदाहरण लिखो।
4. एटक को समझाए।
5. जाति आधारित चार आन्दोलनों के उदाहरण लिखिए।
6. चार जन जातियों के नाम लिखें।

- दो महिला संगठनों के नाम बताइए।

#### 4 अंक प्रश्न

- सुधारवादी व क्रांतिकारी आन्दोलनों में अन्तर बताइए।
- प्रतिदानात्मक व सुधारवादी आन्दोलन आन्दोलन में अन्तर बताइए।
- पारिस्थितिकीय आन्दोलन का वर्णन कीजिए।
- नए किसान आन्दोलन पर नोट लिखिए।
- उस मुद्रे के विषय में बताइए जिसके लिए झारखंड के नेताओं ने आन्दोलन किया।
- महिलाओं ने आधुनिक युग में विभिन्न मुद्रों को उठाया है? इनका वर्णन कीजिए।

#### 6 अंक प्रश्न

- नए सामाजिक आन्दोलन व पुराने सामाजिक आन्दोलन में अन्तर स्पष्ट कीजिए।
- सामाजिक आन्दोलनों की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
- सामाजिक आन्दोलनों के सिद्धान्तों के विषय में बताइये
- किसान आन्दोलन व नए किसान आन्दोलन में अन्तर लिखिए।

---

## प्रश्न पत्र हल करने के लिये याद करने योग्य महत्वपूर्ण बिन्दु

---

1. प्रश्न पत्र को अच्छी तरह से पढ़ें।
2. प्रश्न पत्र में दिये गये प्रश्नों को हमेशा क्रमानुसार करें।
3. प्रश्न पत्र को हल करते समय प्रश्नों की संख्या नं० को उत्तर पुस्तिका में सही लिखें।
4. हमेशा महत्वपूर्ण बिन्दुओं को रेखांकित करें।
5. 2 अंक वाले प्रश्नों के उत्तर देने में शब्दों को सीमित रखें (कोई दो महत्वपूर्ण विरुद्ध)
6. 4 अंक वाले प्रश्नों के उत्तर देने में कोई 4 महत्वपूर्ण बिन्दु विस्तार से लिखें।
7. 6 अंक वाले प्रश्नों के उत्तर देने में कोई 6 महत्वपूर्ण बिन्दु विस्तार से लिखें।
8. 6 अंक वाले अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़ें। उत्तर देने के लिए अनुच्छेद की सहायता लेते हुए अपनी समझ से लिखें।
9. प्रत्येक उत्तर के बीच में अन्तर रखें।
10. अपनी लिखाई पर विशेष ध्यान दें।

### समाजशास्त्र में अच्छे अंक हासिल करने हेतु महत्वपूर्ण बिन्दु:-

1. N C E R T की दोनों पुस्तकों तथा सहायक सामग्री का ही इस्तेमाल करें।
2. N C E R T में दिये गये रंगीन व ग्रे बाक्स को भी ध्यानपूर्वक पढ़ें।
  - 6 अंक वाला अनुच्छेद अक्सर इन बाक्स से पूछा जाता है।
  - समाजशास्त्र विषय में अपना ज्ञान बढ़ाने के लिये भी इन बाक्स को अवश्य पढ़ें।
3. N C E R T में दिये अभ्यास को भी अवश्य हल करें।
4. CBSE के सैम्प्ल पेपर्स तथा पिछले 5 सालों के प्रश्न पत्रों को अवश्य हल करें।
5. CBSE बोर्ड परीक्षा से पहले कोई एक प्रश्नपत्र अवश्य हल करें। ताकि समय सीमा का आपको ज्ञान हो जाये।

---

## समाजशास्त्र

---

मार्च- 2013

**प्रश्न-1.** आधुनिकीकरण का क्या तात्पर्य है?

**उत्तर-** पुरानी परम्पराओं को त्याग कर नये विचारों को ग्रहण करना। यह प्रक्रिया परिवर्तन की प्रक्रिया पर आधारित होती है तथा जिसमें अच्छे-बुरे, नई-पुरानी इत्यादि भावनाओं का आभास होता है। धर्मनिरपेक्षता, शिक्षा, नगरीकरण, नये अधिकार इत्यादि आधुनिकीकरण के लिये आवश्यक है। आधुनिकीकरण व्यक्ति के विचार, व्यवहार के ढंग, जीवन के सभी पहलू पर प्रभाव डालता है।

**प्रश्न-2.** प्रबंधक के आधारभूत कार्य क्या है?

**उत्तर-**

1. मजदूरों पर नियंत्रण रखना
2. अधिक से अधिक काम लेना
3. निर्धारित कार्यों की आपूर्ति करना

**प्रश्न-3.** ‘इफोटेनमेंट शब्द का क्या अर्थ है?

**उत्तर-** सूचना तथा मनोरंजन में तालमेल रखना जिससे विशेषकर समाचार पत्र, टेलीविजन तथा रेडियो आदि से दर्शक जुड़े रहे।

**प्रश्न-4.** प्रतिष्ठा का प्रतीक क्या होता है?

**उत्तर-** उपभोक्ता अपने खाने-पीने, पहनने, रहने आदि के लिये किस कोटि (तरह) की वस्तुएं खरीदता है अर्थात् लोगों द्वारा प्रयोग की जाने वाली वस्तुओं के संबंधों को प्रतिष्ठा का प्रतीक कहते हैं। लोगों का पहनावा, खानपान, निवास, कार आदि उनके प्रस्थिति चिन्ह हैं।

**प्रश्न-5.** बागान के मालिक कैसे रहा करते थे?

**उत्तर-** 1. बागान के मालिक सभी सम्भावित सुविधाओं के साथ शाही जीवन व्यतीत करते थे।

2. बागानों के मालिक विशाल बंगलों में रहते थे जो मजबूत लकड़ी के पट्टों से घिरे होते थे ताकि जंगली जानवर उनमें प्रवेश न कर सके।
3. बागानों के मालिक बावर्चियों, मालियों तथा अन्य काम-काज करने वालों को प्रशिक्षण दिया करते थे ताकि वह अच्छे ढंग से उनकी सेवा कर सकें।

**प्रश्न-6.** असंस्कृतिकरण शब्द का अर्थ लिखिए।

**उत्तर-** असंस्कृतिकरण से अभिप्राय यह है कि जब उच्च जाति के लोग निम्न जातियों की जीवन पद्धति, अनुष्ठान आदर्श मूल्य तथा विचारधाराओं का अनुकरण करते हैं।

**प्रश्न-7.** कार्ल मार्क्स के अनुसार विसबंधन (एलिएनेशन) स्थिति क्या है?

**उत्तर-** कार्ल मार्क्स के अनुसार एलिएनेशन एक मानसिक दशा है जो अधिकतर अपने कार्यों का अंतिम रूप नहीं देख पाते क्योंकि उन्हें उत्पादन के छोटे से पुर्जे को बनाना होता है।

- लोग अपने कार्यों से प्रसन्न नहीं होते।

- व्यक्ति अपने कार्य तथा समूह से अलगाव महसूस करता है।

**प्रश्न-8.** नेहरू ने संचार (मीडिया) को लोकतंत्र का पहरेदार क्यों कहा है?

**उत्तर-** मीडिया से यह आशा की गई है कि वह लोगों के हृदय में आत्मनिर्भरता और राष्ट्रीय विकास की भावना भरे। मीडिया अस्पृश्यता, बाल विवाह, दहेज प्रथा जैसी सामाजिक कुरीतियों तथा जादू-टोना जैसे अंधविश्वासों के विरुद्ध लड़ने के लिये प्रोत्साहित करती है।

**प्रश्न-9.** पंचायतों की आमदनी के प्रमुख स्रोत क्या हैं?

**उत्तर-**

1. सम्पत्ति, व्यवसाय, पशु वाहन आदि पर कर लगाना।
2. चुंगी कर तथा भू-राजस्व वसूल करना।
3. जिला पंचायत द्वारा अनुदान प्राप्त होता है।

**प्रश्न-10.** विरोध प्रदर्शन के विशेष तरीके क्या हैं?

**उत्तर-**

1. मोमबत्ती या मशाल, जुलूस, काले कपड़े का प्रयोग, नुक्कड़ नाटक, गीत, कविताएँ आदि।
2. स्वतंत्रता आन्दोलन में अंहिसा तथा चरखे के प्रयोग जैसे नये तरीकों को अपनाया।

**प्रश्न-11.** उन्नीसवी शताब्दी में समाज सुधारकों की प्रमुख चिताएँ क्या थीं?

**उत्तर-** सामाजिक कुरीतियों को दूर करना जैसे सति प्रथा बाल विवाह, विधवा पुर्णविवाह, जातिय भेदभाव, स्त्रियों के लिये शिक्षा आदि।

**प्रश्न-12.** उदारीकरण नीति का क्या आशय हैं?

**उत्तर-**

1. निजीकरण को बढ़ावा देना (सरकारी संस्थानों को प्राइवेट कम्पनियों को बेच देना)
2. सरकारी नियंत्रण में ढील देना।
3. विदेशी कम्पनियों को भारत में उद्योग स्थापित करने के लिये सहुलियत देना।
4. बहुत सारी विदेशी वस्तुओं का आसानी से उपलब्ध होना।
5. अंतराष्ट्रीय संस्थान जैसे TMF तथा WTO को महत्व दिया गया उनसे ऋण लेना आसान हो गया।

**प्रश्न-13.** किन्हीं दो INGO's के नाम लिखिए।

**उत्तर-** दि रेडक्रास, एमस्टी इंटरनेशनल, हैल्पएज, ग्रीनपीस, मेडिसिंस सैन्स फ्रंटियर्स आदि।

**प्रश्न-14.** जनसंचार किस प्रकार हमारे दैनिक जीवन का एक अंग हैं?

**उत्तर-**

1. समाचार पत्र पढ़ना
2. टेलिविजन देखना
3. मोबाइल फोन पर मिस्ड काल चैक करना।
4. रेडियो सुनना
5. इंटरनेट

**प्रश्न-15.** वे क्या मुद्दे थे जिनके विरुद्ध झारखंड आंदोलन के नेता उत्तेजित थे?

**उत्तर-**

1. सिंचाई परियोजनाओं तथा गोलीबारी क्षेत्र के लिये भूमि का अधिग्रहण
2. रुके हुए सर्वेक्षण तथा पुर्नवास की कार्यवाही, बंद कर दिये गये कैंप आदि।
3. ऋणों, किराए तथा सरकारी कर्जों का संग्रह जिसका प्रतिकार किया गया।
4. वन उत्पादन का राष्ट्रीयकरण जिन्होंने उसका बहिष्कार किया।

**प्रश्न-16.** सांस्कृतिक विभिन्नता का क्या आशय है? राज्य सांस्कृतिक विभिन्नता के बारे में प्रायः शंकालु क्यों होते हैं?

**उत्तर-** सांस्कृतिक विभिन्नता से तात्पर्य है कि भारत में अनेक प्रकार के सामाजिक समूह तथा समुदाय निवास करते हैं।

- यह समुदाय सांस्कृतिक चिन्हों जैसे- भाषा, धर्म, जाति या प्रजाति द्वारा परिभाषित किये जाते हैं।
- सांस्कृतिक विभिन्नता के कारण देश में बहुत सी समस्याएं भी उत्पन्न होती हैं जैसे कि जातिवाद, भाषावाद, क्षेत्रवाद, साम्प्रदायिकता, आंतकवाद तथा जातिय दंगें इत्यादि। इससे देश का माहौल काफी खराब हो जाता है। इस कारण ही राज्य अक्सर सांस्कृतिक विभिन्नता के बारे में शंकालकु होते हैं।

**प्रश्न-17.** ग्रामीण लोगों को उनकी आवाज देने में 73वाँ संशोधन बहुत महत्वपूर्ण है स्पष्ट कीजिए?

**उत्तर-** ग्रामीण लोगों को उनकी आवाज देने में 73वाँ संशोधन बहुत महत्वपूर्ण है इसमें निम्नलिखित बातें सामने आई हैं।

1. इस संशोधन में 20 लाख से अधिक जनसंख्या वाले प्रत्येक राज्य में त्रिस्तरीय पंचायत होगी।
2. प्रत्येक पाँच वर्षों में इसके सदस्यों का चुनाव होगा।
3. इसमें अनुसूचित जाति तथा जनजाति के लिये निश्चित स्थान आरक्षित किये गये।
4. महिलाओं के लिए 33-% सीटें आरक्षित की गई जिनमें 17 प्रतिशत सीटें अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति की थी।
5. पूरे जिले में विकास के लिये योजना समिति गठित की गई।

6. गाँधी जी गाँव को स्वयं में आत्मनिर्भर इकाई मानते थे वह ग्राम राज्यों को आदर्श मानते थे। इस संशोधन से ग्रामीणों की आवाज लोकतंत्र में सार्थक हुई है।

**प्रश्न-18.** उपनिवेशवाद के दौरान राष्ट्र राज्य राजनैतिक स्वरूप बन गये स्पष्ट कीजिए।

**उत्तर-**

1. सरकार की एक निश्चित सीमा में अपनी प्रभुसत्ता थी।
2. लोगों को एकल राज्य की नागरिकता प्राप्त है।
3. नेताओं ने घोषणा की कि स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है।
4. राष्ट्र- राज्य राष्ट्रीयता की उदय के साथ नजदीकी से जुड़े हुए है।

**प्रश्न-19.** पारराष्ट्रीय निगमों की विशेषताएं लिखिये।

**उत्तर-**

1. पारराष्ट्रीय निगम ऐसी कम्पनियां होती हैं जो एक से अधिक देशों में अपना माल उत्पादन करती हैं।
2. ये अपेक्षाकृत छोटी फर्म भी हो सकती हैं तथा बड़े विशाल अंतरराष्ट्रीय भी हो सकते हैं।
3. कुछ प्रसिद्ध पारराष्ट्रीय निगमों के नाम इस प्रकार हैं जैसे कोका कोला, कोलगेट, पामोलिव, सैमसंग, कोडक आदि।

**प्रश्न-20.** बाजारों पर समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण आर्थिक दृष्टिकोण से किस प्रकार भिन्न है?

**उत्तर-**

1. साप्ताहिक बाजार सामाजिक तथा आर्थिक संगठनों की एक केन्द्रीय विशेषता है।
2. गाँव के लोग अपनी खेती की उपज या किसी उत्पादन को बेचने आते हैं। अपने उत्पादों के बदले में आवश्यक वस्तुएं जैसे खाद्य पदार्थ, बर्तन तथा अन्य उपभोग की वस्तुएं खरीदते हैं।
3. लोगों के साथ साहूकार, ज्योतिषी, मस्खरे एवं तमाम तरह के विशेषज्ञ अपनी

सेवाओं तरीं वस्तुओं के साथ आते हैं।

4. अधिकांश लोग अपने मित्रों रिश्तेदारों से मिलने आते हैं।
5. कुछ लोग यहां अपने लड़के-लड़कियों के रिश्ते तथा विवाह सम्बन्धों पर बातचीत करने तथा गप्पे मारने आते हैं।

### अथवा

**प्रश्न-20.** भूमण्डलीकरण लोबल के अन्तर्गत सम्मिलित कुछ प्रक्रियाएँ क्या-क्या हैं?

**उत्तर-**

1. भूमण्डलीकरण का प्रभाव न केवल आर्थिक क्षेत्र में अपितु सांस्कृतिक तथा राजनैतिक क्षेत्र में भी देखने को मिल रहा है।
2. इस प्रक्रिया में अन्य देशों के उत्पादक अपना सामान और सेवाएं भारत में बेच सकते हैं और इसी प्रकार भारत भी अपना सामान व सेवाएं अन्य देशों को दे सकता है।
3. भूमण्डलीकरण विदेशी कम्पनियों को भारत में पूँजी लगाने तथा निर्मित माल को विदेशों में बेचने की अनुमति देता है।
4. बाजार में आया परिवर्तन पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था में परिवर्तन लाता है। जिस प्रकार अमेरिका के बाजार में गिरावट यूरोप और भारतीय बाजारों में भी गिरावट का कारण बनती है।

**प्रश्न-21.** साम्प्रदायिकता क्या है? यह तनाव हिंसा का बार-बार होने वाला स्त्रोत क्यों है? उपयुक्त उदाहरण देते हुए स्पष्ट कीजिए।

**उत्तर- साम्प्रदायिकता-** साम्प्रदायिकता का अर्थ है धार्मिक पहचान पर आधारित उग्रवाद।

1. साम्प्रदायिक दंगों के दौरान, लोग अपने-अपने समुदायों के पहचानहीन सदस्य बन जाते हैं।
2. व्यक्ति अपने अभिमान की पूर्ति के लिये अन्य समुदायों को मार डालने, बलात्कार करने तथा लूटपाट को तैयार हो जाते हैं।

3. कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है जो किसी न किसी प्रकार की सांप्रदायिक हिंसा से पूरी तरह मुक्त रहा हो।
4. प्रत्येक धार्मिक समुदाय ने कम या ज्यादा मात्रा में हिंसा की मार सही है।

**उदाहरण-** दिल्ली में 1984 में सिक्ख विरोधी दंगे कांग्रेस के राज में हुए।

सन् 2002 में गुजरात में मुसलमान विरोधी हिंसा जनता पार्टी के शासन में हुई।

**प्रश्न-22.** अल्पसंख्यक समूह किसे कहते हैं? अल्पसंख्यकों को राज्य से सरक्षण की आवश्यकता क्यों है?

**उत्तर- अल्पसंख्यक-** ऐसा समूह जो धर्म, भाषा, जाति की दृष्टि से बहुसंख्यक समुदाय से भिन्न तथा संख्या में कम हो तथा समाज में इन लोगों का प्रतिनिधित्व कम होता है जैसे मुस्लिम, सिक्ख, बौद्ध, जैन आदि।

अल्पसंख्यक समुदायों को अपनी सुरक्षा के लिये राज्य से सरक्षण की आवश्यकता होती है क्योंकि-

1. जनसांख्यकीय बहुलता का दबदबा
2. मुख्य पहचान छोड़ने के लिये दबाव बनाना

### अथवा

**प्रश्न-22.** स्वतंत्रता के बाद सरकार द्वारा लागू किये गये प्रमुख भूमि सुधार कानून क्यथे? स्पष्ट कीजिए।

**उत्तर-** स्वतंत्रता के बाद भारत में निम्न भूमि सुधार कानून निम्न है।

1. जमींदारी प्रथा का समापन
2. भूमि हरबन्दी अधिनियम
3. पटेलारी का उन्मूलन या नियंत्रण
4. भूमि स्वामित्व का रिकार्ड (विस्तार से लिखें)

**प्रश्न-23.** सामाजिक स्तरीकरण की विशेषताएँ क्या हैं? स्पष्ट कीजिए।

**उत्तर-**

1. सामाजिक स्तरीकरण समाज में हमेशा पाया जाता है यह प्राचीन काल में भी था आज भी है ओर आगे भी रहेगा।

2. सामाजिक स्तरीकरण पीढ़ी दर पीढ़ी चलता है।
3. सामाजिक स्तरीकरण हर समाज में पाया जाता है हर देश में सामाजिक स्तरीकरण के स्वरूप अलग-अलग हैं। जैसे भारत में जाति प्रथा के आधार पर, पश्चिमी देशों में वर्ग व्यवस्था के आधार पर स्तरीकरण पाया जाता है (विस्तार से लिखें)

**प्रश्न- 24.** आज जनजाति के अस्मिता के दावे के पीछे क्या कारक है?

**उत्तर-**

1. अनेक जनजातीय पहचान गैर जनजातीय जगत की दुर्दगमनीय शक्ति का प्रतिरोध एवं विरोध करने के विचारों पर अपना ध्यान केंद्रित कर रही है।
2. जातीय समुदायों में धीरे-धीरे एक शिक्षित मध्य वर्ग का उद्भव हुआ।
3. पहले सशस्त्र विद्रोह फिर इनके दमन के लिये उठाये गये कठोर कदम।
4. मध्यमवर्गीय आदिवासी की पहचान, गरीब और अशिक्षित आदिवासियों से भिन्न हो सकती है।
5. एक लम्बे संघर्ष के बाद सफलताओं का सकारात्मक प्रभाव, पहले से चली आ रही समस्याओं का कारण तिरोहित हो गया।

## अथवा

**प्रश्न-24.** वे कुछ नियम क्या है? जिन्हे जाति प्रथा आरोपित करती है?

**उत्तर-**

1. जाति, जन्म से निर्धारित होती है।
2. जाति में विवाह सम्बन्धी कठोर नियम शामिल होते हैं।
3. जातियों में आपसी उपविभाजन भी होता है
4. पारस्परिक कतौर पर जातियाँ व्यवसाय से जुड़ी होती हैं।
5. भोजन तथा सामाजिक मेलजोल पर प्रतिबंध
6. जाति में श्रेणी एवं प्रस्थिति के एक अधिक्रम में संयोजित अनेक जातियों की एक व्यवस्था शामिल है। (विस्तारपूर्वक व्याख्या )

**प्रश्न-25.** निम्नलिखित अनुच्छेद पढ़िये और पूछे गये प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

भारत की कुल प्रजनन दर (TFR) अथार्ट प्रत्येक महिला के प्रजनन योग्य वर्षों के दौरान जन्म लेने वाले बच्चों की औसत संख्या में पिछले दशक में  $19 \times$  की गिरावट आई है। बड़े राज्यों में इस पिछले दशक की अवधि में कुल प्रजनन दर में आई गिरावट का प्रतिशत पंजाब में  $28 \times$  से लेकर केरल में  $5.6 \times$  तक था। 2000-2010 में महाराष्ट्र में  $26.9 \times$  की दूसरी सबसे बड़ी गिरावट देखी गई ओर इसके बाद हरियाणा और आन्ध्रप्रदेश ( $25 \times 2$ ) उत्तर प्रदेश ( $23 \times$ ) राजस्थान ( $22 \times$ ), हिमालय प्रदेश और पश्चिमी बंगाल ( $21 \times$ ) रहे। भारत के महापंजीकरण (रजिस्ट्रार जनरल) के द्वारा अंतिम रूप दिये गये तथा शनिवार को केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय को भेजे गये। नवीनतम प्रतिदर्श पंजनय तंत्र (सेंपल रजिस्ट्रेशन सिस्टम) 2012 के आँकड़े बताते हैं कि भारत का TFR 3.2 के मुकाबले 2.5 पर स्थित है, TFR का निर्धारित करने में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका पाई गई।

राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 200 के अनुसार भारत को 2010 तक प्रजनन दर 2.1 के स्थापन तक पहुँच जाना चाहिये था तथा 2045 तक 145 करोड़ पर जनसंख्या स्थिरता को प्राप्त कर लेना चाहिये। जब जनसंख्या का आकार अपरिवर्तित रहे तो उस जनसंख्या स्थिरता कहा जाता है। इसे शून्य जनसंख्या वृद्धि की अवस्था भी कहा जाता है। फिर भी अब भारत 2060 तक 165 करोड़ पर जनसंख्या स्थिरता TFR 2.1 पहुँच जाने की आशा करता है। केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री गुलाम नबी आदान ने हाल में ही कहा था “हमें TFR में 0.1 निरंतर गिरावट देख रहे हैं। जो 1960 के दशक से  $42 \times$  नीचे आ गई है हमें 0.1 की गिरावट प्राप्त हो सकती है जो अभी 2-6 है।

1. शून्य जनसंख्या वृद्धि से क्या तात्पर्य है?
2. प्रजनन दर का क्या अर्थ है? दो राज्यों के नाम लिखिए जिनमें 2000-2010 में TFR में सर्वाधिक प्रतिशत गिरावट देखी गई है?

**उत्तर-1.** सही उत्तर

**उत्तर-2.** सही उत्तर

## सीनियर स्कूल सर्टिफिकेट परीक्षा

### मार्च- 2014

### **समाजशास्त्र**

**प्रश्न-1.** धर्मनिरपेक्षता के बारे में पश्चिमी और भारतीय विचार का अन्तर स्पष्ट कीजिए।

**उत्तर-**

1. पश्चिमी विचार में धर्म और राज्य अलग-अलग और भारतीय विचार में सभी धर्मों को एक समान समझना।
2. पश्चिमी विचार में राज्य सभी धर्मों से दूरी बनाये रखेगा परन्तु भारतीय विचार में राज्य सभी धर्मों को बराबर का सम्मान देगी।

**प्रश्न-2.** विसंस्कृतिकरण (डि-संस्कृतिटाइजेशन) का अर्थ बताइये?

**उत्तर-**

1. जहाँ गैर-संस्कृतिकरण जातियाँ प्रभुत्वशाली थी। वहाँ की संस्कृति को निम्न जातियों ने प्रभावित किया। श्री निवास ने इसे विसंस्कृतिकरण का नाम दिया।
2. जब एक प्रभावी समूह अपनी संस्कृति का प्रभाव अधिनस्थ समूह पर इस प्रकार डालता है कि अधिनस्थ समूह का अस्तित्व प्रभावी समूह की संस्कृति में घुल मिल जाता है तो यह प्रक्रिया वि-संस्कृतिकरण कहलाती है।

**प्रश्न-3.** पंचायतों के आमदनी के साधन क्या हैं?

**उत्तर-**

1. सम्पत्ति, व्यवसाय, पशुवाहन आदि पर कर लगाना।
2. चुंगी कर तथा भू-राजस्व वसूल करना।
3. जिला पंचायत द्वारा अनुदान प्राप्त होता है।

**प्रश्न-4.** कृषि भूमि संरचना (एग्रेजियन) का क्या तात्पर्य है?

**उत्तर-**

1. भूमि स्वामित्व के विभाजन अथवा सरंचना के संबंध के लिये अक्सर कृषक सरंचना शब्द का प्रयोग किया जाता है।
2. भू स्वामित्व का वर्गीकरण मध्यम और बड़ी जमीनों के मालिक के रूप में तथा कृषि मजदूर और काश्तकार (पट्टेदारी) के रूप में किया जाता है।

**प्रश्न-5.** सामाजिक परिवर्तन तथा सामाजिक आन्दोलनों में अन्तर स्पष्ट कीजिए?

**उत्तर-** सामाजिक परिवर्तन - सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया का सम्बन्ध सामाजिक संबंधों तथा सामाजिक व्यवस्था में होने वाले परिवर्तनों से है।

**सामाजिक आन्दोलन-** सामाजिक आन्दोलन प्रायः सामाजिक परिवर्तन लाने के लिये होते हैं। ये समाज को आकार देते हैं। जैसे जाति व्यवस्था के विरुद्ध, सती प्रथा के विरुद्ध भेदभाव के विरुद्ध आदि।

**प्रश्न-6.** 'जनजाति' शब्द का क्या अर्थ है?

**उत्तर-** वे पिछड़े लोग जो हमारी सभ्यता से दूर, जंगलों, पहाड़ों आदि में रहते हैं। जिनकी अपनी संस्कृति, रहन-सहन, खान-पान अलग होता है। ये अपनी संस्कृति के अनुसार अविकसित जीवन व्यतीत करते हैं।

**प्रश्न-7.** 'प्रतिष्ठा' का प्रतीक की व्याख्या कीजिए?

**उत्तर-** लोगों द्वारा प्रयोग की जाने वाली वस्तुओं के सम्बन्धों को प्रतिष्ठा का प्रतीक कहते हैं। लोगों का पहनावा, खानपान, रहन-सहन आदि उनके प्रस्थिति चिन्ह हैं।

**प्रश्न-8.** उपनिवेशवाद क्या है? एक उदाहरण दीजिए।

**उत्तर-** शक्तिशाली एवं उन्नत देशों द्वारा कमजोर और पिछड़े हुए देशों पर शासन स्थापित करना उपनिवेशवाद कहलाता है।

**उदाहरण-** भारत पर ब्रितानी शासन (अन्य कोई उदाहरण)

**प्रश्न-9.** सत्तावादी (ऑथोरिटोरियन) राज्य की कुछ विशेषताएं लिखिए।

**उत्तर-**

1. सत्तावादी राज्य लोकतंत्रात्मक राज्य का विपरीत होता है।
2. ऐसे राज्य में लोगों की आवाज नहीं सुनी जाती।
3. गैर राजकीय संस्थाएं महत्वपूर्ण हो जाती हैं।

4. नागरिक स्वतन्त्रताओं (भाषण, प्रेस आदि) को सीमित या समाप्त कर दिया जाता है।
5. भ्रष्टाचार आदि के कारण राज्य की संस्थाएँ लोगों की सुनवाई करने में असक्षम है।

**प्रश्न-10.** ‘बेगार’ शब्द का क्या अर्थ है?

**उत्तर-**

1. ये वेतनहीन मजदूरी है— निम्न जाति समूह के सदस्य जमींदारों या भू-स्वामियों के यहाँ कुछ निश्चित दिनों तक मजदूरी करते हैं।
2. बहुत से गरीब कामगार पीढ़िओंसे भू-स्वामियों के यहाँ मजदूर बने रहते हैं जैसे बंधुआ मजदूर।

**प्रश्न-11.** शहरीकरण और औद्योगिकरण एक जुड़ी हुई प्रक्रिया है स्पष्ट करो?

**उत्तर-** औद्योगीकरण के कारण बड़े-बड़े उद्योग शुरू हुए। पुराने उद्योगों का पतन हुआ। लोग काम की तलाश में गाँव से शहर में पलायन हुये। उद्योगों के पास बड़ी-बड़ी बस्तियाँ बस गयी दुकानें बाजार खुल गये। धीरे-धीरे शहरों का विकास हुआ।

1. गाँव जो औद्योगिक शहरों के नजदीक है उन पर शहरों का असर है।
2. नगरों के विस्तार से सीमावर्ती गांव पूरी तरह से नगरों में बदल गये हैं क्योंकि औद्योगीकरण तथा नगरीकरण की प्रक्रिया में तेजी आई है।

**प्रश्न-12.** कृषि मजदूरों के महिलाकरण (फेमिलाइजेशन) से आप क्या समझते हैं?

**उत्तर-**

1. निर्धन क्षेत्रों में जहाँ परिवार के पुरुष सदस्य वर्ष का अधिकतर हिस्सा गांव के बाहर काम करने में बिताते हैं। कृषि मूल रूप से महिलाओं कार्य बन गया है।
2. महिलाएं भी कृषि मजदूरों के मुख्य स्त्रोत के रूप में उभर रही है जिससे कृषि मजदूरों के मुख्य स्त्रोत के रूप में उभर रही है जिससे कृषि मजदूरों का महिलाकरण हो रहा है।

**प्रश्न-13.** उपनिवेशवाद के दिनों में राष्ट्र राज्यों के उद्भव का परीक्षण कीजिए?

**उत्तर-**

1. उपनिवेशकाल में राष्ट्र राज्य ने प्रभावशाली राजनैतिक रूप ले लिया।
2. राष्ट्र राज्य और राष्ट्रवाद में गहरा संबंध
3. राष्ट्रवाद संप्रभुता के अधिकार को मान्यता देता है।
4. राष्ट्र एक बड़े स्तर का समुदाय होता है यह समुदायों से मिलकर बना एक समुदाय है।
5. उपनिवेशवाद और राष्ट्रवाद में टकराव।

**प्रश्न-14.** संगठित और असंगठित क्षेत्र में अन्तर बताईये?

**उत्तर-** संगठित क्षेत्र- संगठित क्षेत्र में लोग मिल कर काम करते हैं इसमें काम करने वाले लोग सरकारी तौर पर पंजीकृत होते हैं उनको उपयुक्त वेतन, बोनस, पेंशन, मेडिकल सुविधाएँ उपलब्ध होती हैं। जैसे सरकारी विभाग, बैंक आदि।

**असंगठित क्षेत्र-** असंगठित क्षेत्र में रोजगार अस्थायी होता है। उन्हें मेडिकल सुविधाएं, पेंशन, समुचित वेतन, बोनस आदि नहीं मिलता। असंगठित क्षेत्र के लोग अज्ञानता, निरक्षरता के कारण अपने साझे हितों के लिये अपने आपको संगठित करने में असमर्थ होते हैं भारत में 90 प्रतिशत लोग असंगठित क्षेत्र में कार्य करते हैं।

**प्रश्न-15.** आर्थिक सहायता और समर्थन मूल्य में अन्तर स्पष्ट करो?

**उत्तर-** आर्थिक सहायता- यह खेती आदि लागत को कम कर देती है क्योंकि लागत का एक हिस्सा सरकार अदा करती है जैसे खाद, डीजल और खाना बनाने की गैज (LPG) में दी गई सहायता।

**समर्थन मूल्य-** सरकार किसानों को फसलों को बेचने का न्यूनतम मूल्य तय करती है। जिसे समर्थन मूल्य कहते हैं। किसानों के पास अपने उत्पादों को निजी व्यापारियों को बेचने का विकल्प खुला रहता है। इसका मुख्य उद्देश्य किसानों को उपयुक्त मूल्य दिलाना तथा उन्हें कृषि उत्पादों में धन लगाने हेतु प्रेरित करना है।

**प्रश्न-16.** नवीन कृषक आन्दोलन पर सक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

**उत्तर-**

1. यह आन्दोलन 1970 के दशक में पंजाब और तमिलनाडू में शुरू हुआ।
2. यह आन्दोलन क्षेत्रीय आधार पर संगठित थे।
3. यह आन्दोलन दल रहित थे।

4. इसमें कृषक के स्थान पर किसान जुड़े थे।
5. आंदोलन की मौलिक विचारधारा मजबूत राज्य विरोधी तथा नगर विरोधी थी।
6. मांगों के केन्द्र में मूल्य और सम्बन्धित मुद्दे थे (कोई चार)(व्याख्या)

**प्रश्न-17.** प्रबंधक के मूल कार्य क्या होते हैं? वह कामगारों से अधिक उत्पादन कैसे करवा सकता है?

**उत्तर-** प्रबंधक के मूल कार्य हैं।

1. कामगारों पर नियंत्रण रखना।
2. उनसे अधिक से अधिक काम लेना।
3. निर्धारित कार्यों की आपूर्ति करना।

**कामगारों से अधिक काम करवाने के तरीके**

1. काम करने के घंटों/ कार्य अवधि को बढ़ा कर।
2. वेतन व अन्य संबंधित सुविधाएं बढ़ाकर।

**प्रश्न-18.** व्यापार की सफलता में जाति ओर सम्बन्धी जालतंत्र कैसे सहायक होते हैं?

**उत्तर-** व्यापार की सफलता ओर जाति व नातेदारी संबंध

1. तमिलनाडू के नाटूकोटाई (नाकरट्टर) इसका एक जीवंत उदाहरण प्रस्तुत करते हैं कि देशज व्यापारिक संगठन कैसे कार्य करते थे।
2. नाकरट्टाओं में एक दकूकसरे से कर्ज लेना तथा पैसा जमा करना जाति आधारित था।
3. नाकरट्टाओं में प्रतिष्ठा आधारित व्यवसाय होता है जाति, नातेदारी ओर परिवार की सरचंना सब व्यापार के अनुकूल थी।
4. पारंपरिक व्यापारी अपने समुदाय के लोगों पर अधिक विश्वास रखते हैं बाहर के लोगों से धोखा खाने का डर होता है।
5. चेटियार व्यापारियों के जाति आधारित सामाजिक सम्पर्कों ने उन्हं दक्षिण पूर्व एशिया और सिलोन में अपनी गतिविधियां बढ़ाने में सहायता दी।
6. पारंपरिक जाति एवं नातेदारी आधारित संबंधों में मारवाड़ी, जैन, बनिया, वैश्य,

सिन्धी, पारसी, बोहरा आदि भी शामिल है।

## अथवा

**प्रश्न-18.** उपनिवेशकाल में महिलाओं से जुड़े मुद्दों को निपटाने में समाज सुधारकों की भूमि की चर्चा कीजिए?

**उत्तर-**

1. राजाराम मोहन राय ने महिलाओं से जुड़े मुद्दों को निपटाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सती प्रथा आदि के विरुद्ध एक सफल आन्दोलन चलाया।
2. रेनाडे ने विधवा विवाह, पुर्नविवाह, प्रेमविवाह के पक्ष में आन्दोलन चलाया।
3. ज्योति राव फूले और सावित्री बाई फुले ने जाति प्रथा तथा लिंग भेदभाव के विरुद्ध हमला बोला।
4. सर सैय्यद अहमद खाँ ने कन्या शिक्षा पर जोर दिया।

**प्रश्न-19.** संघीय प्रणाली के विवादास्पद मुद्दे और अन्तर-क्षेत्रीय जिनसे अन्तर क्षेत्रीय असमानताएं उत्पन्न हुईं।

**उत्तर-** संघीय प्रणाली के विवादास्पद मुद्दे और अन्तर क्षेत्रीय असमानताएँ

1. अन्तर क्षेत्रीय आर्थिक व अधिसरंचना असमानताओं को बढ़ाना।
2. निजी क्षेत्र विकसित राज्यों में ही धन लगाते हैं जहां सुविधाएँ बेहतर है।
3. सरकार को क्षेत्रीय समानताओं पर ध्यान देना चाहियं न कि केवल लाभ पर।
4. विकसित और पिछड़े क्षेत्रों के बीच फासला बढ़ रहा है। (या अन्य कोई) व्याख्या

## अथवा

**प्रश्न-19.** नागरिक समिति संगठनों की क्या विशेषताएँ हैं?

**उत्तर-**

1. यह सरकार के सत्तावादी दृष्टिकोण पर नजर रखते हैं।
2. व्यक्ति मिल कर सामाजिक मुद्दों पर चर्चा करते हैं। सामुहिक हितों को पूरा

करने का प्रयास करते हैं राज्य के समक्ष अपनी मांगे रखते हैं।

3. सरकार के अन्यायपूर्ण कार्यों का विरोध करते हैं।
4. लोगों में राजनैतिक चेतना पैदा करते हैं।
5. नागरिक संगठनों के क्रियाकलाप काफी व्यापक हो चुके हैं। जैसे भ्रष्टाचार, स्त्रियों के प्रति हिंसा आदि पर आगे बढ़कर कार्य करते हैं। (कोई चार व्याख्या सहित)

**प्रश्न-20.** संस्कृतिकरण की प्रक्रिया से असमानताओं और भेदभाव को प्रोत्साहन मिलता है। स्पष्ट कीजिए।

**उत्तर-**

1. भारतीय समाज में संस्कृतिकरण से जाति व्यवस्था पर कई प्रभाव पड़े। निम्न जातियों में अपनी सामाजिक स्थिति सुधारने के लिये प्रयास जारी हैं फिर भी संस्कृतिकरण की प्रक्रिया से असमानताओं और भेदभाव को प्रोत्साहन मिलता है। संस्कृतिकरण की अनेक स्तरों पर आलोचना की गई है।
2. सामाजिक गतिशीलता निम्न जाति का सामाजिक स्तरीकरण में उर्ध्वगामी परिवर्तन करती है को बढ़ाचढ़ा कर बताया गया है। इस प्रक्रिया में कुछ व्यक्ति असमानता पर आधारित अपनी स्थिति में सुधार कर लेते हैं लेकिन समाज में असामानता और भेदभाव में सुधार कर लेते हैं लेकिन समाज में असमानता और भेदभाव अभी भी व्याप्त है। समाप्त नहीं हुये।
3. जातिगत भेदभाव तथा दजेज प्रथा आदि को प्रोत्साहन मिलता है।
4. दलित संस्कृति तथा दलित समाज को पिछड़ा माना जाता है।
5. उच्च जाति की जीवन शैली उच्च तथा निम्नजाति के लोगों की जीवन शैली निम्न है। अतः उच्च जाति के लोगों की जीवन शैली का अनुकरण करने की इच्छा को वाढ़नीय और प्राकृतिक मान लिया जाता है।

**प्रश्न-21.** संविधान में पंचायती राज को शामिल करने के बारे में डॉ० अंबेडकर और महात्मा गांधी के तर्कों का परीक्षण कीजिए।

**उत्तर-**

1. डॉ. अम्बेडकर ने तर्क दिया कि स्थानीय कुलीन तथा उच्च जाति के व्यक्ति सुरक्षित परिधि से इस प्रकार घरे हुए हैं कि स्वशासन का तात्पर्य होगा भारतीय समाज के पद्दलित लोगों का लगातार शोषण।
2. महात्मा गांधी को स्थानीय सरकार की अवधारणा बहुत प्रिय इकाई मानते थे। जो स्वयं को निर्देशित करें। ग्राम स्वशासन को वे आदर्श मानते थे और चाहते थे कि स्वतन्त्रता के बाद भी गांव में यही शासन चलता रहे।

**प्रश्न-22** उदारीकरण की आर्थिक नीतियों को समझाइये?

**उत्तर-**

1. उदारीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा आर्थिक कार्यकलानों पर राज्य के नियंत्रण ढीले कर दिये जाते हैं और उन्हें बाजार की ताकतों के हवाले कर दिया जाता है।
2. इस प्रक्रिया में कानून को अधिक उदार और सरल बना दिया जाता है। भारत में यह प्रक्रिया 1991 में शुरू हुई।
3. भारतीय अर्थव्यवस्था का भूमण्डलीकरण प्राथमिक तौर पर उदारीकरण की नीति की वजह से हुआ।
4. उदारीकरण में कई तरह की नीतियां शामिल हैं। जैसे सरकारी विभागों का निजीकरण, आयात शुल्क में कभी विदेशी कम्पनियों को देश में उद्योग स्थापित करने की सहुलियत देना आदि।
5. उदारवाद के तहत जो परिवर्तन हुए उन्होंने आर्थिक संवृद्धि को बढ़ाया ओर इसके साथ ही भारतीय बाजारों को विदेशी कंपनियों के लिये खोला।
6. जो लोग बाजारीकरण का समर्थन करते हैं उनका मानना है कि इससे समाज में आर्थिक संवृद्धि आयेगी। क्योंकि सरकारी संस्थाओं की अपेक्षा निजी संस्थाएं ज्यादा कुशल होती हैं। (अन्य कोई संबंधित व्याख्या)

**प्रश्न-23.** उन तरीकों की चर्चा कीजिए जिन्होंने उपनिवेशवादी शासन के अंतर्गत भारत में जाति की संस्था को सबल किया।

**उत्तर-**

1. ब्रिटिश प्रशासकों ने देश पर कुशलतापूर्वक शासन करना सीखने के उद्देश्य से जाति व्यवस्थाओं की जटिलताओं को समझने के प्रयत्न शुरू किये।

2. देश भर में विभिन्न जातियों तथा जनजातियों की प्रथाओं और तौर-तरीकों के बारे में गहन सर्वेक्षण किये तथा रिपोर्ट तैयार की।
3. जाति के विषय में सूचना एकत्र करने के लिये जनगणना का प्रारम्भ किया गया।
4. जातीय जनगणना तथा जातियों की प्रस्थिति का अभिलेख करने के प्रत्यक्ष प्रयास ने जाति संस्था के स्वरूप को ही बदल डाला।
5. भूराजस्व व्यवस्थाओं तथा कानूनों ने उच्च जातियों के जाति आधारित अधिकारी को वैद्य माना।
6. भारत सरकार अधिनियम 1935 के द्वारा जातियों और जनजातियों की सूचियों को वैद्य मान्य (SC & ST) प्रदान की (कोई अन्य व्याख्या सहित)

## अथवा

**प्रश्न-23.** झारखंड का विशेष संदर्भ देते हुए आज भारत की जनजाति पहचानों पर एक टिप्पण लिखिए।

**उत्तर-** भारत की जनजाति पहचान झारखंड का विशेष संदर्भ

1. एक लंबे संघर्ष के बाद झारखंड और छत्तीसगढ़ को अलग-अलग राज्य का दर्जा मिल गया लेकिन इसका प्रभाव अनेक समस्याओं के कारण तिरोहित हो गया।
2. जनजातिय समुदायों में एक संगठित सजातीय चेतना तथा सांझी पहचान बनाने में सहायता मिली है।
3. झारखंड को अपने नवाजित राज्य का अभी पूरा उपयोग करना है अभी वहाँ की राजनीतिक व्यवस्था स्वायत्त नहीं हुई है।
4. जनजातीय समुदायों में एक शिक्षित मध्यवर्ग का उद्भव हो रहा है।
5. आरक्षण की नीतियों के साथ मिल कर शिक्षा एक नगरीकृत, व्यावसायिक वर्ग का निर्माण कर रही है और उनके भीतर वर्गों और विभाजनों का विकास हो रहा है।
6. कुछ जनतीय समुदाय अभी भी अपने आप को शक्तिहीन समझते हैं क्योंकि कई प्रवासी व्यापारी और महाजन उनका शोषण करते हैं। (अन्य कोई व्याख्या सहित)

**प्रश्न-24.** समाचार उद्योग में हो रहे परिवर्तनों का वर्णन कीजिए।

**उत्तर-**

1. नई प्रोद्योगिकी ने समाचार पत्रों के उत्पादन और प्रसार को बढ़ावा देने में मदद की है।
2. बड़ी संख्या में चमकदार पत्रिकाएँ बाजार में आ रही हैं।
3. साक्षर लोगों की संख्या में काफी बढ़ोतरी हुई है जो शहरी में प्रवासन कर रहे हैं।
4. छोटे कस्बों और गाँवों में पाठकों की आवश्यकताएँ शहरी पाठकों से भिन्न होती हैं और भारतीय भाषाओं के समाचार पत्र उनकी आवश्यकताओं को पूरा करते हैं।
5. अंग्रेजी भाषा के समाचार पत्र सभी क्षेत्रों में पढ़े जाते हैं। इन समाचार पत्रों ने अपनी कीमत घटा दी है।
6. समाचार पत्र अनेक विषयन सम्बन्धी रणनीतियों के तहत उपभोक्ता संपर्क कार्यक्रम घर-घर जाकर सर्वेक्षण और अनुसंधान जैसे कार्य करते हैं।

**प्रश्न-25.** निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए?

66 प्रतिशत भारतीय 15-65 आयु वर्ग में न केवल भारत का अधिकतर जनसंख्या, लगभग दो तिहाई, 15-64 वर्षों के काम करने वाले आयु वर्ग में है, देश की औसत उम्र अभी भी केवल 24 है (एक दशक पूर्व की 22 से अधिक) जिससे यह उत्पादक करने वाले कार्यबल की बड़ी संख्या के कारण एक जवान राष्ट्र बन जाता है। फिर भी दाकनाके रि आजाके तके राज्यों में बहुत व्यापक अंतर है। दोनों की बातों में राज्यों में बहुत व्यापक अंतर है। यद्यपि काम करने वाले आयु वर्ग में भारत में 7675 लाख लोग हैं, काम करने वाली जनसंख्या के अनुपात में बड़ा अंतर है छोटे से राज्य दमन-दीप में 74.3 प्रतिशत के शिखर से लेकर बिहार के 55 प्रतिशत के निम्न स्तर तक जहाँ काम करने वाली आबादी का 40 प्रतिशत 0 से 14 वर्ष तक के आयु वर्ग में है। सर्वाधिक प्रजनन दर वाले उत्तर प्रदेश में भी यह ऐसा ही है जहाँ काम करने की उम्र वाली आबादी 58.6 प्रतिशत है और बच्चे उस आबादी का 36 प्रतिशत हैं। भारत के लिए बच्चों (0-14 वर्ष) का अनुपात 31 प्रतिशत है। कम प्रजनन क्षमता वाले राज्य केरल, तमिलनाडु में आबादी का मात्र 23 प्रतिशत और 24 प्रतिशत ही बच्चे हैं। बड़े राज्यों में तमिलनाडु का काम करने वाली जनसंख्या का सर्वोच्च अनुपात 69.8 प्रतिशत है।

**सामान्यतः** बड़े राज्यों में कार्य करने वाली आबादी का अनुपात अधिक है जो उन राज्यों की सूची को काफी आच्छादित करता है जिन्हें आमतौर पर अधिक विकसित माना जाता है। यह एक सीमा तक अच्छी खबर है कि वे राज्य अन्य राज्यों की अपेक्षा जनसांख्यिकीय लाभांश देने की अच्छी स्थिति में हैं।

- (क) ‘जनसांख्यिकीय लाभांश’ क्या है?
- (ख) उन राज्यों के नाम लिखिए जिनमें काम करने वाली जनसंख्या सर्वाधिक और सबसे कम है। राज्यों में पाए जाने वाले इस अंतर के कारण भी लिखिए।

**उत्तर-** सही उत्तर

**उत्तर-** सही उत्तर

## सीनियर स्कूल सर्टिफिकेट परीक्षा मार्च- 2015

---

### **समाजशास्त्र**

---

**प्रश्न-1.** औपचारिक जंनाकिकी सामाजिक जंनाकिकी से किस प्रकार भिन्न है?

**उत्तर-**

**औपचारिक जंनाकिकी-** औपचारिक जंनाकिकी प्रक्रियाओं में जन्म, मृत्यु, प्रवास, प्रजनन, विवाह, तलाक जैसी प्रक्रियाएं शामिल है।

**सामाजिक जंनाकिकी-** सामाजिक जंनाकिकी में मुख्य रूप से जनसंख्यक के विभिन्न आयु, स्त्री पुरुष अनुपात, वर्ग, समूह, प्रदेश या संघीय आधार पर जनसंख्या आकार तथा जनसंख्या के सामाजिक मिश्रण को शामिल किया गया है। इसमें जनसंख्या के सामाजिक आर्थिक तथा राजनीतिक पक्षों पर विचार किया जाता है।

**प्रश्न-2.** उदारीकरण की किन्हीं दो हानियों का उल्लेख कीजिए?

**उत्तर-**

1. भारतीय उद्योग विदेशी कम्पनियों के साथ प्रतिस्पर्धा नहीं कर पाती जैसे आटोमोबाइल, इलैक्ट्रॉनिक्स आदि।
2. सर्वथन मूल्य तथा सहायता राशि कम कर दी है या कुछ वापिस लेने के कारण किसानों पर प्रभाव पड़ा है।
3. निजीकरण के कारण सरकारी विभागों में कर्मचारियों की नौकरी भी कम हो गई है तथा रोजगार स्त्रोत अब स्थिर नहीं रहे।
4. निर्यात में कमी तथा आयात का बढ़ना (कोई दो)

**प्रश्न-3.** अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा के लिये दिए गये संविधानात्मक प्रावधानों में से किन्हीं दो का उल्लेख कीजिए?

**उत्तर- अनुच्छेद 29**

1. अल्पसंख्यक वर्ग को अपनी संस्कृति भाषा लिपि बनाये रखने का अधिकार है।

2. किसी भी अल्पसंख्यक नागरिकों को धर्म, भाषा, जाति के आधार पर शिक्षा संस्थानों में प्रवेश से वंचित नहीं किया जायेगा।

### अनुच्छेद 30

1. धर्म भाषा के आधार पर अल्पसंख्यक वर्ग शिक्षा संस्थाओं की स्थापना कर सकते हैं और उन्हें चला सकते हैं।
2. राज्य इन शिक्षा संस्थाओं को सहायता देने में भेदभाव नहीं करेगा।

**प्रश्न-4.** विशेषाधिकृत अल्पसंख्यक कौन होते हैं?

**उत्तर-** अन्यन्त धनवान लोगों जिन्हे कोई सहायता नहीं दी जाती परन्तु वे अल्पसंख्यक वर्ग से सम्बन्धित हैं।

**प्रश्न-5.** आधुनिकता शब्द में क्या मान्यता निहित है?

**उत्तर-**

1. स्थानीय तथा सीमित सकीर्ण दृष्टिकोण कम महत्व वाले होते हैं।
2. व्यवहार, विचार आदि पर परिवार जाति का कोई प्रभाव नहीं होता।
3. विज्ञान तथा तर्क पद्धति भावनाओं से ऊपर होती है।
4. व्यवसाय कार्य चयन पर निर्भर होता है न कि जन्म पर।
5. विज्ञान तथा तर्क पद्धति भावनाओं से ऊपर होती है।
6. सकारात्मक तथा वांछित मूल्य मानवतावादी तथा भाग्यवादी प्रवृत्ति से ऊपर है।  
(कोई दो)

**प्रश्न-6.** पंचायतों के सामाजिक कल्याण के उत्तरदायित्वों को उल्लेख कीजिए?

**उत्तर-**

1. आर्थिक विस्त के लिये योजनाएँ व कार्यक्रम बनाना।
2. जन्म तथा मृत्यु का रिकार्ड रखना।
3. मातृत्व केन्द्रों तथा बाल कल्याण केन्द्रों की स्थापना।
4. सड़कों का निर्माण करना
5. शमशानों तथा कब्रिस्तानों का रखरखाव।

6. परिवार नियोजन का प्रचार
7. लघु तथा कुटीर उद्योगों का विकास करना (कोई दो)

**प्रश्न-7.** कृषि तथा संस्कृति किन रूपों में जुड़ी हुई है?

**उत्तर-**

1. कृषि तथा संस्कृति के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध है।
2. सांस्कृतिक रस्मों को कृषि तथा कृषक प्रणालियों में खोज सकते हैं जैसे पंजाब में 'बैसाखी' कर्नाटक में उगाड़ी।
3. नववर्ष के त्यौहारों को मनाना जैसे पोंगल, बिहु, ओणम।

**प्रश्न-8.** 'बेगार' शब्द से आप क्या समझते हैं?

**उत्तर-** बेगार यह वेतनहीन मजदूरी है।

1. निम्न जाति समूह के सदस्य जमीदारों या भूस्वामियों के यहाँ कुछ निश्चित दिनों तक मजदूरी करते हैं।
2. बहुत से गरीब कामगार पीढ़ियों से भूस्वामियों के यहाँ मजदूर बने रहते हैं जैसे बंधुआ मजदूर।

**प्रश्न-9.** फोर्डिज्म एवं उत्तर फोर्डिज्म (पोस्ट फोर्डिज्म) में भिन्नता बताइये।

**उत्तर- फोर्डिज्म-** एक केन्द्रीकृत स्थान पर विशाल पैमाने द्वारा वस्तुओं का उत्पादन (हेनरी फोर्ड द्वारा स्थापना)

**उत्तरफोर्डिज्म-** अलग-अलग स्थानों पर उत्पादन की लचीली प्रणाली।

**प्रश्न-10.** पारराष्ट्रीय निगमों की विशेषताएँ बताइये।

**उत्तर-**

1. पारराष्ट्रीय निगम ऐसी कम्पनियाँ होती हैं जो एक से अधिक देशों में माल का उत्पादन करती है।
2. ये अपेक्षाकृत छोटी फर्म भी हो सकती हैं तथा बड़े विशाल अर्तराष्ट्रीय कम्पनी भी हो सकती हैं।
3. इनके कार्यालय तथा उत्पादन विभिन्न देशों में होता है।

4. कुछ प्रसिद्ध पारराष्ट्रीय निगमों के नाम इस प्रकार हैं जैसे कोका कोला, कोलगेट, पामोलिव, सैमसंग, कोडक आदि।

**प्रश्न-11.** निगम संस्कृति (कोर्पोरेट कल्चर) उत्पादकता और प्रतियोगितापन को कैसे बढ़ा देती है।

**उत्तर-**

1. निगम संस्कृति प्रबंधन सिद्धान्त की ऐसी शाखा है जो उत्पादकता तथा प्रतियोगिता को बढ़ावा देते हैं तथा फर्म के सभी सदस्यों को साथ लेकर विशेष संगठन की संस्कृति का निर्माण करते हैं।
2. इसमें कम्पनी के कार्यक्रम, रीतियां तथा परम्पराएं शामिल हैं।
3. ये कर्मचारियों में वफादारी तथा एकता को बढ़ाती हैं।
4. वह यह भी बताती है कि काम करके का तरीका क्या है और उत्पादों को कैसे बढ़ावा दिया जाये। (कोई दो)

**प्रश्न-12.** सामाजिक परिवर्तन एवं सामाजिक आन्दोलन के मध्य अन्तर स्पष्ट कीजिए?

**उत्तर-**

**सामाजिक परिवर्तन-** सामाजिक परिवर्तन वे परिवर्तन हैं जो कुछ समय बाद समाज की विभिन्न इकाइयों में परिवर्तन लाते हैं सामाजिक परिवर्तन का तात्पर्य सामाजिक संरचना तथा सामाजिक संबंध में होने वाले परिवर्तन से है। सामाजिक परिवर्तन कभी-कभी बड़ी तेजी तथा कभी-कभी मंद गति वाले होते हैं। यह हमेशा चलने वाली प्रक्रिया है।

**सामाजिक आन्दोलन-** वे गतिशील कार्य हैं जो सामाजिक कुप्रथाओं अन्धविश्वास, भेदभाव को दूर करने के लिये चलाये जाते हैं। जिसका उद्देश्य समाज को अधिक स्वस्थ तथा प्रगतिशील बनाना होता है। सामाजिक आन्दोलन परिवर्तन तथा प्रगति की ओर अग्रसर होते हैं।

**प्रश्न-13.** एआईटीयूसी (एटक) के बनने से औपनिवेशिक सरकार मजदूरों के प्रति किस प्रकार सावधान (सतर्क) हो गई है?

**उत्तर-** औपनिवेशिक सरकार सतर्क हुई

1. मजदूरों को कुछ रियायते देकर अंसतोष कम किया।
2. कार्य करने के घंटे कर करके 10 घंटे किए।
3. मजदूर अधिनियम पारित किया।

**प्रश्न-14.** सुधारवादी तथा प्रतिदानात्मक आन्दोलनों में क्या भिन्नता है?

**उत्तर- सुधारवादी आन्दोलन-** इस प्रकार के आन्दोलन वर्तमान व्यवस्था को बेहतर बनाने की दृष्टि से किये जाते हैं जैसे सूचना का अधिकार सुधारवादी आन्दोलन है।

**प्रतिदानात्मक आन्दोलन-** ये अपने व्यक्तिगत सदस्यों के व्यक्तिगत चेतना तथा गतिविधियों द्वारा परिवर्तन जैसे इजहावा समुदाय के (केरल) लोगों ने नारायण गुरु के नेतृत्व में अपनी सामाजिक प्रणाली को बदला। (अन्य कोई उचित बिन्दु)

**प्रश्न-15.** भारत में बच्चों के लिंग अनुपात में कमी होने में क्षेत्रीय विभिन्नता को समझाइये।

### उत्तर

1. निम्नतम लिंग अनुपात भारत के समृद्ध क्षेत्रों में ज्यादा देखने को मिल रहा है।
2. देश के विभिन्न क्षेत्रों में लिंग अनुपात भिन्न-भिन्न है। केरल तथा पांडिचेरी में सबसे अधिक ओर हरियाणा, पंजाब, चण्डीगढ़ में सबसे कम है।
3. लिंग अनुपात में गिरावट के कारण बाल विवाह, लिंग विशेष का गर्भपात, गरीबी, दहेज, स्त्रियों को पौष्टिक भोजन न मिलना आदि।
3. आर्थिक दृष्टि से समृद्ध परिवार एक या दो बच्चे ही अपनी पसन्द के अनुसार चाहते हैं।
4. जहाँ अनपढ़ लोग ज्यादा हैं वहाँ लिंग अनुपात में कमी होती है। क्योंकि लोग अंधविश्वास पर विश्वास करते हैं जैसे बिहार, उत्तर प्रदेश आदि।

**प्रश्न-16.** भारत में व्यापार और वाणिज्य जाति एवं रिश्तेदारी द्वारा परिचारित किया जाता है विवेचना कीजिए?

### उत्तर-

1. भारत में व्यापार जाति एवं रिश्तेदारी द्वारा परिचालित होते हैं। तमिलनाडू के नापटूकोटाई (नाकरट्टर) इसका जीवंत उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। कि देशज व्यापारिक संगठन कैसे कार्य करते थे।
2. नाकरट्टाओं में एक दूसरे से कर्ज लेना तथा पैसा जमा करना जाति आधारित था।
3. नाकरट्टाओं में प्रतिष्ठा आधारित व्यवसाय होता है जाति, नातेदारी और परिवार को सरचंना सब व्यापार के अनुकूल थी।

4. पारंपरिक व्यापारी अपने समुदाय के लोगों पर अधिक विश्वास रखते हैं। बाहर के लोगों से धोखा खाने का डर होता है।
5. पारंपरिक जाति एवं नातेदारी आधारित संबंधों में मारवाड़ी, बनिया, वैश्य, पारसी, सिंधी, बोहरा आदि भी शामिल हैं।
6. विनियम या कर्ज का एक महत्वपूर्ण साधन हुंडी (विनियम बिल) दूर के व्यापार का महत्वपूर्ण साधन था। (या कोई अन्य बिन्दु)

**प्रश्न-17.** क्या आरटीआई (RTI) राज्यों को भारतीयों के प्रति जवाबदेही के लिये बाध्य करने का साधन हो सकता है। विस्तार से समझाइये।

**उत्तर-** RTI द्वारा राज्यों की प्रतिबद्ध जवाबदेही

1. यह कानून 2005 में संसद द्वारा लागू किया गया।
2. जिसके अन्तर्गत नागरिकों को सार्वजनिक कार्यालयों से सूचना लेने का अधिकार मिला।
3. इस नियम के अनुसार दस्तावेजों अभिलेखों रिकार्ड का निरीक्षण किया जा सकता है।
4. दस्तावेजों की प्रतिया हासिल की जा सकती है।
5. इस कानून से सार्वजनिक प्राधिकरण द्वारा सूचना देने पर पारदर्शिता को बढ़ावा मिला।
6. इस कानून में कोई भी सूचना प्राप्त करने का अनुरोध कर सकता है और सरकारी संस्थानों को 30 दिनों के अन्दर उत्तर देना होगा।

**प्रश्न-18.** जनजातीय क्षेत्रों में आधारभूत जनतांत्रिक क्रियाशीलता का उदाहरण सहित वर्णन कीजिए।

**उत्तर-** जनजातीय क्षेत्रों में आधारभूत जनतन्त्र प्रणाली

1. जनजातीय क्षेत्रों में अधिक समतावादी तथा बन्धुता आधारित सामाजिक संगठन आधारभूत स्तर पर थे।
2. उदाहरण के रूप में गारो, खासी, जयन्तिया आदिवासियों में 100 वर्ष से पुरानी पारंपरिक राजनीतिक संस्था है।

3. ये संस्थाएं गाँव, वंश, राज्य स्तर पर पूरी तरह विकसित एवं कार्यशील थी।
4. खासी जनजाति में प्रत्येक वंश की अपनी एक संस्था दरबार कुर थी जिसका अध्यक्ष वंश का मुखिया होता था।

**प्रश्न-19.** सतीश सबरवाल द्वारा उल्लेखित औपनिवेशिक भारत में परिवर्तन के तीन पक्षों की विस्तार से व्याख्या कीजिए?

**उत्तर-** औपनिवेशिक भारत में परिवर्तन के तीन पक्ष (सतीश सबरवाल द्वारा)

1. संचार माध्यम
2. सगंठनों का स्वरूप
3. विचारों की प्रकृति (विस्तार से व्याख्या)

**प्रश्न-20.** संविदा खेती के लाभ तथा हानियों को रेखांकित कीजिए?

**उत्तर-** संविदा खेती

#### लाभ

1. कम्पनी द्वारा कार्यकारी पूँजी लगाना।
2. किसानों का विश्वसनीय बाजार।
3. किसानों को आर्थिक सुरक्षा।
4. पूर्व निर्धारित मूल्य पर कम्पनी द्वारा उत्पाद खरीदना।

#### हानियाँ

1. किसान कम्पनी पर आश्रित होकर असुरक्षित बन जाता है।
2. उत्पादन क्रिया से अलगाव
3. अर्जित ज्ञान को बेकार कर देना
4. निश्चित फसलोंको उगाना
5. किसानों द्वारा आत्म हत्या, कर्ज की समस्या
6. उर्वरक व कीटनाशक का अधिक उपयोग पारिस्थितिक संकट

(कोई 2-2 बिन्दु व्याख्या सहित)

## अथवा

**प्रश्न-20.** मजदूरों के संचरण की व्याख्या कीजिए?

**उत्तर-** मजदूरों का संचरण

1. समृद्ध कृषि क्षेत्रों की ओर मौसमी मजदूरों की मांग बढ़ना।
2. कम विकसित क्षेत्रों से अधिक मजदूरी के कारण मजदूरों का पलायन।
3. विशेष कर सूखाग्रस्त क्षेत्रों से मजदूर सस्ती मजदूरी लेकर शोषित होते हैं। इन्हें घुमक्कड़ या फुटलुज मजदूर कहते हैं।
4. स्थानीय मजदूर बड़े शहरों में चले जाते हैं।
5. कृषि मजदूर के रूप में महिलाएं (कोई चार व्याख्या सहित)

**प्रश्न-21.** भारतीय उद्योगों में भूमण्डलीकरण और उदारीकरण के बाद हुए परिवर्तनों की विवेचना कीजिए।

**उत्तर-** भारतीय उद्योगों में भूमण्डलीकरण तथा उदारीकरण के बाद हुए परिवर्तन

1. सार्वजनिक सैक्टर तथा सरकारी कम्पनियों का निजीकरण।
2. भारतीय कम्पनियों का बहुराष्ट्रीय कम्पनियां बनना।
3. विभिन्न करों में कटौती करना ताकि विदेशी सामान को आसानी से आयात किया जा सके।
4. अन्तर्राष्ट्रीय संस्थान WTO तथा IMF को ऋण लेने के लिये महत्व देना।
5. प्राइवेट कम्पनियों विशेषकर विदेशी कम्पनियों को उन क्षेत्रों में निवेश के लिये प्रोत्साहित करना जो पहले सरकार के लिये आरक्षित थे।

(कोई चार)

**प्रश्न-22.** जनजातियों का वर्गीकरण उनकी स्थायी तथा ग्रहण की गई विशेषताओं के अनुसार किया गया है व्याख्या करो।

**उत्तर-** जनजातियों का वर्गीकरण

**स्थायी विशेषक**

- भाषा के आधार पर-** इन्डो, आर्यन, द्रविड़, आस्ट्रीक एवं तिब्बती बर्मी चार भागों में बांटा है।
- क्षेत्र-** पारिस्थितिक आवास में पहाड़, जंगल, ग्रामीण, मैदान एवं शहरी औद्योगिक क्षेत्र हैं।
- शारीरिक विशिष्टताएँ ( नस्लीय )-** निग्रिहो, आस्ट्रैलाइड, मंगोलाइड, द्रविड आर्यन।
- जनसंख्या का आकार-** बड़ी जनजातियों गोन्ड, भील, सन्थाल, औराव, मुंडा, मीणा, बोडो एवं सबसे छोटी जनजातियां अण्डेमान द्वीपवासी हैं।

ग्रहण की गई विशेषताएँ ( अर्जित )

- जीविका का आधार- मछुआरे, भोजन संग्राहक शिकारी
- हिन्दू समाज में विलय होना ( शामिल होना )
- हिन्दू समाज के प्रति दृष्टिकोण

**प्रश्न-23.** समकालीन भारत में महिलाओं की प्रतिष्ठा में कितना सुधार हुआ है।  
उदाहरण दो।

**उत्तर**

- महिला की प्रस्थिति में विकास
- महिला के संगठनों का विकास
- कराची कांग्रेस संकल्प में मौलिक अधिकार जैसे अन्य नागरिकों को दिये हैं।
- महिला आन्दोलन
- महिलाओं का सशक्तिकरण
- मताधिकार एवं नियोजित योजना में महिलाओं की भागीदारी
- 73 वें संविधान संशोधन में 'ग्राम पंचायत' लोकसभा आदि में आरक्षण ( कोई अन्य उचित बिन्दु ) व्याख्या

**प्रश्न-24.** उपनिवेशवाद से सभी क्षेत्रों में बहुत परिवर्तन आया चाहे वह कानूनी हो अथवा सांस्कृतिक अथवा वास्तु सम्बन्धी। उदाहरण द्वारा सिद्ध कीजिए।

**उत्तर-** उपनिवेशवाद द्वारा परिवर्तन

1. मुख्य परिवर्तन औद्यौगिकरण तथा नगरीकरण द्वारा हुए।
2. नये शहरों का उदय
3. लोगों के आवागमन में बढ़ोत्तरी
4. मशीनों द्वारा वस्तुओं का उत्पादन तथा परंपरागत विधियों द्वारा उत्पादन का ह्रास (नष्ट) होना।
5. कृषि प्रणालियों में तथा फसलों के नमूनों में परिवर्तन।
6. पूंजीवाद आर्थिक तन्त्र का प्रभुत्व

**प्रश्न-25.** दिये गये गद्यांश पर पढ़िये और नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

पिछले कुछ दशकों में एक अत्यंत उल्लेखनीय घटना से भारतीय भाषाओं के समाचारपत्रों में क्रान्ति आई है। इन समाचारों की वृद्धि उदारीकरण से पहले हो चुकी थी। भारत के दो प्रमुख दैनिक पत्र “दैनिक जागरण” और दैनिक भास्कर हैं। जिनके पढ़ने वालों की संख्या 2.1 करोड़ और 1.7 करोड़ है। सबसे अधिक तेजी से बढ़ने वाले दैनिकों में असमिया भाषा के दैनिक है। (51.8 प्रतिशत वृद्धि) और बंगला के दैनिक ग्रामीण क्षेत्रों में 129 प्रतिशत वृद्धि है।

‘इनाडु’ समाचार पत्र की कहानी भी भारतीय भाषाओं के समाचार पत्रों (प्रेस) की सफलता का एक उदाहरण है। ‘इनाडु’ के संस्थापक रामो ही राव ने 1974 में इस समाचारपत्र को प्रारम्भ करने से पहले एक चिट-फंड सफलतापूर्वक चलाया था। 1980 के दशक के मध्य में ग्रामीण क्षेत्रों में अरक-विरोधी आन्दोलन जैसे उपयुक्त युद्धों से जुड़ कर यह तेलुगु समाचार पत्र देहातों से पहुँचने में सफल हो गया। अपनी इस सफलता से प्रेरित होकर उसने 1989 में ‘जिला दैनिक’ निकालने शुरू किये। ये छोटे-छोटे पत्रक होते थे जिनमें जिला विशेष के सनसनी फैलाने वाले समाचार और उसी जिले के गाँवों और छोटे कस्बों से प्राप्त वर्गीकृत विज्ञापन छापे जाते थे। 1998 तक आते-आते ‘इनाडु’ आन्ध्रप्रदेश के दस कस्बों से प्रकाशित होने लगा था और सम्पूर्ण तेलुगु दैनिक पत्रों के प्रसार में इसका हस्सा 70 प्रतिशत था।

**प्रश्न-1.** मुद्रण संचार के विभिन्न प्रकार क्या हैं?

**प्रश्न-2.** भारतीय भाषाओं के समाचार पत्रों की वृद्धि के लिये किन कारणों को जिम्मेदार माना जा सकता है?

## सीनियर स्कूल सर्टिफिकेट परीक्षा मार्च- 2016

### समाजशास्त्र

**प्रश्न-1.** पराश्रित अनुपात का अर्थ बताइये?

उत्तर- पराश्रित अनुपात निर्भरता को दर्शाता है। काम करने वाले व्यक्तियों पर आश्रित या निर्भर व्यक्तियों काक अनुपात इसके द्वारा दर्शाया जाता है। इसमें 0 से 14 वर्षके बच्चे तथ 60 वर्ष से ऊपर वाले बुजुर्ग आते हैं।

**प्रश्न-2.** पूँजी के बे तीन रूप क्या हैं जिन पर सामाजिक असमानता आधारित हैं?

उत्तर- सामाजिक असमानता के आधार पर पूँजी को तीन रूपों में विभाजित किया जा सकता है।

1. आर्थिक पूँजी
2. सांस्कृतिक पूँजी
3. सामाजिक पूँजी

**प्रश्न-3.** दो कारकों का उल्लेख कीजिए जो क्षेत्रवाद को बढ़ावा देते हैं?

उत्तर- क्षेत्रवाद को बढ़ावा देने वाले दो कारक

1. भाषा, धर्म, संस्कृति जनजातिय पहचान
2. भौगोलिक संकेद्रण
3. क्षेत्रीय वंचन का भाव

**प्रश्न-4.** सामुदायिक पहचान किन मापदंडों के आधार पर बनती है?

उत्तर-

1. सामुदायिक पहचान व्यक्ति के जन्म तथा सम्बन्धों पर आधारित होती है। इसमें व्यक्ति की पंसद नापंसद शामिल नहीं होती।
2. सामुदायिक पहचान किसी अर्जित योग्यता या उपलब्धि के आधार पर नहीं होती।

**प्रश्न-5.** संस्कृतिकरण का अर्थ लिखिए।

**उत्तर-** जब निम्न जाति के लोग उच्च जातियों की जीवन पद्धति, आदर्श, मूल्य, अनुष्ठानत था विचारों आदि का अनुकरण करने लगे। तथा अपने आपको उच्च जाति में मिलाने की कोशिश करे तो उस प्रक्रिया को संस्कृतिकरण कहते हैं।

**प्रश्न-6.** विकेंद्रित लोकतंत्र से आप क्या समझते हैं?

**उत्तर-**

1. वह प्रक्रिया जिसमें राज्य की शक्तियों को ऊपर से लेकर नीचे तक विभाजित किया जाता है ताकि अवगत समस्याओं पर निर्णय लेने का अवसर मिले।
2. यह एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें महत्वपूर्ण निर्णय लेने के लिये किसी समूह या समुदाय के सभी सदस्य एक साथ भाग लेते हैं।

**प्रश्न-7.** ग्रामीण समाज में आधात्री (मैट्रिक्स) घटनाएँ किस प्रकार घटती हैं?

**उत्तर-** ऐसी आत्महत्याएँ मैट्रिक्स घटनाएँ बन गई हैं अर्थात् जहाँ कारकों की एक श्रृंखला मिलकर एक घटना बनती है।

1. कर्ज का बोझ उठाने में असमर्थ
2. फसल का न होना, सब्सिडी घटाना या हटाना।
3. नुकसान के कारण सामाजिक जिम्मेदारी उठाने में असमर्थ

**प्रश्न-8.** ‘समय की चाकरी’ औद्योगिक समाज को किस प्रकार प्रभावित करती है।

**उत्तर- समय की चाकरी**

1. औसतन 10-12 घंटे का कार्य दिवस
2. जब परियोजना की अंतिम सीमा आ जाती है तो कर्मचारी रात भर काम करते हैं जिसे ‘नाइट आउट’ कहते हैं।
3. लम्बे कार्य घंटों का होना, बाह्य स्त्रोतों की कार्य संरचना में अधिक कार्य का होना। कुछ हद तक इसका कारण भारत ओर अन्य ग्राहक देश के बीच भिन्नता का होना है।
4. काम को अंतिम रूप देने के लिये कर्मचारी को अतिरिक्त घंटे और दिनों तक काम करना पड़ता है।
5. कार्यकर्ता को अपने कार्य के घंटे नियत करने की छूट (फ्लैक्सी टाइम)

6. जब कर्मचारी के पास कार्य का दबाव नहीं होता तब भी वह अधिकारियों को कड़ी मेहनत दिखाने के लिए ऑफिस में देर तक रुक जाते हैं। (कोई दो)

**प्रश्न-9.** भूस्थानीकरण का क्या अर्थ होता है?

**उत्तर-**

1. भूमण्डलीय के साथ स्थानीय का मिश्रण। यह माना जाता है कि कुछ समझ बाद सब संस्कृतिया एक समान हो जायेगी।
2. भूमण्डलीकरण के कारण स्थानीय परम्पराओं के साथ-साथ भूमण्डलीकरण परम्पराये भी पैदा हो रही हैं।
3. मैकडोनाल्ड भी भारतीयों की परम्परा के अनुसार उत्पाद बेचता है। संगीत के क्षेत्र में भांगड़ा पोप, रिमिक्स गानों की लोकप्रियता बढ़ रही है।
4. एमटीवी चैनल वी, स्टार टीवी, कार्टून नेटवर्क, डिस्कवरी चैनल जैसे सभी विदेशी चैनल भारतीय भाषाओं का प्रयोग करते हैं।

**प्रश्न-10.** फोर्डवाद (फोर्डिज्म) में उत्पादन और सामान के क्रय विक्रय को किस प्रकार प्रभावित किया है?

**उत्तर- फोर्डवाद**

1. हेनरी फोर्ड ने शुरू किया।
2. उद्योगपतियों के द्वारा कामगार को बेहतर दिहाड़ी और समाज के लिये कल्याणकारी नीतियों को लागू किया गया।
3. कारों के उत्पादन को बढ़ाने के लिये एसेबंली लाइन पद्धति को अपनाया।

**प्रश्न-11.** निगम (कारपोरेट) संस्कृति ने समाज को कैसे परिवर्तित किया है?

**उत्तर-** निगम संस्कृति प्रबंधन सिद्धान्त की एक ऐसी शाखा है जो उत्पादकता तथा प्रतियोगिता को बढ़ावा देते हैं तथा फर्म के सभी सदस्यों को साथ लेकर विशेष संगठन की संस्कृति का निर्माण करते हैं।

1. इसमें कम्पनी के कार्यक्रम रीतिया तथा परम्पराएं शामिल हैं।
2. ये कर्मचारियों में वफादारी तथा एकता को बढ़ाती हैं।
3. वह यह भी बताती है कि काम करने का तरीका क्या है और उत्पादों को कैसे बढ़ावा दिया जाये। (कोई दो)

**प्रश्न-12.** किसान आन्दोलन के दो उदाहरण दीजिए।

**उत्तर-**

1. तिमागां आन्दोलन
2. बारदोली सत्याग्रह
3. चम्पारन सत्याग्रह (कोई दो)

**प्रश्न-13.** ऐसे दो कारण लिखिए जो दलित आन्दोलन के बढ़ने के लिये जिम्मेदार हैं?

**उत्तर-**

1. आत्मसम्मान तथा समानता का संघर्ष
2. मानव के रूप में पहचान प्राप्त करना
3. आर्थिक राजनैतिक तथा सामाजिक शोषण
4. अस्पृश्यता उन्मूलन
5. आत्मविश्वास एवं आत्म निर्णय के लिये संघर्ष (कोई दो)

**प्रश्न-14.** पर्यावरण सम्बन्धी आन्दोलन क्यों होते हैं?

**उत्तर-** आधुनिक काल में विकास पर अधिक बल दिया गया जिस कारण प्राकृतिक संसाधनों का अनियंत्रित उपयोग हुआ तथा प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक शोषण हुआ है यह एक पूरे संसार के लिये चिंता का विषय बन गया। पर्यावरण आन्दोलन इस कारण ही होते हैं। पर्यावरण आन्दोलन से सम्बन्धित उदाहरण।

**प्रश्न-15.** भारत में जनसांख्यिकी लाभांश की मुख्य विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

**उत्तर-** भारत में कार्यशील लोगों की (25 से 64 वर्ष) वर्तमान पीढ़ी अपेक्षाकृत बड़ी है युवा पीढ़ी कार्यशील और उद्यमी होते हैं अतः युवा पीढ़ी आर्थिक विकास के लिये बहुत सहायता देती है।

1. इसी कारण हमारा भारत आर्थिक विकास में अमेरिका, जापान आदि विकसित देशों का मुकाबला कर रहा है।
2. हमारे देश में लगातार स्वास्थ्य सुविधाओं के बढ़ने से लोग लंबा जीवन जी रहे हैं जीवन प्रत्याशा लगातार बढ़ रही है जिससे भारत उन्नति की ओर अग्रसर है।

**प्रश्न-16.** स्वतंत्रता के बाद आदिवासी संघर्ष के मुख्य मुद्दे क्या थे?

**उत्तर-**

1. सांस्कृतिक पहचान से सम्बन्धित मुद्दे।
2. बाहरी लोगों द्वारा शोषण
3. विकास परियोजनाओं के नाम पर बार-बार विस्थापन
4. भूमि तथा वन्य संपदाओं का अधिग्रहण
5. उपद्रवग्रस्त क्षेत्र घोषित करना
6. पर्याप्त मुआवजे और समुचित पुर्नवास की व्यवस्था किए बिना विस्थापित करना आदि।

**प्रश्न-17.** साम्प्रदायिकता अभी भी हमारी एकता और सामंजस्य के लिये एक चुनौती क्यों है?

**उत्तर-**

1. धार्मिक पहचान पर आधारित आक्रामक उग्रवाद।
2. उग्रवाद अपने आप में ऐसी अभिवृत्ति है जो अपने समूह को श्रेष्ठ समूह मानती है और अन्य समूह को निम्न अथवा विरोधी समझती है।
3. साम्प्रदायिकता एक आक्रमण राजनीतिक विचारधारा है जो धर्म से जुड़ी होती है।
4. साम्प्रदायिकता राजनीति से सरोकार रखती है धर्म से नहीं।
5. भारत में बार-बार साम्प्रदायिक तनाव फैलते हैं जो चिंता का विषय बना हुआ है। इसमें लूटा जाता है लोगों की जान ली जाती है।
6. सम्प्रदायवादी आक्रमण राजनीतिक पहचान बनाते हैं और ऐसे व्यक्ति की निंदा या आक्रमण करने को तैयार रहते हैं जो उनकी पहचान का साझेदार नहीं होता।

**प्रश्न-18.** जातिवाद ने राजनीति को कैसे प्रभावित किया है?

**उत्तर-**

1. जातिवाद चुनावी राजनीति का केन्द्र बिन्दु बना हुआ है।

2. आजकल राजनीति में जातिगत वोटों का बोलबाला है। जातिवाद वोट बैंक को बढ़ावा देता है।
3. प्रतिनिधियों का चुनाव उनकी काबिलियत (योग्यता) पर नहीं बल्कि जाति पर आधारित होता है।
4. जातिवाद के कारण राजनीति में विभिन्न जातियों में दुश्मनी बढ़ी है।
5. जातीवाद सांप्रदायिक दंगों को भी बढ़ावा देता है।
6. जाति एक दबाव समूह का काम करती है।
7. जाति पर आधारित राजनीतिक दलों का निर्माण होता है।

**प्रश्न-19.** पंचायत के अधिकार एवं उत्तरदायित्वों को विस्तार से स्पष्ट कीजिए।

**उत्तर-**

1. आर्थिक विकास के लिये योजनाएँ व कार्यक्रम बनाना।
2. शुल्क, यात्री कर, जुर्माना तथा अन्य कर लगाना व एकत्र करना।
3. जन्म तथा मृत्यु के आकड़े इकट्ठे करना।
4. सड़कों का निर्माण करना।
5. लघु तथा कुटीर उद्योगों का विकास करना।
6. शमशानों तथा कब्रिस्तानों का रखरखाव करना।
7. परिवार नियोजन का प्रचार
8. कृषि कार्यों का विकास
9. ग्रामीण विकास और बाल विकास योजना का संचालन करना (कोई 4)

**प्रश्न-20.** स्वतन्त्रता के पश्चात भारतीय कृषि भूमि सुधारों के प्रभावों को स्पष्ट कीजिए।

**उत्तर-** भूमि सुधारों के प्रभाव

1. जमींदारी व्यवस्था का समापन
2. भूमि हृदबंदी अधिनियम

3. पट्टेदारी का उन्मूलन या नियत्रण
  4. भूमि चकबंदी
  5. भूमि स्वामित्व का रिकार्ड
  6. बेनामी बदल
- (कोई चार विस्तारपूर्वक)

### **अथवा**

**प्रश्न-21.** स्वतंत्रता के पश्चात् ग्रामीण समाज में आये परिवर्तनों को संक्षेप में प्रकाश डालो।

**उत्तर-**

1. गहन कृषि के कारण कृषि मजदूरों का बढ़ना।
  2. मुक्त दिहाड़ी मजदूरों के वर्ग का सामने आना।
  3. अनाज के स्थान पर नगद भुगतान
  4. पारंपरिक बंधनों में शिथिलता अथवा भूस्वामी एवं किसान व मजदूर के पुश्टैनी सम्बन्धों में कमी आना।
  5. नये उद्यमी समूहों का उदय
  6. कृषि की आधुनिक पद्धतियों का विकास
  7. नये क्षेत्रीय अभिजात वर्गों का उदय
  8. कृषि में व्यापारीकरण के कारण ग्रामीण क्षेत्र का विस्तृत अर्थव्यवस्था से जुड़ना
- (कोई चार विस्तार से)

**प्रश्न-21.** प्रवासी मजदूरों द्वारा झेली जा रही समस्याओं की चर्चा कीजिए।

**उत्तर-**

1. बढ़ती असमानताएँ
2. न्यूनतम मजदूरी
3. कार्य की असुरक्षा
4. बढ़े काम के घंटे

5. सरक्षण से शोषण की ओर बदलाव
  6. बच्चों के स्वास्थ्य, शिक्षा, चिकित्सा आदि का न्यूनतम लाभ
  7. बाध्यकारी अनुबंध इत्यादि
- (कोई चार)

### **अथवा**

**प्रश्न-21.** भारत में नौकरी की भर्ती के प्रमुख रूपों की विवेचना कीजिए।

**उत्तर-**

1. रोजगार कार्यालय
2. समाचार पत्र
3. इंटरनेट
4. मोबाइल फोन
5. व्यक्तिगत सम्बन्ध
6. बाह्य स्त्रोत
7. रेडियो

**प्रश्न-22.** जाति संस्था कई मामलों में दृश्य और अदृश्य दोनों है। उपयुक्त उदाहरणों के साथ इस कथन की विवेचना कीजिए।

**उत्तर- अदृश्य**

1. जाति व्यवस्था उच्च जातियों, नगरीय व मध्य तथा उच्च वर्गों के अदृश्य होती जा रही है।
2. ऊंची जाति के लोग राजकीय क्षेत्र की नौकरियों का लाभ उठा रहे हैं।
3. इस समूह के लिये सार्वजनिक जीवन में जाति की कोई भूमि नहीं है। वह व्यक्तिगत क्षेत्र तक ही सीमित है।

**दृश्य**

1. अनुसूचित जातियों और जनजातियों तथा पिछड़े वर्ग के लिये जाति और अधिक दिखने वाली हो गई।

2. आरक्षण की नीतियों और राजनैतिक दबाव में आकर राज्य द्वारा उन्हे दिये गये अन्य संरक्षण उनके जीवन को बचाने वाले उपाय है।
3. उच्च जाति समूह के साथ प्रतिस्पर्धा में उतरने के लिये वो अपनी जातिय पहचान को नहीं छोड़ सकते।

### **अथवा**

**प्रश्न-20.** जाति व्यवस्था किन नियमों ओर विनियमों को अपने सदस्यों पर लागू करती है।

#### **उत्तर- जाति की विशेषताएँ**

1. जाति जन्म से निर्धारित होती है।
2. जाति में विवाह सम्बन्धी कठोर नियम शामिल होते हैं।
3. पारम्परिक तौर पर जातियाँ व्यवसाय से जुड़ी होती हैं।
4. जातियों में आपनी उपविभाजन भी होता है।
5. भोजन तथा सामाजिक मेलजोल पर प्रतिबंध होता है।
6. जाति में श्रेणी एवं प्रस्थिति के एक अधिक्रम में संयोजित अनेक जातियों की एक व्यवस्था शामिल है। (शुद्धता और अशुद्धता)

**प्रश्न-23.** उदारीकरण की नीति द्वारा हमारे समाज में परिवर्तन आया है। विस्तार से समझाइए।

#### **उत्तर- उदारीकरण की नीति से समाज में निम्न परिवर्तन हुए।**

1. सरकारी विभागों का निजीकरण
2. पूँजी, व्यापार व श्रम में सरकारी हस्तक्षेप का कम होना
3. विदेशी वस्तुओं के आयात शुल्क को कम करना
4. वैश्विक बाजार के साथ प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देना
5. बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का आगमन
6. रोजगार का बढ़ना
7. सभी महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आर्थिक सुधार जैसे कृषि व्यापार, औद्योगिकी, विदेशी निवेश आदि।

8. वैश्विक बाजार से वैश्विक गाँवों तक का एकीकरण  
(कोई छः की व्याख्या)

**प्रश्न-24.** उपनिवेशवाद ने नकरीकरण को बढ़ावा देने के लिये भारतीय समाज को किस प्रकार से सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक रूप से प्रभावित किया है।

#### उत्तर- सामाजिक

1. पश्चिमी शिक्षा
2. ग्रामीण शिल्प, परंपरागत उद्योगों का पतन
3. नये सामाजिक समूहों का उदय
4. पुराने शहरी केन्द्रों का पतन
5. मजदूरों को चाय बागानों तथा अन्य औपनिवेशिक क्षेत्रों में भेजना।
6. संयुक्त परिवार टूट कर एकल परिवार में बदल गये।

#### आर्थिक

1. परंपरागत रूप से होने वाला रेशम और कपास गिरता चला गया।
2. समुद्री तटीय शहर उभरे-आयात निर्यात आसान हुआ
3. शहरों में जहाँ उद्योग लगाये गये थे वहाँ लोगों की जनसंख्या बढ़ने लगी।
4. ब्रिटिश औद्योगिकरण के कारण लोग रोजगार की तलाश में शहरों की तरफ जाने लगे क्योंकि उनके परंपरागत उद्योगों का पतन हो गया।

#### राजनैतिक

1. हमारे देश में संस्थापित संसदीय, शिक्षा व्यवस्था ब्रिटिश प्रारूप व प्रतिमानों पर आधारित है।
2. पाश्चात्य शिक्षा से राष्ट्रवाद का उदय हुआ।
3. हमारे सरकारी भवन ब्रिटिश संरचना पर है।

**प्रश्न-25.** नीचे दिये गये अनुच्छेद को पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

जगह तंग है- झोपड़ा किराए का है, जिसमें संगीत भरे टेप और जंग लगे बिजली के

उपकरणों का ढेर लगा है और जो मरम्मत सेवा प्रदान करने वाली राघव की दुकान के साथ-साथ रेडियो स्टेशन का कार्य भी करती है।

राघव पढ़ा लिखा न हो परंतु उसके स्वदेशी एफ.एम. स्टेशन ने उसे स्थानीय राजनेताओं से भी अधिक लोकप्रिय बना दिया है। राघव का रेडियो के साथ प्रेस प्रसंग 1997 में प्रारम्भ हुआ जब उसने एक स्थानीय मरम्मत की दुकान में एक मिस्त्री के रूप में काम करना प्रारम्भ किया था। जब दुकान का मालिक वह क्षेत्र छोड़ कर चला गया तो एक कैंसर पीड़ित खेतिहार मजदूर के बेटे राघव ने एक मित्र के साथ मिल कर वह झोपड़ी ले लीं 2003 में किसी समय राघव ने जो तब तक रेडियो के बारे में काफी कुछ जान चुका था। गरीबी की मार से पीड़ित बिहार राज्य में, जहाँ बहुत से क्षेत्रों में बिजली नहीं है। सस्ते बैटरी से चलने वाले ट्रांजिस्टर ही मनोरजन का सबसे लोकप्रिय साधन है। “इस विचार को पक्का करने ओर ऐसी किट तैयार करने में, जो एक निर्धारित रेडियो आवृत्ति रेडियोफिक्वेंसी पर मेरे कार्यक्रम प्रसारित कर सके, मुझे काफी लंबा समय लगा। किट पर ₹ 50 लागत आई, राघव कहता है। प्रसारण किट एक एंटीना के साथ लंबे बाँस पास के एक तीनमंजिला अस्पताल पर लगी है। एक लम्बा तार उस प्रसारण यंत्र को नीचे राघव के रेडियो झोपड़े में लगे घरघराहट करने वाले, घर के बने पुराने स्टीरियो कैसेट प्लेयर से जोड़ता है। तीन अन्य जग लगे, स्थानीय रूप से बने बैटरी चालित टेपरेकार्डर रंगीत तारों और एक बेतार (कॉर्डलेस) माइक्रोफोन के साथी इससे जुड़े हैं।

**प्रश्न-1.** पिछले कुछ वर्षों में मीडिया ने किन परिवर्तनों को महसूस किया है?

**प्रश्न-2.** मीडिया समाज के कमजोर वर्गों का प्रतिनिधित्व करने में कैसे सफल हो सकता है।

**उत्तर-** सही उत्तर

**उत्तर-** सही उत्तर

नीचे दिए गए अनुच्छेद को पढ़िये और प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

हिंद स्वराज्य में गांधी जी और मशीन 1924- मैं मशीनों के प्रति पागलपन का विरोधी हूँ, लेकिन मशीनों का विरोधी नहीं हूँ। मैं उस सनक का विरोधी हूँ जो मजदूरों को कम करने की मशीने हैं। आदमी श्रम से बचने के लिए मजदूरों को कम करते जाएँगे जबकि हजारों मजदूरों को बिना काम के सड़कों पर भूख से मरने के लिए फेंके न दिया जाए। मैं समय और मजदूर दोनों को बचाना चाहता हूँ। मानव जाति के विखंडन के लिए नहीं बल्कि सबके लिए। मैं संपत्ति को कुछ हाथों में एकत्रित नहीं होने देना चाहता, बल्कि उसे सबके हाथों में देखना चाहता हूँ। 1934- एक राष्ट्र के रूप में जब हम चर्खे को अपनाते हैं तो हम न केवल

बेरोज़गारी की समस्या का समाधान करते हैं बल्कि यह भी घोषित करते हैं कि हमारी किसी भी राष्ट्र का शोषण करने की इच्छा नहीं है, और हम अमीरों द्वारा गरीबों के शोषण को भी समाप्त करना चाहते हैं।

**प्रश्न-1.** उदाहरण द्वारा बताइए कि मशीने किस तरह कामगारों के लिए समस्या पैदा करती हैं?

**प्रश्न-2.** गाँधी जी के दिमाग में क्या विकल्प था? चर्खे को अपनाने से शोषण को कैसे रोका जा सकता है?

नीचे दिए गए अनुच्छेद को पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

यह एक रोचक तथ्य है कि संस्कृत भाषा का सबसे महान व्याकरणाचार्य, पाणिनी, जिसने ईसा पूर्व चौथी शताब्दी के आसपास संस्कृत व्याकरण और स्वर विज्ञान को सुव्यवस्थित एवं रूपांतरित किया था, वे अफगान मूल के थे। सातवीं शताब्दी के चीनी विद्वान थी जिंग ने चीन से भारत आते हुए मार्ग ने जावा (श्रीविजय शहर में) रुककर संस्कृत थी। अतः क्रियाओं का प्रभाव थाईलैंड से मलाया, इंडो-चाइना, इंडोनेशिया, फिलिपिंस, कोरिया और जापान... तक समस्त एशिया महाद्वीप की भाषाओं और शब्दावलियों में दृष्टिगोचर होता है। हमें 'कूपमंटूक' (कुएँ में रहने वाले मेंढक) से संबंधित एक नीतिकथा में एकाकीकरणवाद (आइसोलेशनिज्म) के विरुद्ध एक चेतावनी मिलती है। यह नीतिकथासंस्कृत के अनेक प्राचीन ग्रंथों में बार-बार दोहराई गई है। 'कूपमंडूक' एक मेंटक है जो जीवनभर एक कुएँ में रहता है; वह ओर कुछ नहीं जानता है ओर बाहर की हर चीज पर शक करतका है। वह किसी से बात नहीं करता और किसी के साथ किसी भी विषय पर तर्क-वितर्क नहीं करता और किसी के साथ किसी भी विषय पर तर्क-वितर्क नहीं करता। वह तो बस बाहरी दुनिया के बारे में अपने दिल में गहरा संदेह पाले रखता है। विश्व का वैज्ञानिक, सांस्कृतिक और आर्थिक इतिहास वास्तव में बहुत ही सीमित होता है यदि हम भी कूपमंडूक की तरह जीवन बिताते।

**प्रश्न-1.** क्या भूमंडलीकरण के अंतः संबंध विश्व और भारत के लिए नए हैं? उदाहरण देते हुए उत्तर की पुष्टि कीजिए।

**प्रश्न-2.** “भूमंडलीकरण ने आधुनिक जीवन को प्रभावित किया है”। क्या आप इस कथन से सहमत हैं?

नीचे दिए गए अनुच्छेद को पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

दलिज जाति की कलावती चुनाव लड़ने के संबंध में चिंतित थी। आज वह एक पंचायत

सदस्य है और यह अनुभव कर रही है कि जब से वह पंचायत सदस्य बनी है तब से उसका विश्वास और आत्मसम्मान बढ़ गया है। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि अब उसका अपना एक नाम है। पंचायत की सदस्य बनने से पहले वह ‘रामू की माँ’ या ‘हीरालाल की पत्नी’ के नाम से जानी जाती थी। यदि वह ग्राम-प्रधान पद का चुनाव हार गई तो उसे अनुभव होगा कि उसकी सखियों की नाक कट गई।

**प्रश्न-1.** पंचायतों को जमीनी स्तर लोकतंत्र में परिवर्तन लोने वाली इकाई के रूप में क्यों माना जाता है?

**प्रश्न-2.** पंचायतों की शक्तियाँ और उत्तरदायित्व का उल्लेख कीजिए।

नीचे दिए गए अनुच्छेद को पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

अल्पसंख्यकों को संरक्षण देने के विषय में डा. अम्बेडकर के विचारः उन कट्टरपथियों को, जिनके मन में अल्पसंख्यकों के संरक्षण के विरुद्ध एक तरह का दुराग्रह घर कर गया है, मैं दो बाते करना चाहता हूँ। एक यह कि अल्पसंख्यक वर्ग एक ऐसी विस्फोटक शक्ति है जो यदि भड़क उठे तो राज्य की संपूर्ण रचना को तार-तार कर देगी। यूरोप का इतिहास इस तथ्य का ठोस एवं भयावह साक्ष्य प्रस्तुत करता है। दूसरी बात यह है कि भारत के अल्पसंख्यक अपने अस्तित्व को बहुसंख्यकों के हाथों में सौंपने के लिए सहमत हुए हैं। आयरलैंड के विभाजन को रोकने के लिए चली बातचीत के इतिहास में, रेडमंड ने कारसन से कहा, “आप प्रोटेस्टेंट अल्पसंख्यक के लिए चाहे जो सुरक्षा माँग ले, हमें आयरलैंड को संयुक्त, अविभाजित रखना है।” कारन का उत्तर था “लानत है तुम्हारी सुरक्षा पर, हम तुम्हारे द्वारा शासित होना ही नहीं चाहते।” भारत में अल्पसंख्यकों के किसी भी वर्ग ने यह रूख नहीं अपनाया।

**प्रश्न-1.** ‘अल्पसंख्यक’ (वर्ग) क्या होता है?

**प्रश्न-2.** अल्पसंख्यकों को भारत में संरक्षण की क्यों जरूरत होती है?

## सीनियर स्कूल सर्टिफिकेट परीक्षा मार्च- 2017

---

### **समाजशास्त्र**

---

**प्रश्न-1.** पश्चिमीकरण शब्द से आप क्या समझते हैं?

**उत्तर-**

1. भारतीय समाज और संस्कृति मे लगभग 150 सालों के ब्रिटिश शासन के परिणामस्वरूप आया परिवर्तन अथवा,
2. पश्चिमी जीवन शैली को अपनाना पश्चिमी दृष्टिकोण से सोचना तथा पश्चिमीकरण मे किसी संस्कृति विशेष के बाहा तत्वों अनुकरण की प्रवृत्ति भी होती है।  
(कोई अन्य उपयुक्त बिन्दु)

**प्रश्न-2.** एक औद्योगिक प्रतिष्ठान में मैनेजर मजदूरों को अधिक उत्पादन के लिए कैसे प्रेरित करेगा?

**उत्तर-**

1. काम के घण्टों में वृद्धि।
2. निर्धारित दिए गए समय में उत्पादित वस्तु की मात्रा को बढ़ा देना।

**प्रश्न-3.** सूचना एवं मनोरंजन शब्द का अर्थ लिखिए।

**उत्तर-** समाचार पत्र प्रायःसूचना और मनोरंजन दोनों के मिश्रण का समर्थन करते हैं ताकि सभी आयु वर्ग के पाठकों की इसमें रुचि बनी रहें। उनकी इस प्रवृत्ति को 'इंफोटेनमेंट' (सूचनारंजन) कहते हैं।

**प्रश्न-4.** उपयोग के स्वरूप प्रतिष्ठा का प्रतीक कैसे बन जाता है?

**उत्तर-** लोगों और उनके द्वारा प्रयोग की जाने वाली वस्तुओं के सम्बन्धों को 'प्रतिष्ठा का प्रतीक' कहते हैं। लोगों का पहनावा, खान-पान, निवास, मोटर-गाड़ी उनकी प्रतिष्ठा के प्रतीक होते हैं।

**प्रश्न-5.** औपनिवेशिक शासकों को तटीय नगर पसंद थें?

**उत्तर-** क्योंकि तटीय नगर मुम्बई, को कोलकाता और चेन्नई से ब्रिटिश सरकार उत्पादित कपास को निर्यात कर सके और बना हुआ कपड़ा आयात कर सकें। तटीय नगरों से व्यापार आसानी से हो जाता है।

**प्रश्न-6.** समाचार पत्र उघोग में प्रौद्योगिकी क्या परिवर्तन लाती है?

**उत्तर-**

- पर्सनल कम्प्यूटरों की नेटवर्क व्यवस्था।
- लोकल एरिया नेटवर्क (लैन)।
- समाचार निर्माता के लिए न्यूजमेकर जैसे सोफ्टवेयर का प्रयोग।
- छोटे टेपरिकार्डर एंव लेपटॉप।
- मोबाइल एंव सेटेलाइट फोन
- मॉडम जैसे अन्य नए उपकरण इत्यादि।  
(कोई दो बिन्दु समझाइए)

### **अथवा**

- आज का मीडियम संस्थान समाचार संकलन हेतु फोन से लेकर लेपटॉप तक का उपयोग कर रहे हैं।
- समाचार पत्रों के कार्यालय कम्प्यूटर व इन्टरनेट से लैंस हैं।
- संवाददाता से लेकर संपादक तक अपने पी.सी. से जुड़े हुए हैं।
- समाचारों को भविष्य के लिए सुरक्षित रखने हेतु सीडी में बेक-अप लिया जाता है।
- आधुनिक प्रौद्योगिकी के माध्यम से ही समाचार पत्रों या समाचार चैनलों ने अपनी वेबसाइटें भी स्थापित की हैं, जिन्हें न्यूज पोर्टल के रूप में लाना जाता है।  
(कोई दो बिन्दु)

**प्रश्न-7.** बिहार में रेशम बुनने वाले और कातने वाले भूमंडलीकरण से किस प्रकार प्रभावित हैं?

**उत्तर-**

- जब चीनी और कोरियाई रेशम के धागों ने बाजार में प्रवेश किया तब रेशम काटने और धागा बनाने वाली औरतों का धन्धा चौपट हो गया।
- बुनकर एंव उपभोक्ता इस नए धागे को अधिक पसंद करते थे क्योंकि यह सस्ता और चमकीला था।

**प्रश्न-8.** भारतीय लोकतंत्र में दबाव समूह क्या भूमिका निभाते हैं?

**उत्तर-** ये समूह सरकार से अपनी बात मनवाने की कोशिश करते हैं। वैधानिक अंगों से अपनी माँगों को पूरा करवाने की कोशिश करते हैं।

**प्रश्न-9.** विरोधी आन्दोलन क्या होते हैं? उदाहरण दीजिए।

**उत्तर-** यथापूर्व स्थिति को बनाए रखने के लिए प्रतिरोधी आन्दोलन जन्म लेते हैं—जबकि सामाजिक आन्दोलन सामाजिक परिवर्तन लाना चाहते हैं।

**उदाहरण :**

- जब राजा राम मोहन राय ने सती प्रथा का विरोध किया तो सती प्रथा के प्रतिरक्षकों ने प्रतिरोध किया।
- महिलाओं की शिक्षा के लिए भी।
- विधवा पुर्नविवाह के लिए भी।
- निम्न जाति के बच्चों का स्कूल में नाम लिखवाना।

(कोई एक उदाहरण)

**प्रश्न-10.** विरोध प्रदर्शन के विभिन्न प्रकार क्या हैं?

**उत्तर-**

- मोमबत्ती और मशाल जुलूस
- काले कपड़े का प्रयोग
- नुक्कड़ नाटक
- गीत, कविताएँ

- सत्याग्रह, अनशन, भूख हड़ताल आदि।  
(कोई दो)

**प्रश्न-11.** 19 वीं शताब्दी के समाज सुधारकों की मुख्य चिंताएँ क्या थीं?

**उत्तर-**

- सामाजिक बुराइयों का उन्मूलन
  - विधवा पुर्णविवाह
  - बाल विवाह
  - जाति और लिंग भेद
  - धार्मिक भेद भाव
- (कोई दो)

**प्रश्न-12.** प्रोधौगिकी क्षेत्रों में विज्ञापन होने से भूमंडलीय समुदायों में क्रांतिकारी परिवर्तन किस प्रकार हुए?

**उत्तर-**

- समाचार पत्र, रेडियो, टेलीविजन में विज्ञापनों की भरमार
  - इससे विभिन्न प्रकार के मीडिया अधिक से अधिक मुनाफा कमाने लगे।
- (कोई अन्य उपयुक्त बिन्दु)

**प्रश्न-13.** INGOS के उदाहरण दीजिए?

**उत्तर-**

- ग्रीन पीस
  - डि रेड क्रॉस
  - एमनेस्टी इंटरनेशनल
- (कोई दो)

**प्रश्न-14.** जनसंचार किस प्रकार हमारे दैनिक जीवन का एक अंग है?

**उत्तर-** जनसंचार सामान्य जनों को सूचना पहुँचाने की एक विस्तृत विधि है। इसके अन्तर्गत समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ, टेलीविजन, फिल्में, रेडियों, फोन, मोबाइल, कम्प्यूटर, इन्टरनेट आदि सभी उपकरणों का समावेश होता है। ये सभी उपकरण आजकल हमारे दैनिक जीवन के अंग हैं।

**प्रश्न-15.** राष्ट्रीय पहचान को स्थापित करने के लिए की गई आत्मसातीकरण और एकीकरण की राजनीति की व्याख्या कीजिए।

**उत्तर-**

- संपूर्ण शक्ति को ऐसे मंचों में केन्द्रित करना जहाँ प्रभावशाली समूह बहुसंख्यक हो और स्थानीय या अल्पसंख्यक समूहों की स्वायत्त को मिटाना।
- प्रभावशाली समूह की परंपराओं पर आधारित एक एकीकृत कानून एवं न्याय व्यवस्था को थोपना और अन्य समूहों द्वारा प्रयुक्त वैकल्पिक व्यवस्थाओं को खत्म कर देना।
- प्रभावशाली समूह की भाषा को ही एकमात्र राजकीय ‘राष्ट्रभाषा’ के रूप में अपनाना और उसके प्रयोग को सभी सार्वजनिक संस्थाओं में अनिवार्य बना देना।
- प्रभावशाली समूह की भाषा और संस्कृति को राष्ट्रीय संस्थाओं के जरिए, जिनमें राज्य नियंत्रित, जनसंपर्क के माध्यम और शैक्षिक संस्थाएँ शामिल हैं, बढ़ावा देना।
- प्रभावशाली समूह के इतिहास शूरवीरों और संस्कृति को सम्मान प्रदान करने वाले राज्य प्रतीकों का अपनाना, राष्ट्रीय पर्व, छुट्टी का ध्यान रखना।
- अल्पसंख्यक समूहों और देशज लोगों से जमीनों, जंगल एवं मत्स्य क्षेत्र छीनकर उन्हे ‘राष्ट्रीय संसाधन’ घोषित कर देना।

(कोई चार)

**प्रश्न-16.** बाजार के समाजशास्त्रीय और अर्थशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में भिन्नता बताइए।

**अथवा**

औपनिवेशवाद के आगमन से भारत की अर्थव्यवस्था में बड़ी उथल-पुथल कैसे आई?

**उत्तर-**

- **समाजशास्त्रीय** : बाजार को एक सामाजिक संस्था के रूप में मानते हैं जिसमें बातचीत, रिश्तेदारों से भेंट, गप्पे मारना, जानकारियों का प्रसार, विवाह तथ करना इत्यादि शामिल है।
- **अर्थशास्त्रीय** : बाजार को एक आर्थिक संस्था मानते हैं जिसमें व्यापार खरीदना-बेचना, वितरण, मुद्रा संबंधित प्रक्रियाएँ इत्यादि आती हैं।

### अथवा

उपनिवेशवाद के आते ही भारतीय अर्थव्यवस्था में आए बदलाव-

- ब्रिटिश औद्योगिकरण से भारत के कुछ क्षेत्रों में औद्योगिक क्षरण हुआ (डी-इंडस्ट्रीयलइजेशन)
- उपनिवेशवाद के बाद भारत कच्चे माल और कृषक उत्पादों का स्त्रोत और उत्पादित सामानों का उपभोक्ता बना। इससे पहले भारत बने-बनाए सामानों के निर्यात का मुख्य केन्द्र था।
- व्यापार और कृषि उदाहरण- हस्थकरघा, ग्रामीण शिल्प इत्यादि जैसे उत्पादन में कभी आई।
- बम्बई और मद्रास जैसे नगरों के औद्योगिक क्षेत्र में बदल जाने से उनका आधुनिकीकरण, विकास और भारी फैलाव हुआ।  
(कोई अन्य उपयुक्त बिन्दु)

**प्रश्न-17.** उपनिवेशवाद के दौरान 'राष्ट्र-राज्य' प्रमुख राजनैतिक स्वरूप बन गए। स्पष्ट कीजिए।

**उत्तर-**

- एक राष्ट्र एक ही राजनैतिक व्यवस्था के अन्तर्गत स्वेच्छता से रहने का प्रयत्न करने वालों का एक ऐसा सांस्कृतिक समुदाय है जो नैतिक भावनाओं के शक्तिशाली सूत्रों द्वारा आबद्ध होता है।
- उपनिवेशवाद के दौरान पूरा देश राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत था और ब्रिटिश शासन के विरुद्ध था।
- देश अंग्रेजों से आजादी चाहता था। नेताओं ने घोषणा की-स्वराज्य मेरा जन्म अधिकार है।

- राष्ट्र-राज्य राष्ट्रीयता की उदय के साथ नजदीकी से जुड़े हुए है।  
(कोई अन्य उपयुक्त बिन्दु)

**प्रश्न-18.** ग्रामीण लोगों को उनकी आवाज देने में 73वाँ संशोधन बहुत महत्वपूर्ण है। स्पष्ट कीजिए।

**उत्तर-**

- इस संशोधन में 20 लाख से अधिक जनसंख्या वाले प्रत्येक राज्य में त्रिस्तरीय पंचायत होगी।
- प्रत्येक पाँच वर्षों में इसके सदस्यों का चुनाव होगा।
- इसमें अनुसूचित जाति तथा जनजाति के लिए निश्चित स्थान आरक्षित किए गए।
- महिलाओं के लिए 33% सीटें आरक्षित की गई जिनमें 17% सीटें अनुसूचित जाति तथा जनजाति की थी।
- पूरे जिले में विकास के लिए योजना समिति गठित की गई।

**प्रश्न-19.** नागरिक समाज/समिति संगठनों की क्या विशेषताएँ हैं?

### अथवा

सांस्कृतिक विभिन्नता को बढ़ावा देना व्यवहारिक और सैद्धान्तिक दोनों अर्थों में एक अच्छी नीति है। भारत को एक राष्ट्र राज्य के रूप में लेते हुए इस कथन का औचित्य सिद्ध कीजिए।

**उत्तर-**

- नागरिक समाज उस व्यापक कार्यक्षेत्र को कहते हैं जो परिवार के निजी क्षेत्र से परे होता है, लेकिन राज्य और बाजार दोनों क्षेत्र से बाहर होता है।
- नागरिक समाज में स्वैच्छिक संगठन होते हैं।
- यह सक्रिय नागरिकता का क्षेत्र है जहाँ व्यक्ति मिलकर संस्थाएँ (NGDS) राजनीतिक दल, मीडिया, श्रमिक संघ आदि।
- नागरिक समाज द्वारा उठाए गए मुद्दे पर्यावरण की सुरक्षा, स्त्रियों के प्रति हिंसा, जनजाति की भूमि की लड़ाई, प्राथमिक शिक्षा में सुधार आदि।

## अथवा

- भारतीय राष्ट्र-राज्य विश्व मे सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से अत्यधिक विभिन्नताओं वाला देश है।
- यहाँ विभिन्न धर्म तरह तरह के विश्वास और व्यवहार पाए जाते हैं।
- यहाँ अत्याधिक/अधिकतर जनसंख्या विभिन्न भाषाएँ और बोलियाँ बोलती है।
- समुदायिका पहचानों के साथ राष्ट्र-राज्य के संबंधों की दृष्टि से भारत की स्थिति न तो आत्मसातकरणवादी और न ही एकीकरणवादी की है।
- संविधान ने यह घोषणा की है कि भारत एक धर्म-निरपेक्ष राज्य होगा पर धर्म, भाषा और अन्य ऐसे कारकों को सार्वजनिक क्षेत्र मे पूरी तरह निष्कासित नहीं किया गया है।
- अंतर्राष्ट्रीय मानकों की दृष्टि से मापा जाए तो अल्पसंख्यक धर्मों का अत्यंत प्रबल संवैधानिक सुरक्षा प्रदान की गई है। भारत की समस्या यह है कि यहाँ कानूनों या सिद्धान्तों की तो कोई कमी नहीं है बल्कि उनके पालन या व्यवहार मे थोड़ी कमी है।  
(कोई अन्य बिन्दु)

**प्रश्न-20.** व्यापार संघ/मजदूर संघ द्वारा मजदूरों की जिन्दगी में आए परिवर्तनों की व्याख्या कीजिए।

**उत्तर-**

- किसी भी मिल, कारखानों मे मजदूरों के हितो की रक्षा करने के लिए मजदूर संघ का गठन किया जाता है। सभी मजदूर इसके सदस्य होते हैं।
- मजदूर संघ द्वारा मजदूरों की आर्थिक स्थिति में सुधार आया है। जैसे वेतन में वृद्धि
- दूर्घटना की स्थिति में मजदूरों को पैसा तथा इलाज की सुविधा मिलने लगी है।
- मजदूरों को बोनस, फंड आदि भी मिलने लगा है।
- मजदूरों के काम करने के घण्टे भी निर्धारित किए गए हैं। उनकी कर्य दशाओं में सुधार आया है।

(कोई अन्य बिन्दु)

**प्रश्न-21.** नए सामाजिक आंदोलन पुराने सामाजिक आंदोलनों से किस तरह भिन्न हैं?

**उत्तर-** पुराने सामाजिक आंदोलन

- राजनीतिक दलों के दायरे में काम करते थे।
- राजनीतिक दलों की केन्द्रीय भूमिका होती थी।
- कुछ क्षेत्रों तक ही सीमित थे।
- मुद्रे थे—जैसे सामाजिक बुराइयों का अंत, महिलाओं की शिक्षा, जातिगत भेदभाव आदि

नए सामाजिक आंदोलन

- राजनीतिक दलों के दायरे से बाहर थे।
- गैर दलीय राजनीतिक संगठन सम्मिलित हुए। ताकि वो राज्य पर अपना दबाव डाल सके।
- अंतर्राष्ट्रीय फैलाव।
- जीवन की गुणवत्ता जैसे-पर्यावरण के बारे में आदि।

**प्रश्न-22.** सामाजिक स्तरीकरण के तीन मूल सिद्धान्तों का उदाहरण सहित विश्लेषण कीजिए।

**उत्तर-**

- सामाजिक स्तरीकरण व्यक्तियों के बीच की विभिन्नता का प्राकर्य नहीं बल्कि समाज की विशिष्टता है।
- सामाजिक स्तरीकरण पीढ़ी-दर पीढ़ी बना रहता है।
- सामाजिक स्तरीकरण को विश्वास या विचारधारा द्वारा समर्थन मिलता है।

(तीन बिन्दु व्याख्या सहित)

**प्रश्न-23.** हरित क्रांति के सामाजिक परिणामों पर प्रकाश डालिए।

**उत्तर-**

- 1960-70 के दशक में कृषि आधुनिकरण का सरकारी कार्यक्रम था जिसमें अर्थिक सहायता, अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा दी गई थी तथा अधिक उत्पादकता वाले संकर बीजों के साथ कीटनाशक, खादों तथा किसानों के लिए अन्य निवेश पर केन्द्रित थी।
- इस क्रांति के कारण मध्यम तथा बड़े किसान ही नई तकनीक का लाभ उठासके।
- हरित क्रांति मुख्य रूप से गेहूँ तथा चावल उत्पाद करने वाले क्षेत्रों पर ही लक्षित थी।
- हरित क्रांति कुछ क्षेत्रों में जैसे-पंजाब, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, तटीय आन्ध्रा प्रदेश तथा तमिलनाडु के कुछ हिस्सों में चली।
- नई तकनीक द्वारा कृषि उत्पादकता में अत्यधिक वृद्धि हुई।
- धनी किसान भू-धारकों की दिशा और बिगड़ गई।
- कृषि मजदूरों की माँग बढ़ गई।
- किसान बाजार पर निर्भर हो गए हैं।
- कुछ क्षेत्रों में अधिक विकास नहीं हो पाया जैसे बिहार, पूर्वी उत्तर प्रदेश, तेलंगाना आदि।
- भारतीय किसानों की पारम्परिक जानकारी लुप्त होती जा रही है।

**प्रश्न-24.** मातृसत्तात्मक समाजों में पुरुषों और महिलाओं द्वारा झेले जा रहे संरचनात्मक तनावों की व्याख्या कीजिए।

अथवा

आज जनजातीय पहचान के अभिकथन के पीछे क्या कारण हैं।

**उत्तर-**

- मातृसत्तात्मक समाजों में सत्ता माता के हाथ में होती है। परम्परा के अनुसार पुरुष विवाह के बाद अपनी पत्नी के घर रहता है।
- उदाहरण- खासी जनजाति मातृवंशानुक्रम संगठन का प्रतीक है। वंश परम्परा के अनुसार उत्तराधिकार भी पुत्र को प्राप्त न होकर पुत्री को ही प्राप्त होता है।

- माता का भाई माता की पुश्तैनी सम्पति की देखरेख करता है। इस स्थिति मे वह स्त्री उत्तराधिकार के रूप में मिली सम्पत्ति का अपने ठंग से उपयोग नहीं कर पाती है। इस प्रकार खासी जनजाति मे मामा की अप्रत्यक्ष सत्ता संघर्ष को जन्म देती है।
- खासी पुरुषों को दोहरी भूमिका निभानी पड़ती है। उस पर बहन की सम्पत्ति की देखरेख के अलावा अपनी पत्नी तथा बच्चों के लालन-पालन का भी उत्तरदायित्व होता है।
- दोनों पक्षों की स्त्रियाँ भी बुरी तरह प्रभावित होती हैं।
- खासी समाज में स्त्रियों को प्रतीकरत्मक सत्ता प्राप्त है वास्तव में सत्ता का उपयोग तो पुरुष ही करते हैं। स्त्रियाँ बहुत से अधिकारों से वंचित रहती हैं।

### अथवा

- नए राज्यों की माँग।
- अंत क्रियात्मक प्रक्रिया का परिणाम आदिवासियों का छिन भिन्न हो जाना।
- गैर जनजातीय लोगों का भारी संख्या में अप्रवास
- गैर आदिवासियों का विरोध।
- सांस्कृतिक और आर्थिक मुद्दे।
- वनों का राष्ट्रीकरण।
- पुर्ववास न किया जाना।
- भूमि का अधिग्राहण।
- राष्ट्रीय विकास के नाम पर बाँध, कारखाने व खानों की खुदाई।
- आंदोलनों द्वारा राज्यों की माँग जैसे- छत्तीसगढ़ व झारखण्ड।

**प्रश्न-25.** नीचे दिए गए गंद्याश को पढ़िए और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:-

वर्ष 1999-2000 के राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण अध्ययन के आकड़ों और भारतीय जनगणना 2001 के आँकड़ों से पता चलता है कि ग्रामीण और नगरीय दोनों प्राकार के इलाकों में रोजगार पैदा करने (काम के नए अवसर उत्पन्न करने) की दर में एक साथ भारी गिरावट आई है। यह स्थिति युवाओं के मामलों में भी सही बैठती है। 15-30 वर्ष के

आयु वर्ग में रोजगार वृद्धि की दर 1987 से 1994 के बीच की अवधि में ग्रामीण और नगरीय दोनों इलाकों के पुरुषों के लिए लगभग 2.4 प्रतिशत प्रतिवर्ष था। यह 1994 से 2004 के दौरान ग्रामीण पुरुषों के लिए घटकर 0.7 प्रतिशत और नगरीय पुरुषों के लिए घटकर 0.3 प्रतिशत के स्तर पर आ गई। इसका तात्पर्य यह हुआ कि एक युवा श्रमिक बल द्वारा प्रस्तुत श्रम लाभ भी संभावना को वास्तविकता में परिवर्तित नहीं कर सकता है। आस भारत के समुख अवसरों का जो जनसांख्यिकीय द्वारा खुला है उसका लाभ उठाने के लिए रणनीतियाँ तो मौजूद हैं। लेकिन भारत का हाल का अनुभव यह बताता है कि बाजार की शक्तियाँ स्वयं यह सुनिश्चित नहीं कर पाती कि ऐसी रणनीतियों को कार्यान्वित किया जाएगा। जब तक आगे का कोई रास्ता नजर नहीं आता संभव है कि हम उन संभावित लाभों को गँवा देंगे जो देश की बदलती हुई आयु संरचना फिलहाल हमें देने वाली है।

**प्रश्न-(अ) जनांकिकीय लाभांश का अर्थ क्या है?**

2

(ब) क्या आपके विचार में जनसांख्यिकीय लाभांश वास्तव में भारत में एक सुनहरे अवसर का द्वारा खोल रहा है?

**उत्तर-**

- (अ) जब कार्यशील लोगों का अनुपात काम न करने वालों की तुलना में अधिक बड़ा होता है। इसे जनसांख्यिकीय लाभांश कहा जाता है। (15 वर्ष-59 वर्ष)
- (ब) सही उत्तर

---

## परियोजना कार्य के लिये सुझाव

---

### समाजशास्त्र

#### कक्षा-12वीं

पाठ्यक्रम में संशोधन के फलस्वरूप राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूप रेखा 2005 के अनुसार समाजशास्त्र में परियोजना 2008-09 में शुक्र किया गया। यह किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाव वंश हमारी व्यवस्था आज तक विद्यालय और घर के बीच अंतराल बनाये हुए हैं। इस प्रयास में जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। कक्षा 11वीं तथा 12वीं की पाठ्यपुस्तकों में विभिन्न परियोजना संभावित समस्याओं को ध्यान में रखने का प्रयास किया गया है जो विभिन्न संदर्भों परिस्थितियों या विभिन्न प्रकार के विद्यालयों में ऐसे शोध कार्यों के दौरान उपस्थित हो सकते हैं। पाठ्यपुस्तक में सिर्फ सुझाव मात्र है। छात्र अपने अध्यापकों के साथ विचार विमर्श कर अन्य शोध परियोजनाएँ तैयार कर उन पर कार्य करने के लिये स्वतंत्र हैं।

बाह्य परीक्षक द्वारा मूल्यांकन किया जायेगा, जो व्यावहारिक परियोजना कार्य के लिये निर्धारित 20 अंक का विभाजन है।

---

## परियोजना कार्य

---

अनुसंधान के बारे में पढ़ने और उसे वास्तव में करने में बहुत अंतर होता है। किसी प्रश्न का उत्तर देने के लिए व्यावहारिक प्रयास करना और सुव्यवस्थित रूप से साक्ष्य इकट्ठा करना एक अंत्यत उपयोगी अनुभव है।

एक वास्तविक अनुसंधान परियोजना निश्चित रूप से अधिक विस्तृत होगी और उसे संपन्न करने के लिए छात्रों को विद्यालय में उपलब्ध समय से कहीं अधिक समय देने एवं प्रयत्न करने की आवश्यकता होगी। प्रत्येक अनुसंधान प्रश्न यानि शोध विषय पर कार्य करने के लिए उपयुक्त अनुसंधान पद्धति की आवश्यकता होती है। एक प्रश्न का उत्तर अक्सर एक से अधिक पद्धतियों से दिया जा सकता है लेकिन यह आवश्यक नहीं है कि एक अनुसंधान पद्धति सभी प्रश्नों के लिए उपयुक्त हो। यह चयन व्यावहारिकता को ध्यान में रखते हुए किया जाना चाहिए। इसमें अनेक बातें शामिल हो सकती हैं जैसे- अनुसंधान के लिए उपलब्ध समय की मात्रा, लोगों एवं सामग्री दोनों के रूप में उपलब्ध संसाधन, परिस्थितियाँ इत्यादि।

एक निर्धारित प्रश्न चुन लेने के बाद अगला कदम होता है उपयुक्त पद्धति का चयन करना। पद्धति के आधार पर एक प्रश्नावली तैयार करनी होगी। तत्पश्चात् प्रश्नावलियों को इकट्ठा करके उने परिणामों का विश्लेषण करेंगे।

### मुख्य विभिन्न शोध पद्धतियाँ

1. **सर्वेक्षण प्रणाली-** इस प्रणाली के अंतर्गत सामान्यतः निर्धारित प्रश्नों को बड़ी संख्या में लोगों से पूछा जाता है। इस प्रणाली से लोगों के विचारों को जाना जा सकता है।
2. **साक्षात्कार-** साक्षात्कार हमेशा व्यक्तिगत रूप से किया जाता है और इसमें काफी कम लोगों को शामिल किया जाता है। साक्षात्कार में लचीलापन होता है। इसमें विभिन्न विषयों पर विस्तार से चर्चा की जा सकती है।
3. **प्रेक्षण-** प्रेक्षण पद्धति के अंतर्गत शोधकर्ता को अपने शोध करने के लिए निर्धारित परिस्थिति या संदर्भ में क्या-क्या हो रहा है इस पर बारीकी से नजर रखनी होती है और उसका अभिलेख तैयार करना होता है।

---

## विस्तृत विवरण एवं उदाहरण

### अनुसंधान अभिकल्प/ प्रारूप

---

बाह्य परीक्षक द्वारा मूल्याकांक्षित किया जाने वाला अनुसंधान प्रारूप Practical/ प्रयोगात्मक परीक्षा वाले दिन विद्यार्थियों द्वारा किया जाएगा। प्रत्येक विद्यार्थी को एक Topic (विषय) दिया जाएगा। विद्यार्थी को Topic (विषय) से सम्बंधित 2-3 पेज की रूपरेखा तैयार करनी होगी।

अनुसंधान प्रारूप के चरण

1. अनुसंधान प्रश्न तैयार करना (सम्बंधित अनुसंधान Topic)
2. किसी एक अनुसंधान पद्धति का चुनाव करना।
3. अनुसंधान की जगह का चुनाव, सैम्प्ल तथा प्रश्नावली तैयार करना।
4. सभी सम्बंधित चरणों को क्रमबद्ध सूची में लगाना।
5. निष्कर्ष निकालना

### उदाहरण

#### (क) शहरों और कस्बों में रिक्षा चालक

1. रिक्षा चालकों के सामने आने वाली व्यवसायिक परेशानियाँ कौन-कौन सी हैं?
2. रिक्षा चालक अपने पड़ोस का चुनाव किस प्रकार करते हैं।
3. रिक्षा चालक कितने पढ़े-लिखे होते हैं।

#### (ख) अनुसंधान पद्धति

प्रश्नावली पर आधारित सर्वेक्षण पद्धति का इस्तेमाल किया जा सकता है। विभिन्न प्रश्नों को सामने रखकर उनके उत्तर हम जान सकते हैं। ऊपर दिये गए विषय पर मौखिक प्रश्न पूछे जाने चाहिए क्योंकि अधिकतर रिक्षा चालक पढ़े-लिखे नहीं होंगे। इस प्रकार प्रत्येक पद्धति को अनुसंधान कर्ता ने सावधानी से इस्तेमाल करना है नहीं तो उत्तर/ निष्कर्ष गलत होंगे।

### ( ग ) अनुसंधान करने वाला क्षेत्र

रिक्षा चालक हमें विस्तृत जगहों पर मिलेंगे। इसलिए हमे आस-पास इनके पड़ोस में जाकर जानकारी हासिल करनी पड़ेगी। कुछ रिक्षा चालक स्वेच्छा से जवाब दे देंगे। प्रश्नावली के आधार पर सारी जानकारी को क्रमबद्ध तरीके से सूचीबद्ध करेंगे।

### ( घ ) सम्भावित हल/ निष्कर्ष

इस प्रकार अंत में हमें सही जानकारी मिल पाएगी कि कितने रिक्षा चालक पढ़े लिखे हैं? रिक्षा चालकों की सामाजिक दशा पता चल पाएगी।

### सम्भावित शोध Topic / विषय

1. मास मीडिया और उनकी सामाजिक जीवन में बदलती भूमिका।
2. सार्वजनिक परिवहन: लोगों के जीवन में इसकी क्या भूमिका है?
3. सामाजिक जीवन में संचार माध्यमों की क्या भूमिका है।
4. विभिन्न आयु में (जैसे कक्षा 5, 8, 11) विद्यालयी बच्चों की बदलती हुई आकांक्षाएँ।